श्रीयुत् बद्रीधरजी सराफ कलकत्ता।

दो शब्द

कोई दो वर्ष पूर्व राजस्थानी के दो प्रमुख विद्वानों—स्वामी निरोत्तमदासजी अेम० ए० विद्यामहोदधि एव प० मुरलीधरजी व्यास विशारद के कलकत्ता पधारने पर कतिपय आयोजनों में आप लोगों के भापण अेवं साहित्य-चर्चा होने-पर अत्रस्थ जनता में सांस्कृतिक व साहित्यिक चेतना लहरी जागृत हुई। फलत श्री रामदेवजी चोखाणी, श्री चौथमलजी सराफ, श्री भूरामलजी अग्रवाल, श्री वेणीशकरजी शर्मा इत्यादि मित्रों ने मिल कर निश्चय किया कि कलकत्ते के एकांगी व्यापारिक जीवन में अपनी मातृभूमि के प्रति कुछ कर्त्तव्य अदा करने के हेतु किसी सस्था का सघटन किया जाय, जो राजस्थान की साहित्य सपत्ति तथा सांस्कृतिक महत्त्व को जनता के सम्मुख प्रकाश में ला सके। अन्त में सम उद्देश्यधारिणी क्षीणप्राय राजस्थान रिसर्च सोसाइटी को ही राजस्थानी साहित्य परिषद के नाम से पुनर्गठित कर श्रीयुत् कालीप्रसादजी खेतान के नेतृत्त्व में इस सस्था का कार्य प्रारभ किया गया।

हमारी विद्वद् मण्डली ने परिषद को राजस्थानी भाषा के वीसों महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशनार्थ संपादित करके सौंपे। जिनमें से राजस्थानी निबन्धमाला के दो खण्ड एवं राजस्थानी कहावतों का दूसरा भाग भी प्रकाशित हो गया। इस सस्था के प्रारम्भ से ही श्रीयुत् अगरचदजी नाहटा का प्रमुख हाथ रहा है और अव तक जो कुछ कार्य हो सका उन्हीं की प्रेरणा का फल है। परिपद के पास अपना कोई कोष नहीं, अत जब कभी द्रव्य की आवश्यकता हुई श्री शकरदान शुभैराज नाहटा की गद्दी से उधार लेकर काम चलाया गया श्रीयुत् कुन्दनमल जी सोठिया की कृपा से दिनाजपुर के राजस्थानी साहित्य सम्मेलन के समय एकत्र फण्ड के रु० १०२१।≈)॥ साहित्य प्रकाशनार्थ प्राप्त हुए हैं जिसके लिए परिपद आपकी आभारी है।

प्रस्तुत ग्रन्थ राजस्थानी कहावतां प्रथम भाग को प्रकाशित करना अत्यन्त आवश्यक था पर आगे के प्रकाशनो की समुचित बिक्री न होने के कारण आर्थिक

समस्या को प्रधान अड़चन को स्व॰ परिषद् के कार्याध्यक्ष श्री चौथमलजी सराफ ने उधार रूप में प्राप्त करने का भार अपने ऊपर ले लिया और इस ग्रंथ को प्रेस में दे डाला। हम श्रीयुत् बंसीधरजी सराफ महोदय का हार्दिक आभार मानते हैं जिन्होंने इस ग्रंथ के प्रकाशन का सारा व्यय उधार रूप में देकर परिषद् के कार्य को आगे बढ़ाया है।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के भाषातत्त्वाध्यापक, भाषाचार्य साहित्यवाचस्पति श्रीयुत् सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या एम॰ ए॰ डी॰ लिट्॰ महाशय की उदारता का आभार किन शब्दों में स्वीकार किया जाय जिन्होंने नाना कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी इसकी भूमिका अविलम्ब लिख देने की कृपा की। आदरणीय स्वामीजी और व्यासजी महाराज तो राजस्थानी भाषा की सेवा का चिरकाल से व्रत लिये बैठे हैं। वे जिस लगन और उत्साह से अपना समय और शक्ति इस कार्य में लगा रहे हैं उसकी सार्थकता हमारे समाज के उदारचेता व मातृभाषा प्रिय सज्जनों पर ही निर्भर है।

हमारी समृद्ध राजस्थानी भाषा को जिसका प्राचीन साहित्य किसी भी भाषा से टक्कर लेकर पिछड़ नहीं प्रत्युत उच्चस्थान ही प्राप्त कर सकता है, हमारी ही उपेक्षा के कारण अपना उचित सम्मान प्राप्त करने में विलम्ब हो रहा है। अब तो हमारा प्रान्त भी निर्माण हो चुका है, यदि अब भी नहीं चेत सके तो समय की प्रगति से राजस्थानियों पीछे पड़ जायगे। राजस्थान और कलकत्ता के अधिवासी भाइयों से विशेष प्रार्थना है कि वे अपनी मातृभाषा के गौरव को उन्नत करने के लिए दृढ़चित्त होकर परिषद् के सदस्य बन कर आर्थिक सहायता कर तथा पुस्तकों को खरीद कर परिषद् की प्रगति में हाथ बंटावें। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि अब पौने दो करोड़ अधिवासियों की मातृभाषा राजस्थानी शीघ्र ही अपने गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित होगी।

—भँवरलाल नाहटा

अवतरणिका

कहावतें बहुत प्राचीन काल से ससार के सभी देशों और सभी प्रकार के लोगों में अत्यन्त लोकप्रिय रही हैं। उनमें मानव-जाति के समस्त जीवन का दीर्घकालीन अनुभव सचित रहता है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी होता हुआ हम तक पहुँचता है। वे ससार के व्यावहारिक जीवन की कुञ्जियों का काम देती आयी हैं। उन्हें मानव-जाति के अलिखित कानून-सग्रह का नाम भी दिया जा सकता है। विभिन्न जातियों के जीवन का चित्र हमें उनकी कहावतों में देखने को मिलता है। जाति के रीत-रिवाज, आचार-विचार, सुख-दुख आदि पर कहावतों से अच्छा प्रकाश पड़ता है। देश-भेद होने पर भी मानव-प्रकृति आखिरकार सर्वत्र बहुत कुछ एक-सी ही होती है। मानव-प्रकृति की इस एकता का स्पष्ट दर्शन हमें कहावत-साहित्य में मिलता है। अनेकों कहावतें ऐसी हैं जो ससारकी प्राय· समस्त जातियों में उसी रूप में व्यवहृत होती हुई पायी जाती हैं। कहावतों की सख्या तो बहुत अधिक है जो शब्दार्थ में भिन्न पर भावार्थ अभिन्न हैं।

कहावतों का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। मानव-जीवन से सम्बन्ध रखनेवाला कौन-सा ऐसा विभाग है जो उनके दायरे के भीतर न आया हो ? वे जीवन के सभी प्रकार के विविध रगों को लिये हुए मिलती हैं। उनमें कहीं गम्भीर अनुभव-जन्य चातुर्य भरा है तो कहीं प्रतिदिन के गृहस्थ-जीवन का पथ-प्रदर्शक व्यावहारिक ज्ञान छलछला रहा है। कहीं सुकुमार भावों की सुमधुर योजना दृष्टिगत होती है तो कहीं कोमल कल्पनाओं का निराला माधुर्य अपना छटा दिखा रहा है। कहीं लक्ष्य न चूकनेवाले चुटीले व्यङ्ग के वाण सीधे हृदय में पैठ जाते हैं तो कहीं विनोदमय मधुर हास्य के छीटे रोम-रोम खिला देते हैं।

कहावतें लोक साहित्य Folk Literature का अेक महत्वपूर्ण अग हैं। लोक-साहित्य के अन्यान्य अङ्गों की भाँति कहावतें भी बहुत प्राचीन हैं। लिखित साहित्य का जन्म होने के बहुत पूर्व उनकी उत्पत्ति हो चुकी थी। सभ्यता और लौकिक साहित्य में कोई विशेष प्रेम नहीं। वह जिस साहित्य को पनपने नहीं

शैली और द्रुत गति के साथ उसका नाश करती है। कहावतों की उत्पत्ति भी सभ्यता आदि-काल में ही होती है और प्रायः प्राचीन अथवा अनपढ़ लोगों में ही कहावतों का प्रयोग विशेष करके देखा जाता है। कहावतों का सम्बन्ध स्वाभाविक जीवन से है और जब कृत्रिम सभ्यता के प्रभाव से जीवन अस्वाभाविक बन जाता है तो कहावतें और दैनिक जीवन का सम्बन्ध विच्छेद होने लगता है और उस समय यदि कोई उत्साही पुरुष उनको संग्रहित अथवा लिपिबद्ध न कर दे तो उनके सदा के लिए नष्ट हो जाने में कोई सन्देह नहीं।

कहावतें जाति के भिन्न-भिन्न जीवन की सूचक होती हैं। जो जातियाँ विशेष आनन्दी, विशेष उत्साह-भरी एवं विशेष प्रगतिशील होती हैं उनमें कहावतें विशेष रूप से जन्म लेती हैं और प्रयोग में आती हैं।

भाषा की सुन्दरता और सरसता का प्रधान कारण कहावतें हैं। उनके प्रयोग से लेखों और भाषणों का माधुर्य कितना बढ़ जाता है, वे कितने सजीव और प्रभावोत्पादक बन जाते हैं यह सब पर प्रकट है। एक अरबी कहावत के शब्दों में कहावतों के बिना भाषा वैसी ही है जैसे नमक के बिना भोजन। वह भाषा सचमुच सौभाग्य-शालिनी है जिसका कहावतों का भण्डार बड़ा है। 'कहावत' की परिभाषा विद्वानों ने अनेक प्रकार से की है। कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषायें नीचे दी जाती हैं।

(१) अरिस्टाटल (अरस्तू)—तत्त्वज्ञान के खंडहरों में सुगमता से निकाले हुए टुकड़े – बचा लिये गये अंश।

(२) डेमिक्रेटस—जीवन में व्यवहृत प्राचीन काल के छोटे-छोटे कथन।

(३) पर्सीवीस—दीर्घकालीन अनुभवों से चुने हुए छोटे-छोटे कथन।

(४) जानसन—जनता में निरन्तर व्यवहृत होनेवाले छोटे-छोटे कथन।

(५) ईंग—वे कथन जिनका निर्माता कोई नहीं।

(६) हावेल—जनता की वाणी

(७) मारक्वेशाविक सीस्टे—व्यवहारिक जीवन के मार्गदर्शक वचन।

(८) रिवारोल—जनता के अनुभव का फल, एक वाक्य में बन्द किया हुआ अनेक युगों का चातुर्य।

(९) जोरकार्ड—पूर्णमा जनता की अपनी भाषा में किसी सर्वमान्य सत्य को थोड़े शब्दों में प्रकट करनेवाला लोक प्रचलित कथन।

(१०) जान रसल—अनेकों का चातुर्य और एक का बुद्धि-चमत्कार—एक की सूझ जिसमें अनेकों का चातुर्य सन्निहित है। The wisdom of many and the wit of one

(११) ब्रिटिश विश्वकोष—लोक साहित्य का एक प्रकार (या उसके अनुकरण पर निर्मित उत्तरकालीन कृति] जो साधारण घरेलू वाक्य के रूप में जीवन की तीक्ष्ण आलोचना प्रकट करे।

(१२) आक्सफर्ड अंग्रेजी कोष—जनता में प्रचलित कोई छोटा-सा सारगर्भित वचन, अनुभव अथवा निरीक्षण द्वारा निश्चित या सबको ज्ञात किसी सत्य को प्रकट करनेवाली कोई संक्षिप्त उक्ति।

विशेष—लार्ड रसल की परिभाषा बहुत प्रसिद्ध है। वह स्वयं कहावत बन गई है। कहावत के द्वारा कहावत की परिभाषा परिभाषा-क्षेत्र का एक अद्वितीय प्रयास है।

कहावत-साहित्य का अध्ययन करने से कहावत में निम्नलिखित विशेषताएं दीख पड़ती हैं—

(१) संक्षिप्तता अर्थात् छोटापन—कहावत एक प्रकार का सूत्र है और उसमें थोड़े-से-थोड़े किन्तु सारगर्भित शब्दों का प्रयोग होता है।

(२) अनुभव एवं निरीक्षण से निश्चित किसी सिद्धान्त का समावेश।

(३) घरेलू भाषा।

(४) चुभती हुई और प्रभावोत्पादक कथन-शैली।

(५) लोकप्रियता और लोक-प्रचलन।

अधिकांश कहावतों से आदर्शवाद की अपेक्षा यथार्थवाद ही अधिक पाया जाता है। उनमें संसार के व्यावहारिक जीवन में सफलता प्राप्त करानेवाले सिद्धान्त-सूत्रों की ही प्रधानता मिलती है। अतएव उनमें प्रायः स्वार्थपूर्ण हृदयहीन प्रवृत्तियों का आभास मिलता है। उनकी इसी प्रवृत्ति को ध्यान में रख कर एक आधुनिक विद्वान ने कहावतों की परिभाषा करते हुए उन्हें भौतिकवाद का सूत्र-संग्रह बताया है। पर सर हर्बर्ट रिजले का कथन है कि इस सम्बन्ध में भौतिकवाद का उल्लेख समुचित नहीं—हाँ, उनको किसी हदतक निराशावाद का सूत्र-संग्रह कहा जा सकता है।

कहावतों में व्यक्त सत्य अनेक बार ओक पक्षीय सत्य होता है। इसी कारण विरोधी भावों को व्यक्त करनेवाली कहावतें प्रायः देखने में आती हैं। उदाहरणार्थ किसी में पौरुष को बड़ा बतलाया गया है तो किसी में भाग्य की महिमा गायी गयी है।

कहावतों के दो मोटे विभाग किये जा सकते हैं :—

(क) कुछ कहावतें ऐसी हैं जो किसी सार्वकालिक और सार्वदेशिक सत्य को प्रकट करती हैं। ये सभी देशों और और सभी कालों में समान रूप से लागू होती हैं। ऐसी कहावतें मानव जाति के सार्वजनीन अनुभव का फल होती हैं और समस्त मानव-जाति की चतुराई उनमें संकलित होती है। राजनीतिक उथल पुथल या सामाजिक क्रान्तियों का उनपर कोई प्रभाव नहीं होता। इसके बाद भी वे, उसी रूप में, जीवित रहती हैं। देश-भेद से उन में भाषा-भेद और कभी-कभी रूप-भेद भी भले ही पाया जाय पर उनके भाव में कोई फर्क नहीं पड़ता। कुछ उदाहरण लीजिये—

(१) ब्याह कर्यो घर मांड जोय।
घर कर्यो मने लोक जोय॥

यह राजस्थान की एक प्रसिद्ध कहावत है। इसी भाव की नीचे लिखी कहावत अंग्रेजी में मिलती है जो लगभग इन्हीं शब्दों में है—

Building and marrying are great wasters.

(२) हिन्दी में एक कहावत है—

एक मछली सारा तालाब गंदा करती है।

राजस्थानी में नीचे लिखी कहावत द्वारा यह भाव प्रकट किया गया है—

ओक काचर सौ मण दूध बिगाड़े।

गुजराती में इसी भाव की ये कहावतें हैं—

ओक नारंगा छोकरानी संगतीओ आवे ते आखुं घेर बगाड़े।

ओक कोहेली माछलीथी टोपलो गंधाय।

अंग्रेजी में यही भाव इन कहावतों में मिलेगा—

One ill weed mars a whole pot of pottage
One barking dog set all the street abarking

इस पिछले उदाहरण में भाषा और शब्दार्थ भिन्न हैं पर भाव वही है। *

(ख) दूसरे प्रकार की कहावतें किसी विशिष्ट समय या स्थान या समाज से सम्बन्ध रखने वाली होती हैं। वे सार्वकालिक और सार्वदेशिक न होकर एकदेशीय और एककालिक होती है। उनमें जिस अनुभव का समावेश रहता है वह किसी स्थानविशेष, या समाज-विशेष या काल-विशेष तक ही सीमित रहता है। भारतवर्ष की जाति-सम्बन्धी कहावतें इसी कोटि की हैं। ऐसी ही कहावतों से देश या समाज की निजी विशेषताओंपर प्रकाश पड़ता है। दो-चार उदाहरण लीजिये—

(१) तीन तेरह घर बिखेरै

तीन या तेरह घर नाश कर देते हैं।

राजस्थान में (तथा भारत के कुछ अन्यान्य प्रदेशों में भी) तीन या तेरह की सख्या अशुभ समझी जाती है, इसलिए तीन आदमी एक साथ कार्य का आरम्भ

---

* कुछ और उदाहरण—

(१) राजस्थानी—सोरै ऊँट पर दो चढै

अंग्रेजी—All lay load on the willing horse

(२) राजस्थानी—तैरूरी रॉड

अंग्रेजी—Good swimmers are oftenest drowned

(३) संस्कृत—अतिपरिचयाद् अवज्ञा भवति

हिन्दी—घर के जोगी जोगना आन गाँव के सिद्ध

अंग्रेजी—Familiarity breeds contempt

(४) राजस्थानी—चतरनै इसारो घणो

फारसी—अकलमंदारा इशारा काफी अस्त

अंग्रेजी—To the wise a word may suffice

(५) राजस्थानी—गैला ! गाँव मती बाल्ये, कै चोखी चितारी

अंग्रेजी—Forbid a fool a thing and that he will do

(६) राजस्थानी—सीररी मानै स्यालिया खाय

सात मामौंरो भाणजो भूखो मरै

हिन्दी—साझे की हाण्डी चौराहे में फूटै

अंग्रेजी—Everybody's business is nobody's business.

नहीं करते । कहीं जाना होता है तो तीन आदमी एक साथ नहीं जाते—तीन का जाना जरूरी हो तो दो पहले घर से निकलते हैं और तीसरा पीछे अकेला ।

(२) बैठी आयी रे बराबर । ज्यांरो हेठै आयो हाथ

जिसके बेठी हुई उसका हाथ नीचे आ गया ।

भारतवर्ष में बेटेवालों के सामने बेटीवाले को दब कर चलना ही पड़ता है ।

(३) दूध बेचो भावैं पूत बेचो ।

यह कहावत जाटों में प्रचलित है और उन पर विशेषतया लागू होती है ।

(४) तीजै नावक सोजै चौथै लोक पतीजै

राजस्थान में यह विश्वास प्रचलित है कि बार बार परीक्षा करने पर ही विश्वास करना चाहिए । म हा सा ।

*   *   *   *

राजस्थानी भाषा में कहावतें प्रचुर परिमाण में उपलब्ध होती हैं । इनमें से कुछ प्रस्तुत संग्रह के रूप में पाठकों के सामने उपस्थित की जाती हैं ।

इस संग्रह की अपनी कथा है । स्वामीजी ने आज से तीस वर्ष पूर्व, जब राजस्थानी साहित्य के अनुसंधान का कार्य आरम्भ किया था राजस्थानी कहावतों के संग्रह का कार्य भी हाथ में लिया था । कार्य धीरे-धीरे चलता रहा और सं १९८५ तक लगभग पाँचसौ कहावतों का संग्रह हो गया । उसी समय के आसपास मेरा उनसे परिचय हुआ और उनने मुझसे कहावतों के संग्रह का अनुरोध किया । मैंने उनकी आज्ञा शिरोधार्य की और इस कार्य में जुट गया । कागज और पैंसिल जेब में बराबर रहते । जहाँ किसी के मुँह से कोई कहावत सुनने में आती तुरत लिख लेता । वर्ष बीतते-न-बीतते दो हजार से ऊपर कहावतों और मुहावरों का संग्रह प्रस्तुत हो गया । यह सारा संग्रह मैंने स्वामीजी को सौंप दिया । उनने उसको वर्णानुक्रम से लगाकर हिन्दी अनुवाद और भावार्थ के साथ सम्पादन कर डाला ।

इस बात को आज लगभग बीस वर्ष हो गये । बीच में एकाध बार संग्रह के प्रकाशन का विचार किया गया पर आर्थिक कठिनाई के कारण यह विचार कार्य-रूप में परिणित नहीं हो सका । सम्वत् २ ४ में, जब कलकत्ता में राजस्थानी

साहित्य परिषद् की स्थापना हुई ग्रन्थ, प्रेस में दिया गया पर केवल दूसरा भाग ही छप कर रह गया। अब श्री अगरचदजी नाहटा के प्रयत्न से प्रथम भाग छपकर पाठकों के सामने आ रहा है।

इस सग्रह में राजस्थानी कहावतों को ही स्थान दिया गया है, राजस्थानी मुहावरों को नहीं (यद्यपि असावधानी के कारण दस-पांच मुहावरे भी आ गये हैं)। राजस्थानी भाषा के मुहावरों की सख्या बहुत विशाल है। तत्परता के साथ कार्य करने से एक लाख मुहावरों का सग्रह कर सकना कठिन नहीं होगा। जिस भाषा मे मुहावरों की सख्या एक लाख हो उसकी व्यजनाशक्ति कितनी विपुल होगी। कहावतों के साथ साथ मैंने मुहावरों का सग्रह भी किया था जिनकी सख्या दस हजार के लगभग होगी।

इस सग्रह का सपादन हो जाने के बाद भी कहावतों के सग्रह का कार्य चलता रहा है। सग्रह-कर्त्ताओं में श्रीयुत स्वामीजी के अतिरिक्त श्री अगरचदजी नाहटा और श्री भँवरलालजी नाहटा के नाम उल्लेखनीय हैं। यह सारा सग्रह अभी सपादित नहीं हो पाया है। सपादित होने पर यथासमय पाठकोंकी सेवा में उपस्थित किया जायगा।

पिलाणी के श्री गणपति स्वामी ने स्वर्गीय पारीकजी के पथ-प्रदर्शन में बिड़ला-कालेज के लिये राजस्थानी कहावतों का एक बड़ा सग्रह तैयार किया था। पिलाणी कालेज के हिन्दी प्राध्यापक श्री कन्हैयालाल सहल ने भी एक सग्रह तैयार किया है जो बङ्गाल के हिन्दी-मडल में छप रहा है। वे राजस्थानी कहावतों पर एक अनु-सधानात्मक निबध भी तैयार कर रहे हैं। मेवाड़ की कहावतों का सग्रह उदयपुर के राजस्थान हिन्दी विश्वविद्यापीठ से पिछले वर्ष प्रकाशित हुआ था। राजस्थान के उत्साही विद्वान् और लेखक श्री जगदीशसिंह गहलोत ने भी बहुत वर्ष हुए राज-स्थानी कहावतों के दो छोटे-छोटे सग्रह छपवाये थे जो अब दुष्प्राप्य हो चुके हैं। फैलन के Proverbs of Hindustani नामक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ में भी राजस्थानी की बहुत-सी कहावतें सगृहीत हुई हैं।

प्रस्तुत सग्रह का सपादन आज से बीस वर्ष पहले किया गया था। उसको, विशेषत' प्रथम भाग को, दुबारा देखने का अवकाश स्वामीजी नहीं निकाल सके।

प्रूफ भी कलकत्ता से यहाँ नहीं आ सके। फलस्वरूप स्थान-स्थान पर बहुत-सी अशुद्धियाँ रह गयी हैं। जोड़नी (Spelling)-सम्बन्धी अशुद्धियाँ विशेष खटकने वाली हैं। अर्धस्वर व के स्थान पर वर्गीय ब और वर्गीय ब के स्थान पर अर्धस्वर व या स्पर्श ख मूर्धन्य ष के स्थान पर दन्त्य स प्रायः हो गया है। कई स्था-नों के अर्थ और यथार्थ छूट गये हैं। पाठकों को इससे असुविधा होगी, भाषा-विज्ञान के विद्यार्थी को विशेष-रूप से पर अब तो उनकी उदारता और क्षमाशीलता का ही भरोसा है।

संग्रह-कार्य में ठाकुर कानसिंह जी (रोडा), ठाकुर प्रेमसिंह जी (तेमदेसर), ठाकुर किशनसिंह जी साथी ठाकुर दीपसिंह जी (भूरस), आदि महानुभावों से समय-समय पर सहायता प्राप्त हुई। राजस्थानी साहित्य के महारथी ठाकुर रामसिंह जी से संग्रह-कार्य में ही नहीं संपादन और अर्थ-लेखन में भी सहायता प्राप्त हुई। श्री अगरचंद जी नाहटा का सहयोग और प्रोत्साहन तो बराबर बना रहा। उन्हीं के प्रयास के फलस्वरूप यह संग्रह प्रकाश में आ रहा है। श्री भवरलाल जी नाहटा ने व्यापारिक जीवन की घोर व्यस्तता में प्रूफ देखने का समय निकाल कर अनुगृहीत किया।

जन्माष्टमी २ १ ६ — मुरलीधर व्यास

भूमिका

स्वेच्छया बृहत्तर-सांस्कृतिक-क्षेत्र वाली हिन्दी की छाया के नीचे आई हुई राजस्थानी आधुनिक भारत की स्वतन्त्र और मुख्य भाषाओं में है। राजस्थानी का एक प्रौढ़ तथा पुष्ट पुराना साहित्य विद्यमान है। इस साहित्य के प्रकाशन से अपनी भाषा के महत्त्व के सम्बन्ध में न केवल राजस्थान-वासियों का अभिमान मार्जनीय रूप से बढ़ रहा है, वरन् इससे भारत की साहित्यिक-प्रतिष्ठा एवं मर्यादा और भी व्यापक हो रही है। काव्यादि प्राचीन साहित्य ग्रन्थों के शोध और मुद्रण के साथ ही साथ राजस्थानी भाषा की चर्चा, ऐतिहासिक आलोचना आदि तथा नवीन साहित्य-सर्जन का भी आरम्भ हो गया है, और इसके लोक-साहित्य और Folklore अर्थात् लोकयान की सामग्री का संग्रह करने में भी कुछ अनुभवी विद्वान् दत्तचित्त हुए हैं। पितृपरंपरागत जीवन-यात्रा की पद्धति जिन सामाजिक अनुष्ठानों, विश्वास विचारों तथा वाङ्मय (कविता, काव्य, पहेली, कहावत आदि) से अपने लौकिक प्रकाश को प्राप्त करती है, उन्हें अंग्रेजी में Folklore कहते हैं। इस शब्द का भारतीय प्रतिशब्द हमने 'लोकयान' यों बना लिया है,—किसी जनसमाज के लोकयान का प्रधान वाङ्मय प्रकाश उसमें प्रचलित लोकोक्ति या प्रवाद अथवा कहावतों के माध्यम से ही होता है। भाषा के प्रचलित प्रवादों से उस भाषा के बोलने वालों की अर्थनैतिक तथा सामाजिक अवस्था, उनकी रहन-सहन, रीत-रस्म, मानसिक संस्कृति तथा आध्यात्मिक बोध और विचार, और उसका प्राचीन इतिहास तथा आधुनिक राजनीतिक पारिपार्श्विक, इन सब बातों का अच्छा परिचय मिलता है। प्रवाद, लोकोक्ति या कहावतों का संग्रह किसी जाति या जनसमाज की भाषा, साहित्य तथा संस्कृति के अध्ययन के लिये एक मूल्यवान् साधन होता है।

हर्ष की बात है कि इस समय राजस्थानी भाषा के अनुशीलन की जो पुनर्जागृति या नवजन्म दिखाई देता है, उसमें प्राचीन राजस्थानी डिंगल तथा अन्यविध साहित्य के विषय में खोज के साथ ही साथ, राजस्थानी में उपलब्ध

Flo ting mas of popular literature प्रवाह या लोगों के मुँहों में उपलभ्य लोकसाहित्य के संग्रह करने के लिये यथोचित भावपूर्ण आरम्भ को अपना स्थान मिला है। इस आरम्भ का एक मुख्य फल तो है प्रस्तुत पुस्तक, "राजस्थानी कहावतां" जिसे राजस्थानी के दो प्रमुख विद्वान्, अध्यापक श्री नरोत्तम-दासजी स्वामी एम ए विद्यामहोदधि तथा पंडित श्री मुरलीधरजी व्यास विशारद ने प्रकाशित किया है। यह लगभग डेढ़ हजार कहावतों का एक सुन्दर संग्रह है। भारतीय भाषाओं के प्रवाद और कहावतों के कई उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण संग्रह पुस्तकें सम्पूर्ण प्रकाशित हो गई हैं। इनमें अध्यापक डाक्टर श्री सुशीलकुमार दे की बंगला प्रवादों की संग्रह-पुस्तक जो सन् १९४५ में कलकत्ते से प्रकाशित हुई है, सब से नवीन है, और अपनी सुविन्यस्त और सुलिखित भूमिका तथा अन्यविध टिप्पणियों के कारण और संगृहीत प्रवादों की संख्या के कारण (इसमें लगभग सात हजार प्रवादादि का समावेश है,) इस विषय के पुस्तकों में एक प्रमुख स्थान इसको मिला है। मराठी के प्रवाद तथा लोकोक्तियों का एक विराट् और सम्पूर्ण संग्रह-ग्रन्थ सम्प्रति निकला है, पर इसे देखने का हमें अब तक सुयोग मिला नहीं—यह भी एक श्रेष्ठ ग्रंथ है। प्रवादों की ओर हमारी दृष्टि को आकर्षित करना आधुनिक यूरोप के मानव-प्रेम तथा संस्कृति-विषयक कौतूहल का फल है। भारतीय भाषाओं के प्रवादों के पहिले संग्रह यूरोपीय विद्वानों ने ही किये हैं। बंगला के तथा संस्कृत के प्रवाद और सूक्तियों की प्रथम पुस्तक सन् १८३२ में कलकत्ते से निकली थी और इसके संग्रहकार थे Reverend W Morton रेवरेण्ड डब्लू मार्टन नाम के (क्रिश्चियन) एक मिशनरी। वैसे हिन्दुस्तानी और फारसी के लिये कलकत्ते से T Roebuck टी रोबक ने सन् १८२४ में एक पुस्तक निकाली थी। इस सांस्कृतिक तथा लोकज्ञान-संयुक्त कोष के काम में हमारे पथिकृत् और पथप्रदर्शक गुरु तो थे यूरोप के कुछ विद्वान्, पर अब तक हम भारतीयों ने इसमें यथायोग्य उत्साह और कर्मचेष्टा प्रकट नहीं की है। अब तक S W Fallon एस डब्लू फालन और R. C. Temple आर सी टेम्पल के ग्रन्थ हिन्दी के लिये सब से महत्वपूर्ण ग्रंथ बन रहे हैं। पर यदि कभी और पचीसों प्रकार की बोलियों को लेकर हिन्दी में चालू प्रवाद लोकोक्ति, सूक्ति

और कहावतों के संग्रह और व्याख्या में हम लग जायँ, तो कई हजार कहावतों का एक विराट् अभिधान निकल सकता है, जिससे समग्र उत्तर भारत के जीवन का एक विस्तृत परिचय मिलेगा।

अध्यापक श्री नरोत्तमदास स्वामी और पण्डित श्री मुरलीधर व्यास विशारद ने अपनी प्रान्तिक बोली, अपनी मातृभाषा पर प्रेम रखते हुए जो नातिक्षुद्र संग्रह-पुस्तक दो खंडों में प्रकाशित की है, उसके ग्रथन के लिये लेखकों को कई अन्वेषक-परंपरा नहीं मिली, राजस्थानी के लिये इस विषय में इन्हें ही pioneer या पथिकृत् बनना पड़ा। पर इनके सामने कई अच्छे संग्रह विद्यमान होने के कारण इन्होंने जिस सुन्दर ढंग से अपनी पुस्तक बनाई, उससे भाषा, साहित्य और लोकसंस्कृति पर प्रेम रखने वाले सन्तुष्ट होंगे, उनकी पुस्तक से लाभ उठाते हुए लेखकों को धन्यवाद देंगे। प्रत्येक कहावत अपने शुद्ध राजस्थानी रूप में दी गई है, उसके नीचे हिन्दी में आक्षरिक अनुवाद रक्खा है जिस से भाषागत विशेषताएँ परिस्फुट होती हैं, फिर अन्त में एक संक्षिप्त हिन्दी टीका भी दी गई है, जिससे कहावत का अभिप्राय अथवा इसकी खास बात, इतिहास आदि, खुलासा कर दिया गया है। हमें आशा है कि यह पुस्तक अपने नये-नये संस्करणों के साथ और भी बढ़ती जायगी, और राजस्थानी तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान अधिकार कर रहेगी।

किसी भाषा में वार्त्तालाप के लिये तथा लेखन के लिये प्रवाद एक सार्थक अलंकार है। मानों की भाषा की नमकीनी या लावण्य इसमें प्रयुक्त प्रवाद और कहावतों में छिपा हुआ है। किसी भाषा की प्रवादावली उस भाषा की जनता की सैकड़ों वर्षों की अभिज्ञता का सम्पुट है। यह अभिज्ञता जीवन के सब व्यापारों के आधार पर होती है। प्रवादों के गठन में आबाल-वृद्ध-वनिता, राजा से गुलाम, पण्डित से अनपढ़, साधु से ठग, सब प्रकार के मानवों का सहयोग होता है। जब से मनुष्य सामाजिक बन कर अपनी परिस्थिति के सम्बन्ध में सचेत हुआ था, तब से उसकी चिन्ता और धारणा, उसके निन्दन और अनुमोदन, उसकी आशा और आकांक्षा, उसके समालोचन और व्यंग, प्रवादों के रूप में ही प्रकटित हुए। दो-चार शब्दों में संक्षिप्त सूत्राकार उक्ति में ही प्रवादों की शक्ति निबद्ध रहती है—"स्वल्पा च

मात्र, बहुत्ते पुत्रम ।" मानव-संस्कृति के उष:काल ही में प्रवादों का स्थान हमारे समाज-गत जीवन में बन चुका है। सब जाति के प्राचीन साहित्यों में प्रवाद मिलते हैं—कहीं शास्त्र या साहित्य में वाङ्मय के अलङ्करण के रूप में कहीं पूरे के पूरे कहावतों की संहिता या संग्रह के रूप में। जनता के कवि-मन ने साधारणतया अनजान से असंख्य कवितामय कहावतों की सृष्टि की है। इन अज्ञातनामा अशिक्षित-परिचय लोककवियों द्वारा किसी अपरनिरूपणीय युग में रची हुई सूक्तियाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी आवागमन से प्रचलित होकर, चाहे अपने मूल और अविकृत रूप में हो चाहे परिवर्तित रूप में हो, जनता के चित्त को अभी तक साहित्य रस से सञ्जीवित कर रही हैं। लोग अपने लाभ और नुकसान सुख और दुख से भरे हुए जीवन में इन सूक्तियों का स्मरण करते हुए अपनी Subconscious mind या अन्तर्मना में मग्न हो जाते हैं—कहते हैं हाँ, ठीक ही कहा है। कहावतों में यों भावसाम्य मिलने के कारण लोगों का चमत्कार का भान होता है, सुख और भी ज्यादा होता है। अज्ञात-नाम लोक-कवियों के साथ सुपरिचित-नामा देश के पुण्यश्लोक बड़े-बड़े कवि भी मिल जाते हैं—भाषा के श्रेष्ठ कवियों के पद या पदांशों को भाषा की जनता ऐसी अपना लेती है कि मानों उसकी रग रग में सब पद या पदांश उसके अपने ही हृदय से उद्भूत हुए हैं। किसी भी भाषा में किसी कवि की लोकप्रियता की जाँच के लिये यह ही सर्वप्रधान मान है, कि उसके द्वारा रचित कितनी उक्तियाँ जनता के लिये चालू कहावत या प्रवाद बनी हैं। इस दृष्टि से हमें विदित होता है कि अंग्रेजों में शेक्सपियर की लोकप्रियता और सब कवियों से अधिकतर है, एतद्देशीय भारतीयों में कालिदास की, और हिन्दी संसार में कबीर और तुलसीदास की।

भारत के बाहर की जातियों के साहित्यों में प्रवादों का भरमार है। पुराने यहूदी धर्मग्रन्थ में Mashal "मशाल" नाम का एक भाग है, जो कि यहूदी प्रवादों का एक संग्रह है, अंग्रेजी में इस भाग के नाम का अनुवाद किया गया है "The Book Proverbs"। प्रवादों का एक संग्रह प्राचीन स्कान्डिनावीय जाति (जो कि जर्मनिक आर्यों की एक शाखा है) उसकी पुरानी ग्रन्थ Edda "एद्दा" में मिलता है। प्राचीन पुरुषों के ज्ञानधर्म विचार के आधार होने के कारण बहुत

प्रवाद एव अलौकिक ज्ञान एक ही पर्याय के गिने जाते थे। प्रत्येक जाति के ज्ञानपूर्ण वाङ्मय Wisdom Literature से, इसमें प्रचलित प्रवाद और कहावतों से मतलब है।

ऋग्वेद से शुरु करके अवतक भारतीय साहित्य में प्रवाद और कहावतों का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। ऋग्वेद तथा अथर्ववद में कितने पूरे अर्धऋक्, पाद या अर्धपाद को अर्थन' लोकोक्ति या कहावत कहा जा सकता है, जैसे—

नानाना वा उ नो धियो वि व्रतानि जनानाम्। (९।११२।१।)

न वे स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति—सालारकाणा हृदयान्येता। (१०।९५।१५।)

अक्षैर्मा दीव्य , कृषिमित् कृषस्व, वित्ते रमस्व वहुमन्यमान ॥ (१०।३४।१३।)

महाभारत, बौद्ध-धर्मपद, चाणक्य-सूत्र, पञ्चतन्त्र, हितोपदेश आदि संस्कृत के नीतिविषयक कितने ही ग्रन्थ इन प्रवादों से भरपूर हैं, जसे—

एको हि दोषो गुण-सन्निपाते निमज्जतीन्दो किरणेष्विवाङ्क'।

शरीरमाद्य खलु धर्म-साधनम् ॥

क कर प्रसारयेत् पन्नग-रत्न-सूचये ॥

न रत्नमन्विष्यति, मृग्यते हि तत् ॥

याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा ॥

के वा न स्यु' परिभवपदा निष्फलारम्भयत्ना ॥

कवीर, सूर, तुलसी आदि नामी कवि तथा अज्ञातनाम कवियों के कितने दोहे, चौपाइयाँ उत्तर भारत की जनता के हृदय के भावों को प्रतिध्वनित कर लोकप्रिय कहावत ही बन गई हैं—इनके संख्या नहीं है, जिसी किसी प्रान्त में जाइये, वहां के प्रातिक बोली में भी ऐसी कवितामय कहावत प्रवाद आदि मिलेंगे। राजस्थान के लिये यह मन्तव्य विशेष रूप से प्रयोज्य है—इसका प्रमाण राजस्थानी में प्रचलित असख्य दोहा प्रभृति पद और कविताओं से मिलेगा, जिनमें थोड़े कुछ सग्रह अब तक प्रकाशित हो गये हैं।

कहावतों के विषयनिष्ठ वर्गीकरण और उसके अनुसार किये हुए विवेचन से समाज-सबधी नाना प्रकार की वार्ताओं का पता चलता है। कुछ कहावतों का आविर्भाव हुआ राजदरबार से, कुछ निकली है अन्त'पुर के रसोईघर से, किसी में-

गरीब गृहस्थी पैसे की मिट्टी की हाँडी बजा-बजा कर मोलता है, किसी में निस्सहाय मनुष्य ईश्वर के ऊपर शेष भरोसा रख कर दम लेने की कोशिश करता है। कहीं राजपूतानी का पतिगौरव अपना सिर ऊँचा कर खड़ा होता है और कहीं हिन्दू समाज में विधवा के नैराश्यपूर्ण जीवन का ज़िक्र आता है। और तरह-बे-तरह रीति से ग्रामीण दार्शनिक अपनी कठोर अभिज्ञता से लब्ध जीवनवेद की बातें सुना देता है। कितने छोटी-मोटी घटनाएँ जिनके कुछ न कुछ ऐतिहासिक आधार हैं, समग्र समाज के लिये अवलम्बन-भूमि या आदर्श बन गई हैं। the collective experience and judgment of the people—जनता की समवेत अभिज्ञता तथा विचार—इसमें उपलब्ध कहानियों में मिलेंगी।

भारत की संस्कृति, भारत का जीवन एक और अखण्ड है,—इसके प्रान्तिक स्वरूपों में चाहे कितना ही बाहिरी पार्थक्य दिखाई दे। विभिन्न प्रान्तों के प्रवादों की समता और इनकी समान भंगिमा से यह बात साबित होती है। विभिन्न प्रान्तिक प्रवाद और कहानियों की तुलनात्मक आलोचना भारतीय संस्कृति की जाँच के लिये विशेष उपयोगी ही होगी।

आपाततः से ऐसी तुच्छ वस्तु होते हुए भी कहानियों का महत्त्व हम भलीभाँति समझ सकते हैं। जाति की आत्मा पर महत्त्वपूर्ण और सार्थक विचार विश्लेषण के लिये आवश्यक साधन या सामग्री को एकत्रित कर देना रचनात्मक कार्यों में अन्यतम मुख्य कार्य है। राजस्थान ऐसे एक प्राचीन तथा सुसंस्कृत प्रान्त की भाषा को अवलम्ब कर विद्यमान इस सामग्री को, विद्वत्समाज के उपयोग के लिये प्रस्तुत ग्रंथ में लेखकद्वय ने उपस्थापित किया है, इस लिये हम उनके आभारी हैं। हमें आशा है, इस ग्रंथ का उचित समादर, न केवल राजस्थानी-प्रेमियों में परन्तु निखिल भारत के समूचे शिक्षितों में होगा। इति शम्॥

"सुधर्मा"
१६ हिन्दुस्थान पार्क, कलकत्ता—२९
श्री जगन्नाथ-रथयात्रा,
आषाढ़ २ [illegible] वि० सं० २८ जुलाई १९[illegible]

सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या

राजस्थानी कहावतां

६—अकलरा अजीरण

अक्लका अजीर्ण

बातोंमें ज्यादा अक्ल होना। मूर्खता होना।

७—अकल सरीरां ऊपजै, दियी न आवै सीख

अक्ल शरीरमें ही उपजती है (अपने आप ही आती है), सिखानेसे नहीं आती।

दूसरेकी अक्लसे अक्लमन्द नहीं बना जा सकता।

८—अकल सरीरां ऊपजै, दीयां आवै दाम

बुद्धि शरीरमें ही उपजती है (दी हुई नहीं आती), दिये हुए तो दाम आते हैं।

बुद्धि सिखानेसे नहीं आती।

९—अकलसूं खुदा पिछाणीजै

बुद्धिसे खुदा पहचाना जाता है।

(१) बुद्धिसे परमात्मा प्राप्त होता है।

(२) बुद्धिसे बड़ी-से-बड़ी बात समझी जा सकती है।

१०—अकल होवै ऊपजै दीयां आवै दाम

[देखो ऊपर कहावत नं० ८]

११—आकाससूं पड़ी तो खजूरमें अटकी

आकाशसे गिरी तो खजूरके पेड़में अटकी

एक विपत्तिसे निकली तो दूसरीमें पड़ी।

१२—आकाससूं पड़ी धरती झाली कोनी

आकाशसे गिर पड़ी और पृथ्वीने ग्रहण नहीं किया।

बड़ी भारी विपत्तिमें पड़ना।

---

१ कम-खोटेकी तमाखर लिये हुये दाम।

१३—अकूरडी पर किसो आंबो को हुवंनी

घूरेपर कौनसा आम नहीं होता ? (घूरे पर भी आम हो सकता है)।

बुरी जगह भी अच्छी वस्तु पैदा हो जाती हैं, नीच कुलमें भी सज्जन उत्पन्न होते हैं।

१४—अकूरडी पर मेह बरसे, और महलां पर ही बरसे

घूरेपर भी मेह बरसता है और महलोंपर भी बरसता है

सज्जन सबको समान दृष्टिसे देखते हैं।

१५—अकूरडी पर सोवे र महलां रा सपना आवे

घूरेपर सोता है और महलोंके सपने आते हैं।

असंभव बातोंकी इच्छा करना।

मिलाओ—चहिअ अमिअ जग जुरे न छाछी (तुलसी)।

१६—अकूरडी वधता कांई वार लागे ?

घूरेको बढते क्या देर लगती है ?

खराब या अनिष्ट वस्तु शीघ्र बढती है।

१७—अग्गमवुद्धी बाणियो, पिच्छमवुद्धी जाट
तुरत वुद्धि तुरकडो, बामण सपमपाट

बनिया अग्रिमबुद्धि (पहले सोचनेवाला) और जाट पश्चिमबुद्धि (पीछे सोचनेवाला) तुर्क सद्य बुद्धि और ब्राह्मण सफा कोरा होता है।

बनियेको पहले सूझती है, जाटको पीछे, मुस्लिमको तुरत और ब्राह्मणको बिलकुल नहीं।

१८—अग्गमवुद्धी बाणियो, पिच्छमवुद्धी ब्रह्म

बनियेको पहले सूझती है, ब्राह्मणको पीछे

१९—अग्गमवुद्धी बाणियो, बामण सपमपाट

बनियेको पहले सूझती है, ब्राह्मण सफसफा (सूझसे) कोरा होता है।

२०—अग्गे अग्गे ब्राह्मणा

आगे-आगे ब्राह्मण

ब्राह्मण सब कामोंमें आगे रहते हैं।

२१—अग्गे-अग्गे ब्राह्मणा नदीनाळा बरजन्ते

आगे-आगे ब्राह्मण पर नदी-नालोंको छोड़कर

ब्राह्मण और सब कामोंमें आगे रहते हैं पर खतरनाक कामोंको छोड़कर।

२२—अचलेश्रीने कैग गिविया गिरिया घररी नार

अचलश्रीको जिसने गन्दा बनाया (कलंकित किया) घरकी नारीने

(१) आदमीकी बुराई उसके कुटुम्बवाले ही प्रकट करते हैं

(२) पुरुषकी (या घर की) शोभाको बनाना बिगाड़ना स्त्रीके हाथोंमें होता है।

२३—अजाण'र आंधो बराबर हुवै

अनजान और अन्धा दोनों बराबर होते हैं

इसलिये अनजान व्यक्ति अपने अज्ञानके कारण कोई बुराई या मूर्खता कर बैठे तो बुरा नहीं मानना चाहिये।

२४—अजाण्यैने दोस नहीं

अनजानको दोष नहीं

अनजानका अपराध माफ

[ऊपरवाली कहावत देखो]

२५—अजाण्य पाणीम नहीं उतरणो

अजान पानीमें (जिसकी गहराईका पता न हो) नहीं उतरना चाहिये

२६—अठीमली छियां अठीने आयां मरे

इधरकी छाँह उधर आती ही है

सुख-दुख बारी बारीसे—सभीको—आता है।

२७—अठे कांई हिमाणी गडियोडी है

यहां क्या जमा गड़ी है (हिमाणी=रुपयोंकी थली जिसे कमरके चारों ओर लपेट लेते हैं)।

जब कोई व्यक्ति किसी जगहको न छोड़े।

मिलाओ—यहां क्या तेरी नाल गड़ी है?

२८—अठे जोईजै जका उठै जोईज

यहा जिनकी आवश्यकता है उनकी वहां भी आवश्यकता है।

भले आदमियोंकी चाहना लोक-परलोकोंमें सर्वत्र होती है।

(भले व्यक्तिकी शीघ्र मृत्युपर कही जाती है)।

मिलाओ—(१) जिनकी यहां चाह उनकी वहां भी चाह।

(2) They die early whom the gods Love

२९—अजगर पडी उजाडमें दाता देवणहार

अजगर जगलमें पड़ी रहती है वह कहीं परिश्रम करने नहीं जाती पर दाता-परमात्मा उसे खाद्य पहुचा देता है।

आलसी व्यक्तिपर व्यगसे।

३०—अडीकतां को आवै नी

प्रतीक्षा करनेसे नहीं आता

यह लोक विश्वास है कि किसी व्यक्तिकी प्रतीक्षा की जाय तो वह जल्दी नहीं आता।

३१—अड़ो दड़ो बळदीरै सिर पडो

सारा गड़बड़घोटाला बहूके सिर पड़ो

जब अपराध कोई करे और किसीके सिर मढ़ा जाय।

३२—अणभणिया घोडै चढै, भणिया मांगै भीख

अपनढ़ घोड़े चढ़ते हैं, पढ़े भीख मांगते हैं।

३८—अत्तोताईरो माटी आवे टोपारेंरो दियो जगावे

आततायी पति दुपहरमें आता है और दिया जलानेको कहता है।

किसीसे न करने योग्य कार्य करवानेपर कही जाती है।

३९—अनोखें हाथ कटोरा आया पाणी पी-पी आफरिया

अनोखे व्यक्तिको कहींसे कटोरा मिल गया तो बस लगा उससे पानीपर पानी पीने और पीते-पीते पेट फूल आया।

मूर्ख अथवा तुच्छ व्यक्तिके लिये। जो कोई नई चीज मिलनेपर, साधारण वस्तु अथवा अधिकारकी प्राप्तिपर, इतराने लगता है।

मि०—Set a beggar on horse back and he will ride to the devil

४०—अन्न खावे जिसी डकार आवे

जैसा अन्न खाता है वैसे ही डकार आती है।

४१—अन्न खावे जिसो मन्न हुवे

जैसा अन्न खाता है वैसा मन होता है

भोजनका प्रभाव मनपर अवश्य पड़ता है।

४२—अन्न खावे जिसी निवंत हुवे

जैसा अन्न खाता है वैसी नियत होती है।

नीचका अन्न खानेसे नीयत भी नीच होती है।

४३—अन्न मुक्ता घी जुक्ता

अन्न पेट भरकर खाय और घी जितना पच सके उतना।

४४—अपणी करणी पार उतरणी

अपनी करनीके अनुसार पार उतरना होता है।

(१) कामके अनुसार फल मिलता है

(२) करनीका फल भोगना पड़ता है।

४५—अब पिसतायां हाथ क्या जब चिड़िया चुगगी खेत
अब पछताना क्या होता है जब चिड़ियां खेत चुग गयीं।
काम बिगड़नेपर पछताना व्यर्थ है।
मिलाना—(1) का बरखा जब कृषी सुखानी (तुलसी)
(2) crying over spilt milk

४६—अभ्यूरो माइ थम्यू
अधूरा माई टमू
ये सब लेकर बस है।

४७—अबै किसा मियां मरग्या क रोजा पठग्या ?
अब कौनसे मियां मर गये या रोजे घट गये ?
अब कौनसा मौका निकल गया कि यह काम नहीं हो सकता ?
अब भी काम कर डालो, अब भी काम किया जा सकता है।

४८—अबै नींद खागो है।
अब नींद आयी (टूटी) है।
अब सचेत हुये हो।

४९—अभागियेरी खोपड़ी
अभागेकी खोपड़ी
अभागा मनुष्य।

५०—अभ्यास बड़ो है
अभ्यास बड़ा है।
अभ्याससे सब हो सकता है।
मिलाना—Practice makes perfect

५१—अमराइरा बीज खा'र कोइ को आयो नी
अमरत्वका बीज खाकर कोई नहीं आया है।
कोई भी अमर नहीं है।

५२—अलख पुरखरी माया, कठै धूप कठै छाया

यह अलख पुरुषकी लीला है कि कहीं धूप है और कहीं छाया।

कहीं सुख, कहीं दुःख, यही ईश्वरीय लीला है।

५३—अलड़ो रोवै, बलड़ी रोवै, सत मनसूड़ी झालरढ़ी भणकावै

५४—अलड़ो जोबण भीतारे लगावणनै को हुवे नी

अलहड़ यौवन भीतोंके लगानेको नहीं होता।

किसी वस्तुका आधिक्य होनेपर भी वह व्यर्थ

नहीं गवायी जाती।

५५—अलूणी सिला कुण चाटै ?

अलोनी शिला कौन चाटे ?

(१) बिना लाभके कौन साथ दे !

(२) बिना लाभके कौन कोई काम करे !

(३) बिना लाभकी आशाके नीच काम कौन करे !

५६—अलोजी घोड़ारा पारखू।

अलोजी घोड़ोंके पारखी है !

५७—अल्ला-अल्ला खेर सल्ला

अल्ला अल्ला करके काम बना।

खैर जो हुआ सो हुआ।

खैर, जो हुआ सो अच्छा।

मिलाओ—All's well that ends well

५८—अल्लारी मारो चालीसो

अल्लाकी मारका चालीसा (चालीसवाँ दिन—मृत्युके बाद चालीसवें दिन का भोज)

बेड़ तजामिया काम।

९६—असली गुणकू ना तजै, गुणकू तजै गुलाम

असली गुणको नहीं त्यागता वर्णसंकर गुणको त्याग देता है।

असली वस्तु अपनी विशेषताको चाहे वह भली हो या बुरी नहीं छोड़ती।

खानदानी आदमी अपने खानदानी गुणको नहीं छोड़ता।

मिलाओ—असलसे खता नहीं कम-असलसे वफा नहीं।

हस्ती मरती ना तजै सटरस तजै न आम।

दौलतमंद गुण ना तजै गुणकू तजै गुलाम॥

१०—असोरी आमँद चौरासीरो खर्च

असोकी आमदनी चौरासीका खर्च।

आमदनीसे ज्यादा खर्च नहीं होना चाहिये।

११—अंत बुरा बैर है

अति और परमात्मासे बैर है।

इससे ज्यादा कोई काम अच्छा नहीं।

मिलाओ—(१) अति सर्वत्र वर्जयेत्।

( ) *Too much of every thing is bad*

१२—अंधारी रातमें मूंग काला

अंधेरी रातमें मूंग काले (दिखाई देते हैं)

अंधेरेमें सब कुछ एकाकार हो जाता है।

मि —रात काळी, सब् काळो।

१३—अंधेर नगरी अणबूझ राजा टकै सेर भाजी, टकै सेर खाजा

(१) जहांपर सबेबुद्धिके साथ एक-सा बर्ताव हो और गुण अवगुणकी कोई कदर न हो वहाके लिये कही जाती है।

( ) अदल मन्याव बड़ामारी अन्धेर।

(३) अराजकता।

इसकी कहानी प्रसिद्ध है।

६४—अंबर दूमै, भूत कमाव, आकाशी धन आपेड आवै
आकाश दूध देता है, भूत काम करते हैं।
सब काम मुफ्तमें होता है, बिना प्रयास अर्थप्राप्ति होती है।

६५—आयी अलाँय, दी चलाय
उधरसे आया, इधर दे दिया।

६६—आयी वहू आयो काम, गयी वहू गयो काम
वहू आई तो काम भी आया, वहू गई तो काम भी गया।
आदमीके आने-जानेके साथ काम बढ़ता-घटता है।

६७—आयी मोज फकीरको दिया झूँपडा फूँक
(१) फकीरोंके लिये, जो सासारिक वस्तुओंसे मोह नहीं रखते।
(२) मौजी आदमीके लिये, जो मौजमें चाहे-सो कर बैठता है।

६८—आयी ही छाछनै, वण बैठी घररी धणियाणी
आयी थी छाछको, और बन बैठी घरकी मालकिन।
अनधिकार चेष्टा करना।

६९—आ अे बाई अबाँ, आप-आपरै ढबाँ—
आ ऐ बाई अबाँ, अपने अपने ढबवालोंको।
अपने अपने ढबवालोंको देना, पक्षपात करना।

७०—आ अे लूँकी लोवरियो, थारी खीर ठरै है ठोबरियो

७१—आकमे आँबो नीपज्यो
आकमें आम पैदा हुआ।
(१) नीचकुलमें अच्छा पुरुष पैदा हुआ।
(२) दुष्टके सज्जन पुत्र जनमा।
(३) असभव बात हुई।

(क) पहली केस खिचाविया, पछे वधायो चीर।
आयो लाज गमायकर, आखर जात अहीर।
साख न थरि, आख लाज नहि, नहि जाणो पर-पीर।
वरज रही, वरज्यो नहि मानो, आखर जात अहीर।

७७—आगले भौरा वदला है

पिछले जन्मके वदले (वदला लेनवाले) हैं।

(१) जव कोई सताता है तव कहा जाता है।

(२) जव सतान होकर, या सुयोग्य होकर माता-पिताके पहले मर जाती है तव कहा जाता है।

७८—आगलै भौरा वदला किसा छूटै है ?

पिछले जन्मके वदले कौन से छूटते हैं ?
पूर्व-जन्ममें दूसरोंको दुःख दिया है तो उसका वदला चुकाना ही पड़ता है।

(ऊपरकी कहावत देखो)

७९—आगै-आगै, गोरख जागै

भविष्यकी चिन्ता छोड वर्तमानकी चिन्ता करो, आगे गुरु गोरखनाथजी समर्थ हैं।

८०—आगै अेक घडीरी ही को दीसै नो

आगे एक घडीकी भी नहीं दिखायी देती।

भविष्यमे, घडी भर बाद भी, क्या होगा सो अज्ञात है, भविष्यका कुछ पता नहीं, घडी भर बाद क्या होगा इसका भी पता नहीं।

८१—आगै कूवो, लारै खाड

आगे कुँवा, पीछे (खदक)
दानों ओर सकट।

८२—आगै धंधा, पीछै धवा,
धंधेपर सिवरे, ऊ साहवका वदा।

आगे भी काम पीछे भी काम, इतना काम होनेपर भी जो परमात्माको याद करता है वही परमात्माका सेवक है।

दुनियामें कामकाज तो लगा ही रहता है, कामकाजमें फँसे रहनेपर भी जो परमात्माको नहीं भूलता उसीका जीवन सफल है।

८३—आगेमू पोछा भला, नाम भला छेहूरा।

आगेवालेसे पहलेवाला अच्छा, छेहरा नाम ही अच्छा।

८४—आपा दियाँ पाछा आवै

दूर हटानेपर वापिस लौट आते हैं (धन सम्पत्ति)।

अत्यन्त सम्पत्तिशालीके लिये।

८५—आपा पधारो कुँकूरा पगलिया (करो)

=अपने कुँकुम-चर्चित चरणोंको दूर हटाओ।

आपका शुभागमन न होना ही अच्छा है (व्यंगोक्ति

८६—आपा रह्याँसूँ हेत बधै—

दूर रहनेसे प्रेम बढ़ता है।

(१) विरहमें प्रेम बढ़ता है।

मि०—विरह प्रेम-हूँठा रचै दिन दिन बधै सवाय।

( ) पास रहनेसे प्रेम नहीं रहता, अति परिचयादवज्ञा भवति—इस कहावतके अनुसार।

८७—आपो दियो पाछो पड़ै

(१) आगे बढ़ाया हुआ (पग) भी पीछे हटता है।

जो व्यक्ति कायरताके कारण कोई काम करनेसे हिचकता है उसके लिये।

८८—आछा फूल महेरा चढै

अच्छे फूल महादेवजीपर चढ़ते हैं।

भली वस्तुएँ भलोंको ही चढ़ती है।

८९—आछै जीणसूँ घोडो आछो को गिणीजैनी

अच्छी जीनसे घोड़ा अच्छा नहीं गिना जाता।

वाह्य वेश अच्छा होनेपर भी निगुणी गुणवान नहीं समझा जा सकता।

९०—आज मेरी मंगणी, कल मेरा व्यांव्

टूट गयी टँगरी, रह गया व्यांव्

'आज मेरी मँगनी है, कल मेरा विवाह होगा' इस प्रकार सोचते-सोचते टाँग टूट गयी और विवाह धरा रह गया।

मनुष्य सोचता है कुछ, होता है कुछ, भविष्यका कुछ पता नहीं।

मि०—Man Proposes, god disposes

कबीर पगड़ा दूरि है, जिनके विचि है रात
का जाणै, का होइगा ऊगवँते परभात

रात्रिर् गमिष्यति, भविष्यति सुप्रभात,
भास्वानुदेष्यति, हसिष्यति पकजश्री ।
इत्थ विचारयति कोप-गते द्विरेफे,
हा ! हत !! हत !!! नलिनीं गज उज्जहार !

९१—आज हमां तो काल तमां

आज हमको तो कल तुमको (काम पड़ेगा)।

ससारमें अेक-दूसरेसे काम पड़ता ही रहता है।

९२—आटैकी भींत अटारीको मरणो (?)

आटेकी भींत और अटारीका मरना।

आटेकी भींत अच्छी नहीं, अटारीसे गिर कर मरना अच्छा नहीं।

९३—आटैमे लूण खटावै जितो कूड खटावै

आटेमें नमक चलता है उतना झूठ।

थोड़ा-सा झूठ चल सकता है पर अधिक नहीं।

१०१—आदमी वाडमे मूतता ही आया है

आदमी वाड़में मूतते ही आये हैं (वाड़=झड़नेरी आदिके काटों की चहारदीवारी)।

(१) यह काम होता ही आया है, कहाँ तक रोकेगे ?

(२) पुरुष व्यभिचारी होते ही है ।

१०२—आदस्या अधूरा रहै, हर करै सो होय

आदर-पूर्वक हाथमें लिये हुये काम अधूरे ही रह जाते हैं, भगवान् करते हैं वही होता है ।

आदमी जो करना चाहता है वह नहीं होता, भगवान् करते हैं वही होता है ।

(देखो ऊपर कहावत न० ९०)

मि०—नरका चेता होत नहि, प्रभु–चेता ततकाल ।

१०३—आदमी है क घनचक्कर

आदमी है या घनचक्कर ।

नटखट या मूर्खके लिये ।

१०४—आधी रोटी घररी भली

आधी रोटी घरकी अच्छी ।

(१) पराधीन रहकर पेट भरनेकी अपेक्षा स्वाधीन रहकर किसी तरह गुजारा करना अच्छा है ।

(२) परदेशमें जानेसे खूब पेट भरे तो वहाँके कष्टोको देखते हुये उसकी अपेक्षा अपने देशमें रहकर साधारण गुजारा कर लेना अच्छा है ।

(३) दूसरे घर पेट भरता हो तो भी घरका आधा भोजन अच्छा क्योंकि दूसरेके यहाँ अपमान होगा ।

मि०—मिले खुश्क रोटी जो आजाद रहकर,
तो वह खौफ व जिल्लतके हलुवेसे बेहतर ।

१०५—आधै माह कामळ कांधै

आधा माघ बीत जानेपर कंबल हाथोंपर आ जाती है।

आधे माघके बीतनेपर जाड़ा कम होने लगता है।

१०६—आपैमें लूंकी आपैमें पूंछ

आपमें लोमड़ी और आपमें उसकी पूछ।

१०७—आपैरा गुळ, आपैरा चौंपळा

१०८—आप-आपकी तानमें गध्धा भी मस्तान

अपनी तानमें गधा भी मस्त रहता है।

अपनी मौजमें क्या बड़े और क्या छोटे सभी मस्त रहते हैं।

१०९—आप-आपरा सीर-संस्कार है

अपने-अपने पूर्व संस्कार और हिस्सा है।

अपने-अपने भाग्यके अनुसार सुख दुःख मिलते हैं।

११०—आप-आपरी करणीरै कांठै

अपनी-अपनी करनीके निकट है।

अपने-अपने कर्मोंके अनुसार फल भोगते हैं।

१११—आप-आपरी खैंचो' र ओढ़ो

अपनी-अपनी (चादर) खेंचो और ओढ़ो।

(१) अपना-अपना फिक्र करो।

(२) अपना-अपना काम देखो।

(३) अपनी-अपनी करनीका फल भोगो।

११२—आप-आपरी रोटीरै नीचै सै खीरा देवै

अपनी-अपनी रोटीके नीचे सभी कोयले (जलते अंगारे) देते हैं।

सब अपने स्वार्थका ध्यान रखते हैं।

सब अपनी रोटी बनाने रखनेका यत्न करते हैं।

११३—आप-आपरै घरै सै ठाकर

अपने-अपने घर सभी ठाकुर।

अपने घरमें प्रत्येक व्यक्ति राजाके समान होता है।

११४—आप-आपरै थानै-मुकानै भला

अपने-अपने स्थान और मुकाममें ही भले।

(१) अपने स्थानपर सभी अच्छे लगते हैं।

(२) इतने दुष्ट है कि इनका अपने ही स्थानमें रहना अच्छा (बाहर निकलना अच्छा नहीं)

११५—आप-आपरै भागरो सै खावै

अपने-अपने भाग्यका सब खाते हैं।

(१) जिसके भाग्यमें जितना लिखा है उतना वह भोगता है।

(२) सब अपने नसीबका खाते हैं, कोई किसीको नहीं खिलाता।

११६—आप-आपरो जी सगळांनै प्यारो है

अपना-अपना जीव सबको प्यारा है।

अपनी रक्षाका फिक्र सभीको है।

११७—आप कमाया कामडा, किणनै दीजै दोष ?

अपने कमाये हुये काम हैं (अपने किये कामोंका फल है), अब किसको दोष दें ?

जब अपने किये कर्मोंका फल भोगना पड़ता है तब कहा जाता है।

११८—आपकी सो लापसी, परायी सो कुसकी

अपनी लपसी और पराई कुसकी (लपसी उमदा भोजन और कुसकी निष्ठुर भोजन) होती है।

अपनी खराब चीज भी अच्छी लगती है और दूसरेकी अच्छी चीज भी खराब।

११९—आप ठग्यां सुख ऊपजै, और ठग्यां दुख होय

स्वय ठगाये जाने पर सुख होता है और दूसरेको ठगानेसे दुःख होता है। दूसरा हमें ठग लेता है तो हमें संतोष होता है कि हमने कोई बुरा काम नहीं किया इससे आत्माको शान्ति मिलती है, हम दूसरेको ठग लेते हैं तो हमारी ही आत्मा हमें धिक्कारती है जिससे हमें दुःख होता है।

१२०—आप डुबंता बामणा ले डूबै जजमान

ब्राह्मण स्वयं तो डूबता ही है साथ ही जजमानको भी ले डूबता है।

(१) मूर्ख पुरोहितके लिये (पुरोहित सदा ब्राह्मण ही होता है)।

(२) आजकलके ब्राह्मणों पर व्यंग।

(३) जो व्यक्ति अपने साथ अपनेसे सम्बन्ध रखनेवाले दूसरोंकी भी हानि कर बैठे उसके लिये।

१२१—आप न जावै सासरै औरानै सिख देय

स्वयं तो ससुराल जाती नहीं, दूसरोंको जानेकी शिक्षा देती है।

जो दूसरोंको उपदेश दे पर स्वयं व्यवहार न करे।

मि॰—पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे (तुलसी)

१२२—आप भला तो जग भला

(१) भलेका सब भले दीखते हैं।

(२) भलेके साथ सब भलाई करते हैं।

मि॰—Good mind good find

१२३—आप मरयाँ बाप किण्नै याद आवै ?

आप मर रहे हों तो बाप किसे याद आता है।

स्वयं भी विपत्तिमें पड़े हों तो दूसरों पर किसीका ध्यान नहीं जाता। पहले अपने-आपको बचानेकी फिक्र होती है।

१२४—आप मरयाँ जग परलै

आप मरने पर जगत्‌का प्रलय हो जाता है। मनुष्य मर गया तो उसके लिये संसार मर गया, चाहे संसार जीवित भी रहे तो उसे क्या काम ?

मि॰—(१) Apres moi le deluge

( ) जान है तो जहान है।

(३) जीते जहान है।

१२५—आप मर्या विना सुर्ग कुण जाय ?

आप मरे विना स्वर्ग कौन जावे ?

बिना स्वय काम किये, काम पूरा नहीं होना।

१२६—आप मियाँ मंगता, वार खड्या दरवेस

मियाँ स्वय मगते है और दरवाजेपर फकीर खडा है।

(१) धन-हीन दानी के लिये।

(२) स्वय धनहीन हों और दूसरा सहायता मांगने आवे तव।

१२७—आप मिलै सो दूध वरावर, मांग मिलै सो पाणी

जो स्वय (विना मांगे) मिले वह दूधके समान है और जो मांगनेसे मिले वह पानीके समान है।

मांगनेकी निंदा।

१२८—आपरी खा'र परायी तक्कै, जाय हडमान वावैरे[1] धक्कै

जो आदमी अपनी रोटी खाकर परायीको भी लेना चाहता है वह हनुमानजीके धक्के चढ़ता है।

जो अपना हिस्सा पानेके वाद भी दूसरेकी रोटी छीनना चाहता है उसका नाश होता है।

१२९—आपरी गरज गधैनै वाप कुवावै

अपनी गरज गधेको वाप कहलवाती है।

आपकी गरज गधैनै वाप वणावै।

अपनी गरजसे गधेको वाप वनाना पड़ता है।

(१) अपना काम निकालनेके लिये नीच आदमीकी भी खुशामद करनी पडती है। (२) स्वार्थसिद्धिके लिये बुरा काम भी करना पड़ता है।

---

१ पाठांतर—वजरगवलीरै।

११०—आपरी गळीमें कुत्ता ही सेर

अपनी गलीमें कुत्ता भी शेर।

अपने स्थानपर तुच्छ व्यक्ति भी बलवान होता है।

१११—आपरी जांघ उघाड़्यां आपनै ही लाज

अपनी जांघ उघाड़नेसे अपने आपको ही लाज लगती है।

अपने निकटस्थ सम्बन्धियोंकी बुराई प्रकट करनेसे स्वयं ही लज्जित होना पड़ता है (जब पुत्र आदि बुरा काम कर बैठते हैं तब बाप आदिका कथन)।

मि०—अपनी जांघें उघारिये आप ही लाजों मरिये।

११२—आपरी दाढ़ीरै बसतरको पहली देवै—

अपनी दाढ़ीके मतलब पहले देते हैं (दंडी—दारागुणी दंडी)

अपना मतलब पहले बनाते हैं अपने मतलबका सबसे अधिक ध्यान रखते हैं।

११३—आपरी नरमाई पैलैनै खावै

अपनी नम्रता सामने वालेको खा जाती है।

नरमाईसे सामनेवाला व्यक्ति भी पिघल जाता है।

नम्रतापूर्ण व्यवहारकी प्रशंसा।

११४—आपरी नींद सूवै, आपरी नींद जागै

अपनी नींद सोता है अपनी नींद जागता है (इच्छानुसार सोता है और उठता है किसीकी पाबन्दारी नहीं)।

स्वाधीन व्यक्तिके लिये।

११५—आपरी माँनै डाकण कुण कैवै ?

अपनी माँको डाइन कौन कहे ?

अपनी बुराईको कोई प्रकट नहीं करता।

अपनेको कोई बुरा नहीं बताता।

१३६—आपरी मारी हलाल

अपनी मारी हुई (मुर्गी) हलाल।

अपना ही किया काम ठीक समझना,

अपना किया काम बुरा हो तो भी ठीक समझना।

१३७—आपरी लाज आपरै हाथमे

अपनी लाज अपने हाथमें।

अपनी लज्जाकी रक्षा मनुष्य स्वय कर सकता है।

१३८—आपरी साथल उघाड्यॉ आप ही लाज मरै

अपनी जाँघ उघाड़नेसे आप ही लाज मरता है।

(देखो ऊपर कहावत नं० १३१)

१३६—आपरै घरमें ओ हीज धोळो जवांरो नीकळ्यो

अपने घरमें यही सफेद जँवारा निकला।

अपने कुटुबमें यही प्रतापी (या भाग्यवाला) हुआ।

१४०—आपरै रूपरो' र परायै धनरो पार नहीं

अपने रूपका और पराये धनका पार नहीं (दीख पड़ता)।

सबको अपना रूप सबसे ज्यादा दीख पड़ता है और इसी प्रकार दूसरेको धन सबसे ज्यादा दीख पड़ता है।

सभी अपनेको सबसे सुन्दर और दूसरोंको सबसे धनवान समझते हैं।

१४१—आपरो कायदो आपरै हाथ

अपनी प्रतिष्ठा अपने हाथ।

(१) अपनी प्रतिष्ठाकी रक्षा करना मनुष्यके ही हाथकी बात है (अच्छे काम करेगा तो प्रतिष्ठा रहेगी, बुरे काम करेगा तो नष्ट हो जायगी)।

(२) नीच आदमीसे झगड़ा करने वालेके प्रति।

१४०—आपरा पेट कुत्तो ही भर लेवै

अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है।

केवल पेटभर लेना कोई बड़ी बात नहीं। मनुष्य जीवन तभी सार्थक है जब परोपकार किया जाय या कोई महान कार्य किया जाय।

मि०—भर लेते हैं पेट जिन्हें प्रभु की दी काया।
पुरुष सिंह हैं वही भरें जो पेट पराया॥

१४१—आपरो मानजो आपरै हाथ

अपनी शोभा या प्रतिष्ठा अपने हाथ।

[देखो अमर कहावत न० १४१]

१४२—आप व्यासजी बैंगण खावै, औरांनै परमोध बतावै

व्यासजी स्वयं बैंगन खाते हैं पर दूसरोंको प्रबोध देते हैं (कि नहीं खाना चाहिये)

जो दूसरोंको उपदेश दे पर स्वयं उसपर न चले उसके लिये।

मिलाओ—(१) दूसरा फजीहत तीसरा नसीहत

(२) पर उपदेश कुशल बहुतेरे
जे आचरहि ते नर न घनेरे (तुलसी)

(३) परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम्।
धर्मे स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्तु महात्मनः॥

१४५—आप समान बल नहीं, मेघ समान जल नहीं

अपने समान बल नहीं मेघके जलके समान जल नहीं।

स्वावलम्बनकी प्रशंसा। सबसे बड़ा बल वही जो अपनेमें हो क्योंकि वक्त पड़नेपर वही काम देता है इसी प्रकार वर्षाका जल सर्वोत्तम होता है।

१४६—आपसूं करै बाकैरै बापसूं डरनो नहीं

जो अपने साथ बुराई करे उसके बापके साथ भी (बुराई करनेसे) नहीं चूकना।

कोई अपनी बुराई करे तो उसका पूरा जवाब देना चाहिये थप्पड़का बदला जूतेसे देना चाहिये।

मि०—(१) शठे शाठ्य समाचरेत्

शठ प्रति शठ कुर्यात्

१४७—आव-आव कर मर गया सिरहाणे रख्या पांणी

'आव-आव' करते हुये मर गये यद्यपि पानी सरहानेके पास ही रखा था।

कहानी—एक मियाजी कावुल जाकर फारसी सीख आये तो घरमें भी फारसीका व्यवहार करने लगे एकवार वे वीमार पड़े और पानी पीनेकी इच्छा हुई, लगे 'आव-आव' चिल्लाने परन्तु घरवाले उनकी वोली नहीं समझ सके। प्यासके मारे मियाँकी प्राणवायु उड़ गई।

(१) फारसी बोलनेवालोंपर व्यंग

(२) जो घरमें भी बाहरी भाषाका प्रयोग करते हैं (जैसे आजकलके शिक्षित) उनके लिये।

१४८—आभै पटकीर'र जमी झाली

आकाशने गिरायी और जमीनने झेली।

बहुत ही निर्धन और दुर्दशाग्रस्त व्यक्तिके लिये जिसको कोई नहीं पुछता।

१४६—आभैसू पड्या'र धरती झाल्या कोनी

आकाशसे गिरे और धरती झेला नहीं।

घोर सकटमें पड़ना।

अतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्ट

(देखो ऊपर कहावत न० १४८)

१५०—आभो इतो-सोक दीसै

आकाश इतना-सा (बहुत छोटा) दिखाई देता है।

१५१—आभो टोप-सी-सो निजर आवै

आकाश नरेटी जितना दिखाई पड़ता है।

१५२—आभो राता मेह माता

आकाश लाल हो तो मेह बहुत होगा।

१५३—आम खावणसूँ काम के रूँख गिणनसूँ ?

आम खानेसे काम या पेड़ गिननेसे ?

१५४—आम खावणा क रूँख गिणना ?

आम खाने या रूँख गिनने ?

व्यर्थकी बातोंमें मगजपच्ची न करके सीधे अपना मतलब पूरा करना, या जो चीज सामने आवे उससे काम रखना चाहिए।

१५५—आम फळै नीचो नळै, ओरँड फळै इतराय

आम फलता है तो नीचेकी ओर झुकता है, एरंड फलता है तो इतराता है (फैलता है)

१५६—आम फळै नीचो झुकै ओरँड अकासां जाय

आम फलता है तो नीचे झुकता है ऐरंड आकाशकी ओर जाता है। बड़ा आदमी संपत्ति या प्रभुता पाकर नम्र होता है और तुच्छ व्यक्ति इतराने लगता है।

मि०—(१) उदति रहे गरजतमें बढ़े अमति नरनीर।

(२) The wise man in office is humble j ck in office offensiv

१५७—आया था हर भजणकूँ, ओटण लग्या कपास

भगवानका भजन करनेको आये थे पर कपास ओटने लगे।

जो काम करना था उसे छोड़कर दूसरा काम करने लगे॥

१५८—आयोड़ो ओसर नहीं चूकणो

आया हुआ अवसर नहीं चूकना चाहिये।

मि०—समझदार सुजाण नर औसर चूकै नहीं।

औसररो औसाण रहै घणा दिन राजिया॥

१५६—आराम घडीरो ही चोखो

आराम घडी भरका हो तो भी अच्छा।

सुख थोड़ा तो भी अच्छा ही है।

१६०—आये मनमनाका, थारै खीर ठरी है नाका,
नहिं आऊँ अे रंडी, थारै वेटे वाली गंडी।

अरी विल्ली, आजा, तेरे लिये खीर खूब ठडी हो गयी है (विल्ली उत्तर देती है कि) अरी रडी, मैं नहीं आऊँगी, तेरे वेटेने मेरी गाँड जला दी।

इसपर एक कहानी है —

एक आदमीने विदेश जाते समय अपनी स्त्रीसे कहा—'मेरी अधी वूढ़ी माताकी खूब टहल-चाकरी करना और कोई कष्ट मत होने देना। आदेशानुसार रोज वुढ़ियाके लिये थालीमें खीर परोसकर रखी जाती थी परन्तु विल्ली उसे चटकर जाया करती थी। कुछ समयके वाद जब वह आदमी वापिस आया और मातासे मिलने गया तो माताने रोकर विल्ली वाली वात कही। सुनकर उसे वडा क्रोध आया और वह जलती हुई लकडो लेकर छिप रहा। ज्योंही विल्लीने थालीमें मुँह मारा कि उसने धीरेसे जलती हुई लकड़ी पूँछके पास लगा दी। दूसरे दिन वुढ़ियाने विल्लीको प्यारसे पुकारा। विल्लीने उपरोक्त उत्तर दिया।

१६१—आ रे म्हारा घररा धणी, जट्टा थोडी जूँवा घणी

आ, मेरे घरके मालिक, जिसके जटा (वाल) तो थोडी हैं पर उसमे जुऍं वहुत हैं (किसी स्त्रीका पतिके प्रति कथन)

मैले-कुचेले रहनेवाले फूहड़ पुरुपके लिये।

१६२—आरे म्हारा घररा धणी, मारी थोडी घींसी घणी

आ, मेरे घरके मालिक, तूने मारा तो थोड़ापर घींसा वहुत वहुत (अधमरा करके फिर घींस घींसकर मारडाला वहुत कष्टसे प्राण लिये)

घृणित काम करनेवाले फूहड पुरुषके लिये।

१६३—आ रे म्हारा सम्पनपाट, हूं तनै चाटूं तू मनै चाट

ओ मेरे सपनपाट, आ मैं तुझे चाटूं और तू मुझे चाट।

अन्योन्य परीषी अन्योन्याश्रय।

१६४—आरे रांडका, राड़ करां, निकम्मा बैठा काई करां ?

अरे रांडके बेटे, आ, निकम्मे बैठे क्या करें और कुछ नहीं होता है तो लड़ाई ही करें।

निकम्मेको कोई काम चाहिये और काम नहीं होता है तो लड़ाई झगड़ेकी ही सूझती है।

मि —Empty mans mind is devils work hope

१६५—आला सूका भेळा ही बळै

गीले और सूखे (काठ) साथ ही जलते हैं।

(१) सबके साथ अेक-सा व्यवहार होता है।

(२) सबको स्थान मिलता है।

१६६—आसियां बिड़ासियां मा-बाप करै

१६७—आंवतांरा भाई, जांवतांरा जंवाई

आते हुओंकि भाई, जाते हुओंकि जमाई।

जो प्रेमके साथ हमारे यहां आते हैं उनके हम भाईके समान प्रेमी और सहायक हैं पर जो अभिमानके साथ हमारे यहांसे चले जाते हैं उनके हम जमाई हैं।

जो प्रेम करें उनके सेवक हैं और जो अभिमान रखे उसको नीचा दिखानेवाले हैं।

मि —(१) चाह करैं चितके चाकर, नाहि चितके ठाकर संकट पुनी जनके चाकर चतुरके कविनके चित हित मित गुन गानीके। सीधनसे सीधे महा बांके हम बांकन सौं हरिचंद नकद दमाद अभिमानीके।

(२) हिलमिल जाने तासों मिलके जनावे हेत,
हितको न जाने ताकी हितु न पहचानिये।
होय मगरूर तापे दूनी मगरूरी कीजै
सीधो हो चले तो सीदा आपहु झुकाइये।

१६८—आव बलद, मनै मार

आ, बैल, मुझे मार।

जानबूझकर आपत्तिको बुलाना।

१६९—आवै न जावै हू लाडैरी भूवा

आता है न जाता है, (कहती है कि) में दूल्हे की फूफी।

जबर्दस्ती पंच बनना।

१७०—आवो तो घर है, जावो मारग है

आते हो तो घर है, जाते हो यह मार्ग रहा।

प्रेम पूर्वक आते हो तो घर तुम्हारा ही है और अभिमान करके जाते हो खुशीसे जाओ (हमें कोई परवाह नहीं)।

प्रेमीका सत्कार करना चाहिअे, अभिमानीकी पर्वाह नहीं करनी चाहिअे।

१७१—आवो भाई जीया, अवै घोट्या'र पीया

भाई जीया, आओ, अब घोटना और पीना।

अब अपना खर्च करो और खाओ-पियो।

कहानी—जिया नामक अेक भँगेड़ी था। वह अपने अेक पड़ोसीको अपने पाससे खर्च करके भाँग पिलाने लगा। कुछ दिनोंमें पड़ोसीको भगका व्यसन अच्छी तरह लग गया। उसके बाद अेक दिन सदाकी तरह वह जियेके यहाँ भाँग पीनेको पहुँचा और आवाज दी—आवो भाई जीया। जियेने दूसरे ही उत्तर दिया—अब स्वयं घोटो और पियो।

१७२—आडो माड़ पूरा, लेखा पूरा

हिसाब किताब साफ है अब न लेना है न देना।

जब हिसाब-किताब साफ हो जाय तब कहा जाता है।

जब लाभ नुकसान बराबर हो तब कहा जाता है।

१७३—आयो वरण अठारह

अठारहों वर्णोंके लोग चले आओ

जहाँ ऊँचनीच सभी घुसे चले जाते हैं वहाँ कोई व्यवस्था नहीं होती, उसके लिये।

१७४—आसा अमर है

आशा कभी नहीं मरती; आशा सदा बनी ही रहती है।

१७५—आसा ही आसामें मिनख जीवै

आशा ही आशामें मनुष्य जीता है

(१) मनुष्यको आशा सदा ही लगी रहती है।

(२) मनुष्यका जीवन आशाके ही आधारपर है।

१७६—आसोजाँरा तावड़ा जोगी हुग्या जाट

आसोजकी धूपसे जाट भी जोगी हो गये (जैसे जोगी भस्म लगाये हैं वैसे ही जाट लोग, जो ज्यादातर किसान होते हैं, आसोजकी तेज धूपमें खेतोंमें पड़े रहते हैं)।
आसोजकी धूप बहुत तेज होती है।

१७७— आसोजाँ रा तावड़ा जोगी हुग्या जाट
बामण हुग्या बाणिया बाण्या हुग्या भाट

आसोजकी धूपसे जाट जोगी हो गये ब्राह्मण बनिये हो गये और बनिये भाट हो गये।

१७ —आहार मारै का भार मारै

(या तो) भोजन मारता है या भार मारता है

(१) भोजन अच्छा न मिलनेसे या भार उठानेसे मनुष्य दुर्बल होता है।

(२) आहार न मिलनेसे या भारी चीजके नीचे दबनेसे मौत होती है।

१७९—अहारे व्योहारे लज्जा न कारे

आहार और व्यवहारमें लज्जा नहीं करना चाहिये।

१८०—आंख-कानमे च्यार आंगळरो आंतरो है

आंख और कानके बीचमें चार अंगुलका फर्क है

कानसे सुनी बातकी अपेक्षा आँखसे देखी बात विश्वासके योग्य होती है।

बिना देखे केवल सुनकर, विश्वास नहीं करना चाहिये, सुनी और देखीमें बहुत फर्क होता है।

१८१—आंख फूटी, पीड मिटी

(१) हानि हुई पर कष्ट गया।

(२) अच्छी वस्तु कष्टदायक हो तो उसका जाना ही अच्छा।

१८२—आंखमे पड्यो तुस, ओ ही लाधो मिस

आंखमें भुसका टुकड़ा गिरा तो यही बहाना मिल गया।

कामके समय साधारणसा बहाना मिल जाय तो उसीको लेकर टालमटोल करना।

१८३—आंखर परमाण तो फूलो पड़ै ही कोनी

आंखके प्रमाण फूला नहीं पड़ता।

बिलकुल मनचाही बात नहीं होती

१८४—आंख्यां देखी परसराम कदे न भूठी होय

परसराम कहता है कि आँखों देखी बात कभी झूठ नहीं होती।

१८५—आंख्यां देखै न कुत्तो भोंके

न आंखोंसे देखे न कुत्ता भोंके

१८६—आंख्यां मींच'र अंधारो करै जकैरो कोइ कांई करै ?

आँखें मूँदकर जो अँधेरा कर लेता है उसका कोई क्या (उपाय) करे ।

जो जानबूझकर बातको टाले उसका कोई उपाय नहीं हो सकता ।

१८७—आंख्यां मींचीं'र अंधारो हुयो

आँखें मूँदी और अँधेरा हुआ

(१) दमरेखा हटी कि काम चौपट हुआ

(२) मरनेके बाद कुछ नहीं ।

(३) मरनेके बाद काम बिगड़ गया ।

१८८—आंख्यांको आंधो, नांव नैणसुख

आँखोंका अन्धा और नाम नयनसुख (जिसको आँखोंका सुख हो) ।

जब नामके अनुसार गुण न हों ।

१८९—आंगळी पकड़तां पूंचो पकड़ै

अंगुली पकड़ते पहुँचा पकड़ता है

थोड़ा-सा सहारा मिलते ही गले पड़ जाता है

थोड़ा-सा सिलसिला जमते ही पूरा काम बना लेता है

१९०—आंगळी पकड़'र पूंचो पकड़णो

उँगली पकड़कर फिर पहुँचा पकड़ना चाहिए ।

धीरे-धीरे कामका सिलसिला जमाना चाहिए ;

किसीसे मतलब निकालना हो तो उसे धीरे-धीरे वशमें करना चाहिए ।

१९१—आंठी-टूंटी गवांरी रोटी

आड़ी-टेढ़ी रोटी है पर गेहूं की है

१९२—आंधोंमें काणों राव

अन्धोंमें काना ही राजा

गुणहीन मनुष्योंमें थोड़ेसे गुणवाला ही बड़ा समझा जाता है ।

१६३—आंधांरी माख्यां राम ही उडावै

अन्धोंकी मक्खियां राम ही उड़ाते हैं

निःसहाय व्यक्तिकी सहायता भगवान ही करते हैं ।

१६४—आंधी ना देखै पितरांरा मूँढा

अन्धी पितरोंका मुँह नहीं देख पाती ।

ऐसी जगह ले जाना जहां अपना कोई परिचित न हो ।

१६५—आंधी पछै मेह आवै[1]

आंधीके पीछे वर्षा आती है ।

(१) आंधीके साथ वर्षा आती है ।

(२) कन्याके बाद पुत्र होता है ।

१६६—आंधी रांड मेहांरी पाली रेवै

आंधी रांड वर्षाकी बरजी रहती है (राजस्थानमें आंधियां बड़े जोरसे चलती है और घटों चलती रहती हैं, पीछे मेह प्रायः आता है और मेहके आनेपर ही वे दबती है)

(१) प्रकृति-निरीक्षणका अनुभव

(२) दुष्ट व्यक्ति सभीकी बात नहीं सुनते, जो उनमे जबर्दस्त होता है उसीके बरजनेपर बुरे कामसे विरत होते है ।

१६७ –आंधी साथै मेह आया ही करै

आंधीके साथ मेह आया ही करता है

(ऊपर कहावत नं० १६५ देखो)

१६८—आंधी पीसै कुत्ता खाय

अन्धी पीसती है और कुत्ते खाते हैं

(१) जहां अन्धाधुन्धी चलती हो, जहा अन्धेरखाता हो

---

१ आंधी सागै मेह आवै

(२) जब कोई व्यक्ति अपने काम या उपार्जित धन या सम्पत्तिकी ठीक ठीक व्यवस्था न करे और दूसरे लोग उसको उड़ावें।

१९९—आंधै ने आंधो नहीं कैंणो

अन्धेको अन्धा नहीं कहना (सूरदास कहना)

अन्धा कहनेसे उसे बुरा कष्ट होता है।

२००—आंधीमें मोर चालै क्यूं किण्यां चालै है

आंधीमें मोर चलता है वसे कैसे चलता है।

२०१—आंधै आगे रोवै, नैण गमावै

अन्धेके आगे रोता है वह अपनी ही आंखोंकी हानि करता है।

(अन्धा आंसुओंको देख तो सकता नहीं फिर रोनेसे कैसे पिघलेगा)।

(१) जो सुने नहीं उससे शिकायत करना।

(२) जो समझे नहीं उसको अपना गुण दिखाना

मि —(१) अन्धेके आगे रोवै, अपने दीदे खावे

(२) Ye may cry your eyes out ere ye melt the heart of a wheel barrow

२०२—आंधै आगै रोवो, भलां ही नैण गमावो

अन्धेके आगे रोवो चाहे आंखें गँवावो

(ऊपरवाली कहावत देखो)

२०३—आंधै ने काईं चाईजै ? दो आंख्यां

अन्धेको क्या चाहिए ? दो आंखें

परमवांछित वस्तु की प्राप्तिपर।

२०४—आंधैरो तन्दूरो रामदेवजी बजावै

अन्धेका तमूरा रामदेवजी बजाते हैं।

निराश्रयकी सहायता भगवान करते हैं।

नोट—रामदेवजी अेक सिद्ध पुरुष हो गये है। वे अवतारकी भांति पूजे जाते है

२०५—आंधो जाणै आंधैरी वलाय जाणै

अन्धा जाने, अन्धेकी बला जाने

. . . . .

२०६—आंधो नॅतै, दोय जिमावै

जो अन्धेको न्यौता देता है उसे दोको भोजन कराना पड़ता है (अेक अन्धेको, दूसरे जो अन्धेको लेकर आता है उसको।

व्यर्थ की परेशानी मोल लेने वाले पर।

२०७—आंधो बांटै सीरणी घर-घररांनै देय

अन्धा सीरनी (देवताका प्रसाद) बाटता है तो घरके आदमियोंको ही देता है।

स्वार्थीके लिये, जो सब चीजें अपने ही आदमियोंको दे।

२०८—आंरी उडायोडी चिड़या रूँखां पर ही को बैठै नी

इनकी उडायी हुई चिड़िया पेड़ों पर ही नहीं बैठती, (आकाशमें ही उड़ती रहती है, या उनमें पेड़ों पर बैठनेकी सामर्थ्य नहीं क्योंकि असली नहीं होती) इनकी बड़ी बडी बातें कभी पूरी नहीं होतीं, ये कोरी बड़ी बडी बातें बनाते हैं उन्हें पूरी नहीं करते, अत इनके कथनका भरोसा मत करो।

२०९—इक लख पूत, सवा लख नाती
ज्यों रावण घर दिया न वाती

जिसके अेक लाख पुत्र और सवा लाख नाती थे उस रावणके घर दिया-बत्ती करनेवाला नहीं रहा।

(१) अन्यायीका वंश बडा होनेपर भी नष्ट हो जाता है।

(२) भाग्यकी महिमा बड़ी है।

२१०—इग्यारसरै घरे बारस पावणी ।

एकादशीके घर द्वादशी पाहुनी ।

एकादशीके दिन एक वक्त भोजन करनेके बहाने सब तरमाल उड़ाना ।

व्रतादिके बहाने माल उड़ानेवालोंके प्रति ।

२११—इणगी कूओ उणगी खाड़, गत कठै ही कोनी ।

इधर कुआ उधर खाड़ गति कहीं भी नहीं ।

दोनों ओर विपत्ति या हानि ।

मि —(१) To be put on the horns of a dilemma

(2) Between scylla and charybdis

२१२—इणी चूकी, धार भागी ।

अनी चूकी, धार टूटी ।

ध्यान हटा कि हानि हुई ।

२१३—इता बरस दिल्लीमें रह'र भाड़ ही झूँकी ।

इतने वर्ष दिल्लीमें रहकर भाड़ ही झोंकी ।

अच्छे स्थानमें रहकर कोई काम नहीं उठाया ।

२१४—इयां तिलांमें तेल कठै

इन तिलोंमें तेल कहां ?

(१) जहां से कुछ मिलनेकी आशा न हो ।

(२) कंजूसके लिये ।

२१५—इयांमें रांड नहीं जिण्या जिका ही चोखा है ।

इनमें जिन्हें रांडने नहीं जना (जो पैदा नहीं हुए) वे ही अच्छे हैं ।

सभी दुष्ट हैं ।

२१६—इयै कान सुणी दियै कान काढ़ी ।

इस कानसे सुनी उस कानसे निकाली ।

सुनी हुई बातपर ध्यान नहीं दिया ।

२१७—इयै पार कै परलै पार।

इस पार या उस पार।

अत्यन्त जोखिमके कार्य करनेमें महान हानि व महान लाभ दोनों ही हो सकते हैं।

२१८—इयै वातनै धूड़-धोवा।

इस बातको धोवे भरकर धूल (फेंको)।

इस बातको छोडो।

२१९—इयै रामसूँ मरै कोयनी।

इस रामसे नहीं मरता।

अशक्त अथवा अवाछित व्यक्तिके लिअे।

२२०—इसकरी मारी कुत्ती कादैमे लुटै।

इश्ककी मारी कुत्तिया कीचड़में लोटती है।

प्रमके खातिर हानि उठाना।

२२१—इसकरो मारियो फिरै ठिठकारियो।

इश्कका मारा, मारा-मारा फिरता है। (ठिठकारियो—हुस्त्-हुस्त् किया जाता हुआ)

इश्कका पागल गलियोंमें धक्के खाता फिरता है।

२२२—इसा कोई बान[1] बिगड़ै है।

ऐसे कौन मगल कार्य बिगड़ते हैं।

(१) ऐसी कौनसी भारी हानि हो रही है कि उसकी आवश्यकता हो।

२२३—इसा चूतिया सिकारपुरमे लाधसी।

अैसे चूतिये शिकारपुरमें मिलेंगे (मैं वैसा नहीं हूँ)।

शिकारपुर मूर्खोंके लिये प्रसिद्ध है।

---

१ व्याव, जान, मगल कार्य।

२३२—ईस जिसा पाया रांड जिसा जाया।

जसी (पलगकी) पटिया वैसे उसके पाये, और जसी स्त्री वैसे उसके पुत्र

माता पिताके अनुरूप सतान होती है।

मि०—Like fathor, like son, like tree, like fruit

२३३—ईं हाथ दे ऊं हाथ ले।

इस हाथसे दे उस हाथसे ले।

जैसा करता है वैसा फल तुरत मिलता है।

२३४—ईं आंगळीरै आ आंगळी नेडी रहसी।

इस उँगलीके यह उँगली नजदीक रहेगी।

पराये पराये ही रहेंगे और घरवाले घरवाले ही रहेंगे।

२३५—उछलपाती थारी हैं।

लाभवाला हिस्सा तुम्हारा है।

२३६—उछाल भाठो करममे क्यो लेवणो ?

स्वय पत्थर उछालकर उसे अपने माथे क्यों लेना ?

स्वय अपनी ओरसे आफत सिरपर नहीं लेना चाहिओ।

२३७—उठ वींद फेरा ले, हाय राम मौत दे।

उठ, दूल्हे फेरे ले, तो उत्तर देता है—हाय राम! मौत दे।

(फेरे लेनेके कष्टसे मौत अच्छी समझता है—सब तय्यारी लोगोने कर दी केवल फेरे लेना बाकी रहा पर आलसी दूल्हा यह भी आप नहीं करना चाहता)

मह। आलसी लिये।

मिलाओ—सिज़देसे गर बिहिश्त मिले, दूर कीजिये।

दोज़ख ही सही, सरका झुकाना नहीं अच्छा।

२३८—उठी जवानी मझा ढीला।

उठती जवानीमें कमर ढीली।

२४५—उधार घररी हार ।

उधार देना घरकी हार है ।

उधार देना बुरा है ।

२४६ —उधार दियो'र गिरायक गमायो ।

उधार दिया और ग्राहक गँवाया ।

क्योंकि तगादेके डरसे वह ग्राहक फिर उस दुकानकी ओर नहीं आता ।

२४७—उधार दीजै दुसमण कीजै ।

उधार दीजिये और दुश्मन कीजिये ।

उधार लेनेवाला बराबर चुका नहीं सकता अत' उससे लड़ाई हो हो जाती है ।

२४८—उधार देवणो लडाई मोल लेवणी है

उधार देना लड़ाई मोल लेना है ।

[ऊपरवाली कहावत देखो]

२४९—उधार-पुधार घरे सिधार

उधार-पुधार मांगते हैं तो अपने घर जा

उधार नहीं देना चाहिये ।

२५०—उलटो चोर कोटवाळनै डंडै

उलटो चोर कोतवालको दड देता है ।

अपराधी होकर भी दूसरोंको फटकारना ।

मि०—उलटा चोर कोतवालको डांटना है ।

२५१—ऊँतावळांरी देवळ्यां हुवै, धीरांरा गांव वसै

जल्दी करनेवालोंके पीछे देहरियां बनती हैं, धैर्य रखनेवालोंके पीछे गांव बसते हैं (देवळी—पत्थरका स्मारक जिसपर मूर्त्ति बनी होती है)

जल्दी करनेसे काम अधूरा होता है या ठीक नहीं होता, धीरजसे काम अच्छा बनता है और स्थायी रहता है ।

२५२—ऊँतावळा सो बावळा

जल्दबाज बावला होता है।

२५३—ऊँतावळा सो बावळा, धीरा सो गंभीर

जल्दीमें किया काम पागलपन जैसा होता है, धीरजका काम स्थायी रहता है। जल्दबाजी की निंदा और धैर्यकी प्रशंसा।

मि —(१) A hasty man never wants woe (2) Haste makes waste.

२५४—ऊँतावळो सौ बार पाछो आवै

जल्दबाज सौ बार वापिस आता है (जल्दीके मारे प्रत्येक बार कोई-न-कोई काम रह जाता है या कोई-न-कोई चीज भूल जाता है)।

जल्दबाजीकी निंदा।

मि —The more haste th worse speed

२५५—ऊकरड़ी पर किस्यो आँवोंको हुवैनी

[देखो ऊपर कहावत न १२ अकूरड़ीपर इ]।

२५६—ऊकरड़ीपर सूतै महलाँरा सपना आवै

[देखो ऊपर कहावत न १५ अकूरड़ीपर इ]।

२५७—ऊकरड़ी बधतां कांइ बार लागै

[देखो ऊपर कहावत न १६ अकूरड़ी इ]।

२५८—ऊखळमें थोड़ो ही डरणो है

ऊखलमें थोड़े ही डरना है।

मगुन जल्दो नहीं है।

२५९—ऊगतां ही को तप्यो नी जको आथमतां कांइ तपसी ?

उगते ही नहीं तपा वह अस्त होते क्या तपेगा।

जो बचपनमें ही प्रतापी नहीं हुआ वह बुढ़ापेमें क्या होगा।

जो आरंभमें ही बड़ा या अच्छा नहीं हुआ वह बादमें क्या होगा।

२६०—ऊगसी जको आथमसी

उगेगा वह अस्त होगा।

उन्नतिके बाद अवनति आती ही है।

२६१—ऊगा हूर भागा भूर

२६२—ऊगो 'र पूगो

उदय हुआ और अस्तको पहुँचा।

शीतकालके दिनके लिये।

२६३—ऊजड़ गाँवमें अॅरंडियो रूँख

ऊजड़ गाँवमें अरंड ही पेड़ गिना जाता है।

विशेष योग्यतावाले व्यक्तियोंके अभावमें थोड़ी योग्यतावाले भी आदर पाते हैं।

मि०—निरस्तपादपे देशे अेरंडोऽपि द्रुमायते।

२६४—ऊगतो सूरज तपै

उगता हुआ सूर्य तपता है।

बचपनमें जो प्रतिभा दिखाते हैं वही प्रतिभावान् है।

२६५—ऊजलो-ऊजलो ही दूधको हुवैनी

उजला-उजला सभी दूध नहीं होता।

ऊपरसे अच्छे दिखाई देनेवाले सभी पदार्थ वास्तवमें अच्छे हो यह बात नहीं होती।

मि०—Everything that jutes is not gold

२६६—ऊधोका लेणा न माधोका देणा

स्वाधीन मनुष्य जिसे किसीका लेना-देना नहीं।

२६७—ऊधोका लेणा न माधोका देणा मगन रहणा

किसीसे कोई लेनदेन या व्यवहार नहीं रखनेवाला बेपरवाह और सुखी रहता है।

२६८—ऊपर माळा, मांय कुचाळा

२६९—ऊपर (हाथमें) माळा, भीतर कुचाळी

ऊपरसे सज्जन भीतर हृदयमें दुष्ट।

२७०—ऊभी खेजड़ी[1]में हळ थोड़ा ही घड़ै

खड़े हुए खेजड़ों (की लकड़ी) में हल थोड़े ही बनाये जा सकते हैं (पहले उन्हें काटना होगा)।

जल्दीमें कोई काम नहीं हो सकता।

२७१—ऊभी पगांरी सगाई है

खड़े पैरोंकी सगाई है।

खड़े रहकर सामने काम करवानेसे तुरत हो जाता है नहीं तो हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता।

२७२—ऊभो मूतै सूतो खाय जिणरो दाळद कदे न जाय

जो खड़ा मूतता है और सोता हुआ खाता है उसका दरिद्र कभी नहीं जाता।

अ, खड़े मूतना और सोते-सोते खाना बुरा है।

२७३—ऊखळीमें माथो दियो पछै घावांरी कांई गिणती!

ओखलीमें सिर दिया फिर चोटोंकी क्या गिनती करना!

२७४—ऊखळी में सिर घाल्यो पछै मूसळरो कांई डर?

ओखलीमें सिर डाला पीछे मूसल (की चोटों) का क्या डर!

जब किसी काममें हाथ डाल दिया तो फिर विघ्न बाधा या कष्टोंकी क्या परवाह करना।

---

१ पाठान्तर—रूखड़ा (—वृक्षोंको पहले गिराना पड़ता है)।

२७५—ऊंघतीनें बिछावणो लाधग्यो।

ऊंघती हुईको बिछौना मिल गया।

२७६—ऊँघतीनें मांचो लाध्यो

ऊँघती हुईको पलंग मिल गया।

(१) जो बात चाहते हो वही हो जाना। इच्छित कार्य करते समय अनुकूल साधन मिल जाना।

(२) काम करना नहीं चाहता हो उसे अनुकूल बहाना मिल जाना।

२७७—ऊँचा चढ-चढ देखो घर-घर ओ ही लेखो

ऊँचे चढ़ चढ़कर देखलो घर-घर यही हिसाब मिलेगा।

(१) सब जगह यही हाल है।

(२) सुख-दुख सबको भोगना पड़ता है।

२७८—ऊँट किसी घड बैसे

देखें, ऊँट किस करवट बैठता है?

देखें, आगे चलकर क्या नतीजा होता है या कैसी परिस्थिति खड़ी होती है।

२७९—ऊँट कूदे ही कोनी, बोरा पहली ही कूदण लाग ज्यावे

ऊँट कूदता नहीं, बोरे उसके पहले ही कूदने लगते हैं।

सम्बन्धित व्यक्तियोंकी मौजूदगीमें असम्बन्धित व्यक्तियोंका पचायती करना ठीक नहीं होता।

२८०—ऊँट खुडावै गधो डांभीजे

ऊँट लुड़ाता है, गधा दागा जाता है।

अपराध कोई करे, फल कोई भोगे।

मि०—और करै अपराध कोउ और पाव फल भोग
अति विचित्र भगवन-गति को जग जानै जोग।

२८१—ऊँट कुदावै अर गधेरै डाम देवै
ऊँट कुदाता है तब गधेके दाग देते हैं।
अपराध कोई करे दंड किसीको दिया जाय।
[कमरवाली कहावत देखो]।

२८२—ऊँट चढ़ी गुड़ खाय
ऊँटपर चढ़ी हुई गुड़ खाती है।

२८३—ऊँट चढ़्योनै कुत्तो खाय
(भाग्य बुरा होता है तब) ऊँटपर चढ़े हुएको कुत्ता खा जाता है।
ऊँटपर चढ़े हुए व्यक्ति तक कुत्तेका पहुँचना असम्भव है अतः असंभव बात।
भाग्य खोटा होनेपर असंभव बात भी हो जाती है।
मि०—जा दिन भाग्य प्रतिकूल भये तब ऊँट चढ़ेपर कूकर काटत।

२८४—ऊँट चढ़्योनै दो दीसे—
ऊँट पर चढ़े हुए को दो दिखाई देते हैं।

२८५—ऊँट तो अरड़ांवता ही लदीजै
ऊँट तो अरड़ाते ही लद जाते हैं।
जब मनुष्य काम न करे और उससे जबर्दस्ती करवाना पड़े।

२८६—ऊँटनै गुड़ पाणीसूँ कांई हुवै ?
ऊँटको गुड़-पानीसे क्या हो !
अधिक खानेवालेके लिए।

२८७—ऊँटनै ऊठतां ही डाग नहीं घालणो
ऊँटको उठते ही दाग नहीं लगाना।

किसी कामके आरम्भमें ही अधिक तेजी नहीं दिखाना क्योंकि यह तेजी बरावर नहीं रह सक्ती और बादमें काम ढीला पड़ने लगता है।

२८८—ऊँट फिटकड़ी दियाँ ही अरळावै, गुड़ दियाँ ही अरळावे

ऊँट फिटकरी देते भी अरलाता है और गुड़ देते भी अरलाता है।

दुख और सुख दोनों ही में असंतुष्ट रहनेवालेके लिये।

२८९—ऊँट मरे जद मारवड़ सामो जोवे

ऊँट मरता है तब मारवाड़की ओर देखता है।

क्योंकि वह उसकी मातृ-भूमि है।

२९०—ऊँट रे ऊँट तेरी कोणसी कल सीधी ?

अरे ऊँट, तेरी कौनसी कल सीधी है (ऊँटकी सब कलें बाँकी होती हैं)।

सब प्रकार अवगुणी मनुष्यके लिये।

२९१—ऊँटरे पेटमे जीररो बधार

ऊँटके पेटमे जीरेका बघार।

बहुत खानेवालेको थोड़ी चीज देना।

२९२—ऊँटरो पाद जमीरो न आसमानरो

ऊँटका पाद न जमीनका न असमानका।

(१) जो किसीके कामका न हो उसके लिये।

(२) निकम्मे आदमीके अधूरे कामके लिये।

२९३—ऊँट लदणसूँ गयो तो कांई पदणसूँ ही गयो ?

ऊँट लदनेसे गया तो क्या पादनेसे गया ?

पूर्ण अधिकार छिन गया तो क्या साधारण अधिका भी न रह गया ?

मि०— चोर चोरी सु गयो हेरे फेरे सु तो को गयो नी

२९४—ऊँट लाँबो तो पूँछ छोटी

ऊँट लंबा पूँछ छोटी।

(१) सब बातें मनचाही नहीं होतीं।

(२) कुछ कुछ कमी रह गयी।

२९५—ऊँटारै कण छपरा छाया हा ?

ऊँटोंके किसने छप्पर छाये थे ? (वे तो खुलेमें ही रात काटते हैं)।

वस्तुके बिना काम चलानेवालेके लिए।

२९६—ऊँतावळा सो बावळा

२९७—अेक आंखमें किसी दाखै किसो मीच

अेक आँख होनेपर कौन-सी खोले और कौन-सी बंद रखे।

अेक ही सन्तान हो तो किससे प्रेम और किससे द्वेष रखे ?

२९८—अेक आंखको काँई मींचणो काँई उघाड़नो ?

अेक आँखका क्या मींचना क्या खोलना ?

(ऊपरवाली कहावत देखो)

२९९—अेक काचररो बीज सौ मण दूध बिगाड़ै

अेक काचरका बीज सौ मन दूध बिगाड़ देता है।

(१) अेक ही नीच बहुत बिगाड़ कर सकता है।

(२) थोड़ी-सी चीजसे बहुत हानि हो सकती है।

मि०—One ill weed mars a whol pot of pottage

३००—अेक घड़ीरी मस्ताई[1], दिन भररी बादशाही

अेक घड़ीकी मस्ताई, दिन भरकी बादशाही।

थोड़ी-सी निश्चिन्तताको बहुत समझके जिसे आराम हो जाता है।

३०१—अेक घर तो डाकण ही टाळै

अेक घर तो डाकिनी भी टालती है।

(१) नीच-से-नीच व्यक्तिके भी कोई अपना होता है जिसको वह हानि नहीं पहुँचाता। (२) नीच-से-नीच भी सबका नाश नहीं करता।

---

१ मस्ताई—निश्चिंताई (निश्चिन्तता)।

३०२—अेक चँदरमा नव लख तारा, अेक सती नै नग्गर सारा

(१) अेक चद्रमा अेक ओर है और नौ लाख तारे अेक ओर हैं। इसी प्रकार अेक सती अेक ओर है और सारा नगर अेक ओर है। (अर्थात् दोनों बराबर है)

चद्रमा और सतीकी महिमा।

(२) नौ लाख तारोंमें अेक ही चद्रमा होता है और सारे नगरमें अेक ही सती मिलती है।

अनेकोंमें कोई अेक ही महात्मा या प्रतापी होता है।

३०३—अेक तवैरी रोटी, कांई छोटी कांई मोटी

अेक ही तवेकी रोटियोंमें क्या तो छोटी और क्या मोटी (सब एक-सी होती हैं)।

(१) अेक ही पदार्थके भिन्न-भिन्न भाग सब अेक जैसे होते हैं।

(२) अेक ही कुल या समूहके लोग, बराबर होते है।

(३) अेक माँ की संतान अेक-से स्वभाव वाली होती है।

(४) समान घरों के सब लोग मेरे लिअे बराबर है।

(५) जब कोई अेक ही कुलके विभिन्न लोगों या अेक ही पदार्थके विभिन्न भागोंमें अेक की निंदा और दूसरेको प्रशसा करे तब कही जाती है।

३०४—अेक दिन पढ'र किसो पंडित हु ज्यासी

अेक दिन पढ़कर कौन-सा पडित हो जायगा।

(१) केवल अेक दिन पढ़कर ही पडित नहीं बना जाता उसके लिए लम्बे समय तक अभ्यासकी आवश्यकता होती है।

(२) अेक दिन नहीं भी पढ़ोगे तो कोई हानि नहीं होगी, अेक दिन यह काम नहीं भी करोगे तो कुछ बिगड़ेगा नहीं।

३०५—अेक दिन पावणो, दूजै दिन अणखावणो

अेक दिन पाहुना, दूसरे दिन अनखावना (लगता है) पाहुना अेकाध

दिन ही अच्छा लगता है, अधिक समय तक रहे तो बुरा मालूम होने लगता है। किसीका अतिथि अधिक दिन नहीं रहना चाहिये।

मि —A Constant guest is never welcome

१०६ —अेक दिन पियो र अेक दिन तिसो, ग्यांभरो दिन किसो ?

अेक दिन पानी पियाता हूं और दिन प्यासा रहता है फिर ग्यारसी निराहार दिन कौन सा नियत करूं (किस दिन विराम करूं)

(१) जिसको कामसे अवकाश नहीं मिलता उसका कथन।

(२) जो अवकाश न मिलनेका बहाना करता है उसके लिये।

१०७—अेक नकारो सौ दुख हरे

अेक इनकार सौ दुख दूर करता है।

अेक बार इनकार कर देनेसे सब झगड़ा मिट जाते हैं, फिर लोग तंग नहीं करते। जो स्पष्टतया निश्चित उत्तर नहीं देता उसे लोग बारबार सताते हैं।

१०८—अेक नन्नो सौ दुख हरे

[ऊपरवाली कहावत देखो]

१०९—अेक नारी ब्रह्मचारी

अेक पत्नीव्रत ब्रह्मचर्य-पालनके समान ही है।

११०—अेक पंथ दो काज

(१) अेक कामको करते समय दूसरा काम भी साथ ही बन जाना।

(२) अेक उपायसे दो काम बनना।

मि॰—(१) To kill two birds with one stone.

(२) To catch two pigeons with one bean.

इसका निकास इस दोहेसे है :—

चलो सखी वहां जाइये, जहां बसे ब्रजराज।

गोरस बेचन हरि मिलें, एक पंथ दो काज॥

३११—अेक बँदरिया रूस ज्याय तो किसो बॅदरावल खाली हो जाय

अेक बदरिया रूठ जाय तो कौनसा वृदावन खाली हो जाता है।

अेक व्यक्ति साथ न दे तो कौनसा काम नहीं बनता ?

३१२—अेक बार कथा सुणी ग्यान आयो सरड, बारबार कथा सुणै, कान है क दरड ?

अेक बार कथा सुननेसे ही ज्ञान झटपट आ जाता है।

बारबार कथा सुने और भी ज्ञान न आवे तो सुननेवालेके कान हैं या खदक ?

ज्ञान आता है तो अेक बार सुननेसे ही आ जाता है।

कोई शिक्षा हृदयमें बैठती है तो अेकबार सुनकर ही बैठ जाती है-बारबार कहने-सुननेसे क्या लाभ ?

३१३—अेक मण अकल, सौ मन इलम

अेक मन बुद्धि सौ मन विद्या (के बराबर है)।

विद्याकी अपेक्षा बुद्धि बड़ी है।

३१४—अेक मसखरी सौ गाल

(१) अेक मसखरी सौ गालियोंके बराबर है।

(२) अेक मसखरी करनेवालेको सौ गालियां खानी पड़ती है।

३१५—अेक माछली सारो तलाव गिंदो करै

अेक गदी मछली सारा तालाब गदा करती है।

(१) अेक नीच सबका बिगाड़ करता है।

(२) अेक नीचकी सगति सबको बिगाड़ देती है।

(३) घरका या साथका अेक भी आदमी बदनाम हो तो सबको बदनामी होती है।

३१६—ओक म्याणमें दो तरवार को समावै नी
ओक म्यानमें दो तलवारें नहीं रह सकती।
ओक ही जगह दोका अधिकार नहीं रह सकता।

३१७—ओक रती बिन पाव रती
ओक रतीके बिना मनुष्य पाव रतीका (कौड़ीका) है।
(१) ओक प्रतिष्ठा बिना मनुष्य किसी कामका नहीं (२) ओक प्रार्थ
अथवा शक्ति व्यक्तिके अभावमें सब घर शोभा-हीन लगता है।

३१८—ओकरी दवा दो
(देखो नीचे कहावत नं ३२२)

३१९—ओकरै पापसूं नाव डूबै
ओकके पापसे नाव डूबती है।
ओक बुरा सब किया-कराया नाश कर देता है।

३२०—ओकरो इलाज दो

३२१—ओकरो दारू दो
ओककी दवा दो।
(देखो नीचे कहावत नं ३२२)

३२२—ओकरो इलाज दो, दोयरो इलाज च्यार
ओकका इलाज दो दोका इलाज चार।
कोई व्यक्ति कितना ही मजबूत क्यों न हो अकेला दो की बराबरी नहीं
कर सकता और इस प्रकार दो व्यक्ति चारकी बराबरी नहीं कर सकते।

३२३—ओक बार जोगी दो बार भोगी, तीन बार रोगी।
शौचको कहा है।

३२४—ओक बिरती महा बैर
ओक पेशावालोंमें परस्पर बड़ा विरोध होता है।
मि०—बामण कुत्ता बाणिया आत देख घुर्रांय।

३२५—अेक सूँठरै गांठियासूँ पंसारीको हुईजै नी

अेक सूँठके टुकड़ेसे पसारी नहीं वना जा सकना।

थोड़ेसे गुणसे वड़ा नहीं हुआ जा सकता।

३२६—अेकसूँ दो भला

अेकसे दो अच्छे।

(१) अेक आदमीकी अपेक्षा दो आदमी कामको अच्छी तरह कर सकते हैं।

(२) यात्रामे साथ होना अच्छा है।

३२७—अेकसूँ नहीं दोनूँ आंख्यांसूँ देखणो

अेकसे नहीं दोनों आँखोंसे देखना चाहिअे।

समान वर्त्ताव रखना चाहिअे।

३२८—अेक हाथसूँ ताली को वाजै नी

अेक हाथसे ताली नहीं वजती।

(१) कोई काम अकेले नहीं होता।

(२) लड़ाई-झगडा अेक ओरसे नहीं होता।

(३) अक ओरसे अच्छा व्यवहार किये जाने पर ही दूसरी ओरसे अच्छा व्यवहार किया जा सकता है।

अेक तरफा कोई वात नहीं वनती।

३२९—अेकै घरमे दो मता, कुशल कांयकूँ होय ?

३३०—अेकै घरमे सात मता, कुशल कांयसूँ होय ?

अेक घरमें अनेक मत तो कुशल कैसे हो ?

घरके सब लोग अेक मतसे न चलें तो घर नहीं चल सकता।

३३१—अेथ वैठा ओथ मारै

यहाँ वैठे वहाँ मारते हैं।

(१) अत्यन्त धूर्त्त के लिअे।

(२) अत्यन्त भोलेके लिअे (परिहास मे)।

कहानी—

अेक राजा बड़े भोले थे, किसी शत्रु से वैर लेना था, मुसाहबोंने कहा आप सामने जाकर युद्ध करेंगे तो मारे जायेंगे, तब फरमाया अेक अैसा भाला बनवाओ जिससे यहीं बैठे ही वहां मारें।

३१२—अे मां ! मां ! माखी , कै बेटा कड़ाय दे , मां ! मां ! बोझ है—

बेटा मांसे कहता है कि अरी मां-मां मक्खी आ बैठी। मां कहती है कि मक्खी आ बैठी तो उड़ा दे। बेटा फिर कहता है—मां-मां वे तो बोझ है—मैं कैसे उड़ाऊं।

आलसीके लिये।

ॐ

३३३—अँनै कहो भावँ कूवैमें नाखो

इसे कहो चाहे कुँअेंमे डालो।

(१) कहना व्यर्थ है।

(२) इसे कोई बात कहना कुँअेंमें डालनेके बराबर है यानी यह कही हुई बातको गुप्त रखता है किसीसे नहीं कहता।

इसे गुप्त भेद बेखटके कह सकते हैं।

३३४—अँरी मा अँनै ही जिण्यो है

इसकी माँने इसे ही जना है।

इसके बराबर दूसरा कोई नहीं।

३३५—अँरी माँ ई सवा सेर सूँठ खाई है

इसीकी माँने सवा सेर सोंठ खाया है।

यही सच्चा वीर या साहसी है।

३३६—अै ही घोडा' र अ ही मैदान

यही घोड़े और यही मैदान (उतरें और करतब दिखावें)

कार्य क्षेत्रमें उतरकर कुछ करतब दिखाओ।

३३७—ओछा बोल ठाकुरजीनै छाजै

अभिमान भरी अथवा अपमान भारी बात प्रभुको अच्छी नहीं लगती है

३३८—ओछी गरदन दगेवाज

छोटी गरदनवाला दगावाज होता है।

३३९—ओछी पूँजी धणीनै खाय

थोड़ी पूँजी मालिकको खाती है

थोड़ी पूँजीसे दुकानदारी या व्यापारमें हानि होती है।

औ

३४५—और वात खोटी, सिरे दाल-रोटी

और बात खोटी, सबसे बड़ी दाल-रोटी

पेट भरना सबसे मुख्य है।

३४६—और रँग कचा, मुस्की रँग पक्का

और रग कच्चे, मुस्की रग पक्का

(१) मुस्की रगकी प्रशसा।

(२) पक्की लगनवाले व्यक्तिके लिअे

३४७—और सांग सोरा, सतीआलो सांग दोरो

दूसरे स्वाँग सब आसान, सतीवाला स्वाँग कठिन

रुपयोंका काम रुपयोंसे ही निकलता है, बातोंसे नहीं।

३४८—औसर चूकी डूमणी गावै ताल-बेताल

अवसर चुकी हुई मीरासिन ताल-बेताल गाती है

अवसर निकल जानेके बाद काम ठीक-ठीक उत्साहसे नहीं होता।

३४९—औसाण आवै जको ही हथियार

वक्तपर याद आवे वही हथियार है।

मि०—हाथे पड़े सो हथियार

३५०—कचरसूँ कचरो वधै

कूड़ेसे कूड़ा बढ़ता है

सफाई रखना चाहिअे।

३५१—कठैई जावो पईसाँरी खीर है

कहीं जाओ, पैसोंकी खीर है

सभी जगह पैसेकी जरूरत पड़ती है।

३५६—कदे गाडी चीलांपर, तो कदे खरबूजोंमे ही सही

कमी गाडी रास्तेपर तो कभी खरबूजोंमे ही सही

३६०—कदे गाडी नावपर तो कदे नाव गाडीपर

कभी गाड़ी नाव पर तो कभी नाव गाड़ीपर

(१) जब विभिन्न परिस्थितियोंके व्यक्ति परस्पर सहायता करें

(२) दो भिन्न परिस्थितियोंके व्यक्तियोका परस्पर भाग्य परिवर्तन

(३) कभी अेकका दोष तो कभी दूसरे का ।

मि०—ऊनर भीखा म्हारी वारी ।

३६१—कदे घी घणा, कदे मुट्ठी चिणा

कभी खूब घी, और कभी केवल मुट्ठीभर चने

(१) ससारमें सभी दिन अेक-से नहीं होते ।

(२) जो कुछ ईश्वर दे उसीसे सन्तोष करना चाहिअे ।

(३) विरक्त साधुके लिअे ।

३६२—कदे दिन वड़ा कदे रात बडी

कभी दिन बड़े और कभी रात बड़ी

(१) संसारकी परिवर्तनशील दशापर, समय सदा अेक-सा नहीं रहता ।

(२) कभी अेकका दाँव, कभी दूसरेका ।

३६३—कदे न गाँहू रण चढ्या, कदे न भानी भीड

कायर कभी युद्धके लिअे नहीं चढ़ा और न कभी किसीका दुःख दूर किया

(२) कायर और पोच आदिसे सहायता की आशा नहीं रखनी चाहिअे ।

(२) दान न मिलनेपर कजूस यजमानके लिअे भाट आदि याचक जातियोंके लोगोंका कथन ।

३६४—करमें कोडी कोनी, नाँव किरोडीमल

हाथमें कौड़ी नहीं नाम करोड़ीमल

जब नामके अनुसार गुण न हो।

मि०—(१) आँख्याँरा आँधा, नाँव नैणसुख।

(२) पेटभरै बाजरो ही कोनी नाँव सिवमारी।

(३) बाल्योरो लाठो ही कोनी नाँव गुलाबसिंघ।

३६५—कपड़ा सपेत'र घोड़ा कमेत

कपड़ा सफेद और घोड़ा कमैती रंगका उत्तम।

३६६—कपड़ा पहरै तीन वार, मंगळ बुध अर थावर वार (पाठांतर शुक्र)

मंगल, बुध और शनिवारको कपड़ा पहनना चाहिये।

३६७—कपड़ा फाटै गरीबी आवी जूती फाटी चाल गमावी

कपड़े फटे और गरीबी आवी जूती फटी और चाल बिगड़ी।

३६८—कपड़ो कवै तू म्हारी इज्जत राख, हूं थारी राखूं

कपड़ा कहता है कि तुम मेरी इज्जत रखो मैं तुम्हारी रखूंगा

कपड़ोंको बड़े सावधानीसे रखना चाहिये क्योंकि ऐसा करनेसे कपड़े अच्छे रहते हैं और अच्छे कपड़ोंसे आदमीकी इज्जत होती है।

३६९—कपूत पूत दापनै काम आवै

कपूत बेटा बापकी अरथीको कंधा देनेके काममें आता है (हिन्दुओंमें मृत्यु पर पुत्र तथा अन्य निकट सम्बन्धी अरथीको कंधोंपर उठाकर ले जाते हैं)

(१) कपूत और किसी कामका नहीं होता।

(२) बेटा कपूत हो तो भी कंधा देनेके काम तो आता है।

(३) नालायक आदमी भी कभी-न-कभी कुछ-न-कुछ काम आता ही है।

३७०—कपूताळा पोत दिखा दिया

कपूतके लक्षण दिखा दिये

अपनी नीचता प्रकट कर दी।

३७१—कबूतरनै कूवो ही दीखै (पाठान्तर सूझै)

कबूतरको कुँआ ही दिखाई देता है।

(१) टेव पडजानेपर फिर वैसा करना ही अनिवार्य हो जाता है।

(२) टेव पड जानेपर फिर मनुष्य वही काम करता है

३७२—कमजोर गुस्सा ज्यादा, मार खाणैका इरादा

कमजोरको अधिक गुस्सा आता है और परिणामत: हानि उठाता है।

३७३—कमजोर गुस्सो घणो

कमजोरको बहुत क्रोध आता है

कमजोर बात-बातमें क्रोध करता है

३७४—कमजोररी जोरू सगळारी भाभी

कमजोरकी स्त्री सबकी भाभी

(१) कमजोरकी स्त्रीसे सब मज़ाक करते हैं क्योंकि उससे कोई नहीं डरता

(२) कमजोरको सब सताते हैं।

मि०—कमजोरकी जोरू सबकी सरहज

३७५—कमाऊ पूत आवै डरतो, अणकमाऊ आवै लडतो

कमाऊ बेटा डरता-डरता घरमें आता है और न कमानेवाला लड़ता-लड़ता आता है।

कमाऊको घरकी चिंता बनी रहती है कि कहीं पीछेसे कुछ अनिष्ट न हो गया हो और अन-कमाऊको कलहसे ही मतलब होता है।

३७६—कमावै तो वर, नहीं तो आघड़ो मर

कमाता है तो पति है, नहीं तो दूर जाकर मर

स्त्रीको कमाऊ पति ही अच्छा लगता है।

३७७—कमावै तो वर, नहीं जणै माटीरो ही ढल

कमाता है तो पति है, नहीं तो मिट्टीका ढेला है

कमाऊ पति होनेसे ही वास्तवमें अपना पति मानती है, अकमाऊ तो उसकी दृष्टिमें मट्टीके ढेलेकी तरह नगण्य (तुच्छ) होता है।

१७८—कमावै धोतीआळा खा ज्याय टोपीआळा

कमाते हैं धोतीवाले, खा जाते हैं टोपीवाले

हिन्दुस्तानी कमाते हैं और उनका रुपया अंग्रेज ले जाते हैं।

१७९—क्यां कोई कूवेमें पड़सी ?

(दूसरोंके) कहनेसे क्या कुंएमें गिरेगा ?

जो सदा दूसरोंके कहनेके अनुसार चलता है उसके लिये

मि —(१) पाणी पीजो छाणियो करजो मनरो चावियो

(२) सुननी सबकी, करनी मनकी

१८०—क्यां किसो कूवेमें पड़ीजै ?

कहनेसे क्या कुंएमें पड़ा जाता है ?

दूसरेके कहनेके अनुसार नहीं चला जा सकता।

१८१—क्यांसूं कूंभार गधै माथै थोड़ा ही चढ़ै ?

कहनेसे कुम्हार गधे पर थोड़ा ही चढ़ता है।

(यद्यपि वैसे सदा चढ़ता है)

(१) जो काम सदा करता आया है उसे कोई आदमी कहने पर न करे तब

(२) दूसरोंका कहना न माननेवालोंके लिये

मि —कहसी वैद सीठी को देखनो

१८२—करणी आपो-आपरी, कुण बेटा कुण बाप ?

अपनी-अपनी करनी है, कौन तो बेटा है और कौन बाप है।

(१) कोई किसीका बाप या बेटा नहीं सब अपनी-अपनी करनीके अनुसार जन्म लेकर उसका फल भोगते हैं।

(२) सब अपनी करनीका फल भोगते हैं, बेटा या बाप कोई भी उसमें हिस्सा नहीं बटा सकते।

(३) अपनी करनी काम देती है, बेटेकी करनी बापके या बापकी करनी बेटेके काम नहीं आ सकती ।

३८३—करणी जिसी भरणी

जैसी करनी वैसी भरनी

करनीके अनुसार फल भोगना पड़ता है, जैसा करता है वैसा पाता है ।

मि०—(१) बोवे बीज बबूलके आम कहांते होंति ?

(२) जो जस करहि सो तस फल चाखा ।

३८४—करणो मरणो बराबर

करना मरनेके बराबर

(१) कामका करना बड़ा कठिन है ।

(२) जब कोई काम नहीं करता तब उसके लिये कहा जाता है ।

३८५—करता उस्ताद है

करनेवाला उस्ताद है

(१) कामको बराबर करनेसे ही काम सीखा जाता है ।

(२) अभ्यास करनेवाला काममें कुशल हो जाता है ।

३८६—कर भला तो हो भला

भलाई करनेसे भलाई होती है ।

३८७—कर लियो सो काम'अर भज लियो सो राम

जो काम कर लिया व ईश्वरका भजन कर लिया वह अपना है ।

कर्त्तव्यको शीघ्रतासे करनेकी प्रेरणा ।

३८८—करम कारी नहीं लागणदे जद कांई हुवै ?

भाग्य पैबन्द नहीं लगने देता तब क्या हो सकता है ?

भाग्य साथ न दे तो क्या हो सकता है ?

भाग्य भलाई न होने दे तो प्रयत्न व्यर्थ है ।

मि०—भाग्य फलति सर्वत्र न विद्या न पौरुषम्

१८९—करम छिपै न भभूत रमायाँ

राख रमाने पर भी (साधु हो जाने पर भी) कर्म नहीं छिपता

(१) साधु हो जानेपर भी भाग्य पीछा नहीं छोड़ता

(२) साधु हो जानेपर भी भले-बुरे काम करनेकी जो प्रवृत्ति पड़ जाती है वह नहीं छिपती

१९०—करम फूट्योड़ैने भाग-फूट्योड़ो सौ कोसांरी अंथलाड़ आ'र मिळै

कर्म-फूटेके पास भाग-फूटा सौ कोसका चक्कर खाकर भी पहुंच जाता है।

(दोनों बहुत दूर-दूर हों तो भी भाग्यवश आपसमें मिल जायेंगे)

(१) भाग्यहीनके पास भाग्यहीन अपने आप सहजमें ही पहुंच जाता है।

(२) जैसेको तैसा सहजमें ही मिल जाता है।

१९१—करम-रेख ना मिटै, करो कोई लाखूं चतराइ

भाग्यकी रेखा नहीं मिटती चाहे कोई लाखों चतुराई करले।

कितनी ही चतुराई हो भाग्यमें जो लिखा है सो तो होना ही है।

(१) मि०—विधिकर लिखाको मेटन हारा ?

१९२—करम हीण खेती करै, बळध मरै कै काळ पड़ै

भाग्यहीन खेती करता है तो या तो बैल मर जाते हैं या अकाल पड़ जाता है।

भाग्यहीन जिस किसी भी काममें हाथ डालता है उसीमें असफलता मिलती है

१९३—करसी सो भरसी

करेगा सो भरेगा

जो काम करता है वही फल भोगता है।

१९४—करैला सो भुगतैला, खुणैला सो पड़ैला

जो करता है सो भोगता है, जो (दूसरेके लिए खाई) खोदता है वह स्वयं पड़ता है। (ऊपरवाली कहावत देखो)

३६५—करैगा सो पावैगा, वंदा रोटी खावैगा

जो बुरा काम करेगा वही उसका फल भोगेगा, हम तो मौज उड़ावेंगे

(१) जो स्वय बुरा काम नहीं करता उसकी उक्ति

(२) जो दूसरोंसे बुरे काम कराकर उनके बल पर स्वय मौज करता है उसके लिये।

३६६—करै जिसा भुगतै

जैसा करता है वैसा भोगता है

करनीके अनुसार फल मिलता है।

३६७—करै तो डर नहीं करै तो कायका डर ?

जो बुरा काम करता है उसीको दण्ड मिलता है।

जो नहीं करता वह दण्डसे क्यों डरे ?

३६८—करै तो डर, नहीं करै तो डर

क्योंकि कभी-कभी नहीं करने पर भी धोखेसे दण्ड मिल जाता है (अथवा न करने पर भी दुनियां बुराई करने लगती है)

३६९—करै सौ भरै

करै सो भोगै

(देखो ऊपर कहावत नं० ३९३)

४००—करोड दिवाल्या राज करो

करोड़ दिवालियों तक राज्य करें

बहुत दिन जियो और सुखी रहो (आशीर्वाद)

४०१—करो पाप, खाओ धाप

पाप करो और छककर खाओ पापी प्राय सुखी रहता है और धर्मात्माको अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं।

४०२—करो बेटा फाटका, वेचो घररा वाटका

हे बेटे, फाटका करो और (फल-स्वरूप) घरके थाली-लोटे बेच डालो

फाटकेकी निंदा।

४०३—करो सेवा, पावो मेवा

सेवा-कार्यकी प्रशंसा

सेवा धर्मो महान् किसी योगिना मप्यगम्य

४०४—कर्‌यो स काम, भज्यो स राम

किया वही काम और भजा वही राम-भजन

कामको और राम-भजनको तुरन्त कर डालना चाहिये ।

४०५—कर्‌यो स काम पोय्‌यो स मोती

किया सो काम पोया सो मोती

काम कर डाला सो हो गया, नहीं किया सो रह गया कामको तुरन्त कर कर डालना चाहिये ।

४०६—कळकत्तेरो भारो, बाप सूँ बेटो न्यारो

कलकत्ताकी यही ढंग है कि बेटा बापसे भी जुदा रहता है ।

४०७—कळजुग नहीं कर जुग है

यह कलियुग नहीं कर-युग है

कर-युग (हाथोंका युग) इस लिये है कि इस हाथसे जैसा देगा उस हाथसे वैसा पायेगा—जैसा करता है वैसा फल तुरंत मिल जाता है,

पूरी कहावत इस तरह है—

कलियुग नहीं करयुग आहै, इस हाथ दे उस हाथ ले ।

क्या खूब सौदा नकद है, इनको दे और उनको ले ।

४०८—कळसूँ कळ दबै—

कलसे कल दबती है

किसी आदमीसे कोई काम कराना हो तो उसपर जिसका दबाव पड़ता हो उससे दबाव डलवाना चाहिये तभी काम होता है ।

४०९ कळहसूँ कळसारो पाणी जाय परो

कलहसे कलशीका पानी चला जाता है

कलहसे घरका जल तक सूख जाता है अतः यह निन्दनीय है ।

४१०—कळंकरो टीको लागणो ही है

कलकका टीका लगना ही है

अब तो लाचारीसे यह काम करना ही है और फलस्वरूप कलक भी लगेगा ही।

(१) जब लाचारीसे कोई बुरा काम करना पड़े।

(२) अब चाहे अच्छा काम करे या बुरा कलक तो लगेगा ही।

४११—कवित सोभै भाटनै खेती, सोभै जाटनै

कवित्त भाटको शोभा देते हैं, खेती जाटको शोभा देती है

जो जिसका काम हो वह उसीको शोभा देता है।

मि०—(१) विणज किया था जाटने सौका रहग्या तीस

(२) जाको काम वाहीको छाजै

और करै तो डडा वाजै

४१२—कसाईनै गाय बेचै

कसाईको गाय बेचता है

दुष्टके हाथमें सीधे व्यक्तिको सौंप देना

४१३—कसी कवाडा बेच रे बाबा।

धम्मोळी धसकाय दे

हे बाबा! कसी, कवाड़ा, बेच कर भी मेरे लिए 'धम्मोळी' प्रबंध कर ही दे।

टिप्पणी—तीजोंके त्यौहारका राजस्थानमें बड़ा महत्व है। तीजको स्त्रियां व्रत रखती है और चन्द्र दर्शनके बाद फल, सत्तू आदि खाती है। दूज की रातको अनिवार्य रूपसे गृहस्थ बाई-बेटियोंके लिये मिठाई मगवाकर उन्हे देते हैं। यहाँ बेटी बापसे जिद करके कह रही है कि पिताजी! चाहे आपको औजार बेचना पड़े तब भी मेरे लिये मिठाई तो मगानी ही पड़ेगी।

४१४—कहणीसूँ करणी दोरी

कहनेसे करना कठिन है

(नीचेवाली कहावत देखो)

४१५—कहणो सोरो करणो दोरो

कहना आसान करना कठिन

कोई बात कह देना आसान है पर उसके अनुसार कामकर दिखाना बड़ा कठिन होता है।

४१६—कह'र धूड़में नाखणो है

कहकर धूलमें डालना है

(१) जिस व्यक्तिपर कहनेका कुछ असर नहीं होता उसके लिये।

(२) कहना निष्फल है, क्योंकि असर तो होगा नहीं।

४१७—कह बात कटै रात

नींद न आनेपर कोई कहानी या कोई बात सुनने-सुनानेसे ही रात कटती है

(अन्यथा रात बड़ी मालूम होती है)

लोक कथाओं-में परिस्थिति वार्तालापका अनुप्रास

४१८—कह्यो नहीं मानै, बीकेरो काळो मूँडो नीळो पग

जो कहा नहीं मानता, उसका काला मुँह और नीले पैर।

जो कहा नहीं मानता उसके प्रति घृणा-प्रकाशन।

नोट—अक्सर अपराध करनेपर पहले ऐसी प्रथा होती थी, कि अपराधीका काला मुँह और नीले पैर करके गधेपर चढ़ाकर नगरमें घुमाते थे।

४१९—कंगालरो काळजो पोचो (पाठान्तर—काचो)

कंगालका कलेजा पोचा (कच्चा)

गरीबको हिम्मत नहीं होती।

४२०—कुँआरी कन्याने वर घणा (पाठान्तर—ढावर)

कुँआरी कन्याको वर (या बालक) बहुत (मिल जायँगे)

४२१—काकडीरै चोरने मुक्कीरी मार

कककड़ीके चोरको मुक्केकी मार

साधारण अपराधीको साधारण ही दड दिया जाना चाहिअे

४२२—का केईनै कर लेणो का केईरो हो रैवणो

या तो किसीको अपना बना लेना चाहिअे या किसीका बन जाना चाहिअ

नहीं तो इस ससारमें गति नहीं।

४२३—काकैरा जयोडा मिलै जद ही काम देवै

चाचाके जाये हुये जब मिलते है तभी काम देते हैं

कुटुबी सदा काम आते हैं।

४२४—काकरी धी' र खीचडो पर घी

चाचाकी बेटी क्या है खिचडी पर घी

मि०—मामा धी नहीं देगा तो कोण देगा

मुसलमानोंके लिये हास्यमें जिनमें चचाकी बेटीसे विवाह करनेकी प्रथा है।

४२५—काकैरी पियोड़ी भतीजैने ऊगै

चचाकी पी हुई (भग) भतीजेको उगती है।

भग पीनेवालों पर हास्योक्ति

४२६—काको करै भतीजने गांड फाटतो गोठ

गांड़ फटनेपर चाचा भतीजेकी गोठ करता है।

आफत आने पर बड़ा भी छोटेकी खुशामद करता है।

४२७—कागदरी हांडी चूल्हैको चढैनी

कागजकी हँडिया चूल्हेपर नहीं चढती।

धोखेका काम सफल नहीं होता।

४२८—कागद होय तो बांचलूं करम न वाच्यो जाय

कागद हो तो पढ लू पर भाग्य पढ़ा नहीं जा सकता।

मानवका पता नहीं चलता।

मि —स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः।

४०९—काग पढ़े, कुत्ता मुसे

कौवे मिरते हैं और कुत्ते मौकते हैं

दूसरे पर या पापके लिये।

४१०—काग मोती दे नहीं, ने चिड़ी खेतो रे नहीं

कौवा मोती देता नहीं और चिड़िया खेती रहती नहीं।

दोनों ओर हठ।

४११—कागलोंरे कुरासीससूं ऊंट थोड़ा ही मरे

कौवोंकी कुराशीससे कहीं ऊंट मरते हैं।

मि —टेमरी कुराशीष सूं गाय को मरे नी

किसी के बुरा चिन्तन करने से बुरा नहीं होता।

४१२—कागलारे की हुवे तो मुवतां दीसे ही नो

कौवोंके कुछ हो तो मरते समय न दिखायी दे।

जब कोई यह कहना चाहता है कि अमुकके पास कुछ नहीं, कुछ हो तो

मौका पड़ने पर दिखायी न दे तब कही जाती है।

४१३—कागले तीरसूं डरे ज्यूं डरे

जैसे कौवा तीरसे डरता है वैसे डरता है।

बहुत डरता है।

४१४—कागकी नाक लेग्यो।

कौवा नाक ले गया।

निर्लज्ज व्यक्तिके किये को किसीपर असर नहीं होता।

४१५—कागकी हंसरी चाल चाले

कौवा हंसकी चाल चलता है।

अयोग्य व्यक्ति योग्य व्यक्तिकी बराबरी करे तब कही जाती है।

४३६—कागलो हंसरी चाल सीखणनै गयो, आपरी भूलि आयो

कौवा हंसकी चाल चलने गया पर अपनी ही भूल आया।

४३७—काची कली कनेरकी तोडत ही कुँमळाय

कनेरकी कच्ची कली जो तोडते ही कुम्हला जाती है।

सुकुमार अथवा दुर्बल व्यक्तिके लिअे।

४३८—काचै घडै ही कारी लागै

कच्चे घड़े पर ही जोड लगता है।

सुधार आरम्भमें या छोटी अवस्था में ही हो सकता है।

४३९—काजी जी! दूबळा क्यों? सहररै सोच मे

काजीजी, दुबले क्यों? सहरके सोचमें?

जो व्यर्थ ही चिन्ता करता रहे उसके लिअे।

४४०—काजीजीरी* कुत्ती कैनैठा कठै जांवती व्यासी(पठान्तर-कांजरी)

काजीजीकी कुत्ती न जाने कहाँ जाकर वच्चे देगी।

सौ घर भटकने वाले मनुष्य या ग्राहक पर।

४४१—काजीजीरी कुत्ती मरी जद सगळा वैसण गया, काजीजी मरया जद कोई को गयोनी

काजीकी कुतिया मरी तब सारा गाव बैठने गया पर काजीजी मरे तव कोई भी नहीं गया

जबतक किसी के हाथ में अधिकार होता हैं तबनक सब कोई उसका तो क्या उंसके अनुचर तकका आदर व सेवा करते हैं परन्तु अधिकार हाथसे निकल जानेपर कोई उसकी सुधि नहीं लेना।

४४२—काठरी हांडी अेक ही वार चढै

काठ की हँड़िया अेक ही वार चढ़ती है।

कपट का काम अेक ही वार हो सकता है।

मि०—जैसे हांडी काठ की चढै न दूजी वार।

मामरा पता नहीं चलता ।

प्र —स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः ।

४२९—काग पड़े, कुत्ता सुसे

कौवे गिरते हैं और कुत्ते भौंकते हैं

सूने घर या गाँवके लिये ।

४३०—काग मोती दे नहीं, ने चिड़ी रोती रै नहीं

कौआ मोती देता नहीं और चिड़िया रोती रहती नहीं ।

दोनों ओर हठ ।

४३१—कागलोंरी कुरासीससूं ऊंट थोड़ा ही मरै

कौओंकी कुआशीषसे कहीं ऊंट मरते हैं ?

मि —कैवरी कुरासीस सु पाम को मरे नी

किसी के बुरा चिन्तन करने से बुरा नहीं होता ।

४३२—कागलोरै कीं हुवै तो मुकतां वीखै ही नी

कौओंके कुछ हो तो मुक्ते समय न दिखायी दे !

जब कोई यह कहना चाहता है कि अमुकके पास कुछ नहीं, कुछ हो तो मौका पड़ने पर दिखायी न दे तब कही जाती है ।

४३३—कागला तीरसूं डरै ज्यूं डरै

जैसे कौआ तीरसे डरता है वैसे डरता है ।

बहुत डरता है ।

४३४—कागलो नाक लेग्यो ।

कौआ नाक ले गया ।

निर्लज्ज व्यक्तिके लिये जो किसीपर असर नहीं होता ।

४३५—कागलो हंसरी चाल चालै

कौआ हंसकी चाल चलता है ।

अयोग्य व्यक्ति योग्य व्यक्तिकी बराबरी करे तब कही जाती है ।

४५०—काती कुत्ती, माघ विलाई,
फागण, मिनख'र ब्यांव लुगाओ

कातिकमें कुतिया, माहमें बिल्ली, फागुनमें पुरुष और विवाहमें स्त्री निर्लज्ज हो जाते हैं।

४५१—काती-पींजी सान कपास कर दी

काता हुआ और पींजा हुआ सब वापिस कपास कर दिया।
बना-बनाया सारा काम बिगाड़ दिया।

४५२—काल्या ज्यांरा सूत, जाया ज्यांरा पूत

सूत उनका जिनोंने काता ओर बेटे उनके जिनोंने जन्म दिया

४५३—कात्यो पींज्यो कपास हुग्यो

काता हुआ और धुना हुआ सारा फिर कपास हो गया
(ऊपर कहावत न ४४९-४५१ देखो)

४५४—कान अर आंखमे च्यार आंगळरो फरक है

कान और आंखमें चार आंगुलका अन्तर है।
सुनी हुई और देखी हुई बातमें बहुत अन्तर होता है।
सुनी बातका विश्वास नहीं करना चाहिये।

४५५—कान खूस'र हाथमें आयग्या

कान टूट कर हाथमे आ गये

४५६—कानमें ठेठी घाल राखी है

कानोंमें ठेठी डाल रखी है (ठेठी=कर्णमल)
बात सुनता ही नहीं।

४५७—कानूड़ो कुळमे आयो, रात वड़ी दिन छोटा लायो

कान्हने कुलमें जन्म लिया, वह बड़ी रातें तथा छोटे दिन लाया
कृष्ण जन्माष्टमीके पीछे रातें बढ़ने लगती हैं और दिन घटने लगता है।

४४३—काठे में भाठो'र गीले में गोबर

कठोर (पदार्थ) में पत्थर और गीले (पदार्थ) में गोबर (फेंक रखा है)

बिना सद् विवेक वाले सर्वभक्षी पर व्यंग है।

४४४—काणी पीठमें पड़े

कानी पीठ में पड़ता है

रास्ते से बहुत दूर कोने में पड़ता है (किसी स्थान के लिये)।

४४५—काणी बाई! लाडू खाओ

कानी बाई! लड्डू खाओ

(नीचे वाली कहावत देखो)

४४६—काणी रांड! लाडू खास

मीठो घणो बोलग्यो, बेटा! दूध पास्यूं

कानी रांड! लड्डू खाओ

मीठा बहुत बोलकर बेटा! (ऊपर क्या) दूध पिलाऊंगी

जिससे मतलब बनाना हो उससे कोई दुर्वचन कहे तब कही जाती है।

जिससे स्वार्थ सधता हो उससे मीठा बोलना चाहिये।

४४७—काणीरे ब्यावने सौ जोखम

कानीके विवाह को सौ जोखिम (न जाने कब भेद खुल जाय)

जब भेद खुलने का डर हो।

४४८—काणीरो काजळ ही को सुहावेनी

कानीका काजल भी नहीं सुहाता

किसी के साधारण शृंगार बनाव को भी जब कोई टोके तब कही जाती है

४४९—काती-कपासी सान पूरी* कर दी (*पाठान्तर-धूणी)

कता हुआ सब समाप्त कर दिया

किये-कराये काम को खराब कर दिया।

४६५—काम हुवणसूँ पहली ही सिकोतरी बोल जाय

काम होनेसे पहले ही सिकोतरी बोल जाती है।

काम सफल होनेसे पहले ही सफलतासूचक सूचना अथवा चिह्न प्रकट होने लगते हैं।

४६६—कायथ कागा कूकडा तीनूँ जात सुजात

कायस्थ, कौवा और मुर्गा—ये तीनों अच्छी जातें हैं।

क्योंकि ये अपनी जातिवालोंसे प्रेम करते हैं।

मि०—(१) बामण, कुत्ता, वाणिया तीनूँ जात कुजात।

(२) बामण, नाई, कूतरा तीनूँ जात कुजात।

(३) बामण, कुत्ता, वाणिया जात देख गुर्राय।

कायथ, कागा, कूकडा जात देख हरखाय॥

४६७—कारनै कार सिखावै

काम कामको सिखाता है।

काम करनेसे ही काम करना आता है।

४६८—काल कण देखी है ?

'कल' किसने देखा है ?

पता नहीं कल क्या होगा, कल आवेगा भी या नहीं, भविष्य को कौन जानता है ?

मि०—(१) कुण जाणे कलकी, खबर नहिं है जगमें पलकी।

(२) future is entirely in the dark

४६९—कालमें इधकमासो

अकालमें अधिक मास।

विपत्तिमें विपत्ति आनेपर।

४७०—काल वागडसूँ ऊपजै बुरो बामणसूँ होय

अकाल मरुभूमिसे होता है, बुराई ब्राह्मणसे होती है।

ब्राह्मण सब बुराइयोंकी जड़ है।

४५८—काम करै भूधोदास, जीम ज्याय माधोदास

काम करता है भूधोदास और खा जाता है माधोदास

काम कोई करता है और काम कोई उठाता है।

मि०—कमावे धोतीवाला,खा ज्याय टोपीवाला।

४५९—काम करचा जकै कामण करचा

जिसने काम किया उसने कामण कर दिया।

काम करनेवाला सबको वशमें कर लेता है।

४६०—काम प्यारो है, चाम प्यारो कोनी

काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं।

(१) काम करनेवाला आदमी अच्छा लगता है, खूबसूरत पर कामचोर किसीको अच्छा नहीं लगता।

(२) शरीरको कोई प्यार नहीं करता, सब कामको प्यार करते हैं।

४६१—काम मोलायो जाणै माथेमें खोटरी दी है

काम करनेको सौंपा मानो माथेमें खोटकी दी

जो व्यक्ति काम करनेमें अनिच्छा प्रकट करे।

४६२—कामरू नांव ताव चढे

कामके नाम पर बुखार चढ़ जाता है

जो काम न करे उसके लिये।

४६३—कामळ भीजै ज्यूं-ज्यूं भारी हुवै

कम्बल ज्यों-ज्यों भीगता है त्यों-त्यों भारी होती है

(१) संपत्ति बढ़ती है त्यों-त्यों अभिमान बढ़ता है

मि०—ज्यों-ज्यों भीजै कामरी त्यों-त्यों भारी होय

४६४—काम सरच्या दुख बीसरच्या वैरी हुयग्या वैद

जब काम बन गया और दुख भूल गया तो वैद वैरी हो गया।

गरज निकल जानेपर उपकारीको न पहचाननेवालेके लिये।

४७६—काली कयां ही ढीकै अर गोरी कयां ही ढीकै

काली कहनेसे भी रँभाती है और गोरी कहनेसे भी रँभाती है।

दोनों ओर हाँ में हाँ मिलानेवालेपर।

मि॰—गंगा न्हाये गंगादास, जमना न्हाये जमनादास

४७७—काळी फूल न पाया पाणी, धान मरया अधबीच जवानी

पानी नहीं पिलाया जिससे धान भर जवानी में मर गये।

४७८—काळो मूँढ़ो, लीला पग

काला मुँह और नीले पग।

बड़ोंकी आज्ञा न माननेवालेका तथा बुरे काम करनेवालेका मुँह काला व पैर नीले कर देने चाहिए अर्थात् उसको कठोर सजा (तिरस्कार) देनी चाहिए।

४७९—का वातनै, का स्वादनै

या तो बातको या स्वादको।

अपनी बात रखनेके लिए तथा सुस्वादु व्यंजन खानेके लिये उचित मूल्य देना पड़ता है।

४८०—कांई गोडियो गावै अर कांई पूँगी बाजै

क्या तो सँपेरा गाता है और पूँगी बजती है?

देखें क्या फल निकलता है। कार्यका फल भविष्यके गर्भमें रहता है।

४८१—कांई माखी छींक दियो

क्या मक्खीने छींक दिया?

क्या हो गया? (कोई आदमी काम न करे या करता करता इनकार कर दे)।

४८२—कांकरा (पाठान्तर–काकडिया) कँवला हुवै तो स्यालिया कद छोडै

ककर कोमल हो तो गीदड़ कब छोड़ें (कभीके खा जायँ)

लाभ सहज ही हो तो कौन छोड़े?

४०१—काळ बिगोवै कोनी, बाळ बिगोवै

काल बदनाम नहीं करता संतान बदनाम करती है।

अकाल अर्थात् असमयमें बदनामी नहीं होती। परन्तु संतान (छोटे बालकों) को देरमें भोजन न मिलनेपर अथवा रातको रोटी नहीं बचनेके कारण प्रातः कलेवा न मिलनेपर वे बदनामी कराने लगते हैं।

४०२—काळा आखर भैंस बराबर

काले अक्षर भैंस के समान हैं।

मूर्खके लिये तो पढ़ नहीं सकता।

मि०—करिया अक्षर भैंस बराबर।

४०३—काळा काळा किसनजीरा साळा

काले-काले कृष्णजीके साले।

जब काले आदमीकी बुराई की जाती है तो उसका कथन।

४०४—काळियो गोरियो कनै बैठे, रंग नहीं तो अकल तो आवै ही

(पाठान्तर—रंग नहीं बदळै, अकल तो बदळै)

काला गोरेके पास बैठता है तो, रंग नहीं तो, अक्ल तो आती ही है (रंग नहीं बदलता है तो भी अक्ल तो बदलती ही है)।

(१) अच्छी संगतिसे अक्ल आती है।

(२) संगति का असर होता ही है।

मि०—काक होय पिक बचनु बदलत।

४०५—कामळी ऊन कुमाणसां चढै न दूजो रंग

काली ऊन और दुष्ट मनुष्योंपर दूसरा रंग नहीं चढ़ता।

दुष्टकी दुष्ट प्रकृति नहीं बदल सकती।

मि०—सूरदास काली कमरीपर चढै न दूजो रंग।

४७६—काली कयां ही ढीकें अर गोरी कयां ही ढीकै

काली कहनेसे भी रँभाती है और गोरी कहनेसे भी रँभाती है।

दोनों ओर हाँ में हाँ मिलानेवालेपर।

मि०—गंगा न्हाये गंगादास, जमना न्हाये जमनादास

४७७—काळी फूल न पाया पाणी, धान मरया अधवीच जवानी

पानी नहीं पिलाया जिससे धान भर जवानी में मर गये।

४७८—काळो मूँढ़ो, लीला पग

काला मुँह और नीले पग।

बड़ोंकी आज्ञा न माननेवालेका तथा बुरे काम करनेवालेका मुँह काला व पैर नीले कर देने चाहिए अर्थात् उसको कठोर सजा (तिरस्कार) देनी चाहिए।

४७९—का वातनै, का स्वादनै

या तो वातको या स्वादको।

अपनी बात रखनेके लिए तथा सुस्वादु व्यंजन खानेके लिये उचित मूल्य देना पड़ता है।

४८०—कांई गोडियो गावै अर कांई पूँगी बाजै

क्या तो सँपेरा गाता है और पूँगी बजती है?

देखें क्या फल निकलता है। कार्यका फल भविष्यके गर्भमें रहता है।

४८१—कांई माखी छींक दियो

क्या मक्खीने छींक दिया?

क्या हो गया? (कोई आदमी काम न करे या करता करता इनकार कर दे)।

४८२—कांकरा (पाठान्तर-काकड़िया) कॅवला हुवै तो स्यालिया कद छोडै

ककर कोमल हो तो गीदड़ कब छोड़ें (कभीके खा जायँ)

लाभ सहज ही हो तो कौन छोड़े?

४८३—कांकरांनै हाथ घाल्यां रुपिया हाथ आवै

कंकरों के लिये हाथ डालते हैं तो रुपये हाथमें आते हैं।

भाग्यशालीके लिये बिना परिश्रम स्वतः धन मिलता है।

४८४—कांकरैरी देसी वाको पंसेरीरी खासी

जो कंकरकी मारेगा वह पंसेरीकी मार खावेगा।

जो दूसरेका अपकार करता है उसका बड़ा अपकार अवश्य होता है।

४८५—कांकर की कुत्ती कठै जावती ब्यावै

कंकरकी कुतिया न जाने कहाँ जाकर प्रसव करे।

४८६—कांटैसूं कांटो नीकळै

कांटेसे कांटा निकलता है।

जैसेका इलाज वैसेसे ही हो सकता है।

मि —(१) कण्टकेनैव कण्टकम्।

(२) विषस्य विषमौषधम्॥

४८७—कांटो कांटैनै काढ

कांटा कांटेसे निकलता है।

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

४८८—कांदैरा छूंतरा उतारणा चोखा कोनी

प्याजके छिलके उतारना अच्छा नहीं।

बातको बढ़ानेसे लाभ नहीं होता निपटानेसे होता है।

४८९—कांदै रा छूंतरा उतारै जितां ही ऊतर आवै

प्याज के छिलके जितने उतारें उतने ही उतर आते हैं।

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

४९०—किसी करै जाणै मातै आयोड़ी देरणी करै

जैसे करता है वैसे माथे आती हुई देरनी करती है

४६१—कियां देखे जाणे कागलो नींबोळी कानी देखे

कैसे देखता है जैसे कौवा निँबोलीकी ओर देखता है

ललचाई हुई नजर से देखने वाले पर व्यंग।

४६२—कियां देखै जाणै गैली बजार कानी देखै

कैसे देखता है जैसे बावली बाजारकी ओर देखती है

अज्ञानवश आश्चर्य चकित होने वाले और व्यंग।

४६३—कियां नाचै जाणै हँसराजरी घोडी नाचै

कैसे नाचता है जैसे हँसराजकी घोड़ी नाचती है

अति चंचल पर व्यंग।

४६४—कियां फिरै जाण बीगड्योड़े व्यांव़मे नाई फिर

कैसे फिरता है जैसे बिगड़े हुओ विवाहमें नाई फिरता है

असफल प्रयत्न करने वाले पर व्यंग

४६५—कियो स काम, भज्यो स राम

(अूपर कहावत नं० ४०८ देखिये)

४६६—किसी देवर माथै बेटी जिणी है ?

कौनसी देवरके भरोसे बेटी जनी है ?

दूसरेके भरोसे काम नहीं अुठाया है।

४६७—किरत्यां अेक भभूकड़ो ओगण सह गळियाह

४६८—किसा भाग लुयीजै है

कौन भाग पुँछते है ?

कौन कोई नाराज होकर भाग्यकी रेखाओंको थोड़े ही बदल सकता है।

४६९—किसी थारी खीर खायी है ?

कौन तेरी खीर खायी है ?

किसी का लिहाज तभी किया जा सकता है जब कालान्तरमें उसने भी अपना उपकार किया हो।

५१३—कुण पीळा चावळ मेल्या हा
किसने पीले चावल भेजे थे।
किसने बुलाया था। किसने कहा था कि आकर यह काम करो।

५१४—कुत्तो कैवे क गाडी म्हारे ही ताण चाले
(गाड़ीके नीचे चलता हुआ) कुत्ता कहता है कि गाड़ी मेरे ही कारण चल रही है।
मनोमय व्यक्तिके इस कथनपर कि सब मेरा किया ही होता है, एक व्यंग।

५१५—कुत्ता ही खीरको खावैलानी
कुत्ते भी खीर नहीं खायेंगे।
कोई भी नहीं पूछेगा।
किसीसे अकनेपर उसके द्वारा भयकर हानि पहुंचाने की धमकी।

५१६—कुत्ता, थारी काण के थारे धररांरी काण
कुत्ते तेरा लिहाज या तेरे घरवालों (मालिकों) का लिहाज
कुत्ते का कोई लिहाज नहीं रखता बल्कि उसके परिवारवालों की सज्जनता का लिहाज करके ही उसे क्षमा प्रदान की जाती है।

५१७—कुत्ता थारी काण के थारे मालक (धणी) री काण
(ऊपरवाली कहावत देखिये)

५१८—कुत्तांरि संप हुवे तो गंगाजी न्हावणि जावे
कुत्तोंके मेल हो तो गंगाजी नहा आवें
जिन लोगोंमें परस्पर मतैक्य नहीं होता असंभव

५१९—कुत्ती जाया कूकरिया अेके धारे मूतरिया
कुतियाने पिल्लोंको जन्म दिये वो सब अेक ठोरे पर मूतरे
किसी समाजके सभी व्यक्ति दुगुणी हों तब।

५२०—कुत्तेने मूँडे लगावणो चोखो कोनी
कुत्तेको मुंह लगाना अच्छा नहीं

(१) कुत्तेको ज्यादा प्यार नहीं करना चाहिअे

(२) नीच आदमी को मुंह नहीं लगाना चाहिअे

५२१—कुत्तेरी कपाळी है

कुत्तेकी खोपडी है

जो व्यक्ति बकता ही जाय

मि०—कुत्तेका मगज खाया है

५२२—कुत्तेरी पूँछ दस ब्रस जमी-मे राखी, निकाली तो फेर आंटी-र-आंटी

कुत्तेकी पूँछ दस बरस जमीनमें गाडकर रखी, पर जब निकाली तो फिर टेढ़ी-की-टेढ़ी

(१) जिस आदमीकी बुरी आदत किसी प्रकार न छूटे

(२) जो आदमी अपनी अैंट या हट किसी प्रकार न छोड़े

मि०—बाणीडे री बाण न जाय कुत्तो मुते टाग उठाय

५२३—कुत्तेरी पूँछ सदा आंटी-री-आंटी

कुत्तेकी दुम सदा टेढ़ी-की-टेढ़ी

(अूपरवाली कहावत देखिये)

५२४—कुत्तेरी मोत मरसी

कुत्तेकी मौत मरेगा

बुरी तरह या बेमौत मरेगा

बहुत दुःख पावेगा।

५२५—कुत्तेरो सिर खल्ले जोगो

कुत्तेका सिर जूतेके योग्य है

(१) मूर्ख या दुष्ट ताड़नाके ही योग्य है

(२) जैसे को तैसा

५००—किसी चोटी कटी है ?

कौन चोटी कटी है (ऐसा बनाया है ?)

सभीके चोटे ही है।

किसीवाकी चोटी कटवोती है।

५०१—किसी सांभर सूनी हुवे है

कौनसा सांभर सूना हुआ जाता है।

कौनसी कमी हुवी जाती है।

५०२—किसी सिंघड़ी सूनी हुवे है

(ऊपरवाली कहावत सरिखे)

५०३—किसो तमासो है ?

क्या तमाशा है ?

विनोदको छोड़कर कार्यकी गम्भीरता पर ध्यान देना चाहिये।

५०४—किसो नानेरो है

कौनसा ननिहाल है।

किसी कार्य के सहज में बन जाने की मिथ्या आशापर व्यंग।

५०५—कीड़ी कैवे क मां गुड़री भेली लावू

मा कैवे के बेटा, थारी कमर ही कैवे है नी।

जब चींटी अपनी मां से कहती है कि मां गुड़ की भेली कुछ लाऊं ! मां कहती है कि—बेटी, तेरी कमर ही कहती है न (कि तू भेली ले आवेगी)।

जब कोई व्यक्ति अपनी शक्तिसे बाहर कार्य करनेको तय्यार हो।

५०६—कीड़ीने कण, हाथीने मण

चींटी को कण हाथी को मन।

निर्वाहके योग्य भोजन परमात्मा सबको देता है।

५०७—कीड़ीने मूतरो रेलो ही भारी

चींटीको मूतकी बाढ़ ही भारी होती है।

कमजोर व्यक्तिको साधारण-साधारण मकट ही ले बैठना है।

५०८—कीडी संचै तीतर खाय पापीरो धन परलै जाय

चींटी अनाज सचय करती है और तीतर अुसे खाता है। अिस प्रकार पापीका धन नष्ट होता है (अुसके काम नहीं आता)।

पापीकी कमाअी बुरे काममे लगती है।

पापसे कमाया धन बुरे काममें नष्ट होता है।

पापका धन कमानेवालेके लाभमे नहीं खर्च होता।

५०९—कीरत हूंदा कोटड़ा पाड्या नहीं पडन्त

कीर्तिके किले गिरानेसे नहीं गिरते।

यशका नाश नहीं होता।

५१० कुगांवमे अेरंडियो रूंख

वजड़ गांवमे अेरंड भी पेड़ कहा जाता है।

जहां विद्वान नहीं होते वहां साधारण-पढा लिखा भी बड़ा भारी विद्वान माना जाता है।

५११—कुजात मनायां माथै चढै

नीच जातिका आदमी मनानेसे सिर चढ़ता है।

नीचकी खुशामद करनेसे वह और अकड़ता है।

मि०—सुजात मनायां पगां पड़ै

५१२—कुठोड़ खायी रे सुसरो वैद

बुरी जगह काटा अुसपर ससुर ही वैद्य (अुससे कैसे अिलाज करवाया जाय)

अज्ञान वो धोखेसे हानि उठाने तथा निरुपाय हो जानें पर।

५१३—कुण पीछा चावल भेज्या हा

किसने पीछे चावल भेजे थे।

किसने बुलाया था। किसने कहा था कि आकर यह काम करो।

५१४—कुत्तो कैवै क गाडी म्हारे ही साण चालै

(गाड़ीके नीचे चलता हुआ) कुत्ता कहता है कि गाड़ी मेरे ही कारण चल रही है।

अयोग्य व्यक्तिके इस कथनपर कि सब मेरा किया ही होता है, एक व्यंग।

५१५—कुत्ता ही खीरको खावैलानी

कुत्ते भी खीर नहीं खायेंगे।

कोई भी नहीं पूछेगा।

किसीके मरनेपर उसके द्वारा मरकर हानि पहुंचाने की धमकी।

५१६—कुत्ता, थारी काण के थारे घररांरी काण

कुत्ते तेरा लिहाज या तेरे घरवालों (मालिकों) का लिहाज

कुत्ते का कोई लिहाज नहीं रखता बल्कि उसके परिवारवालों की समानता का लिहाज करके ही उसे क्षमा प्रदान की जाती है।

५१७—कुत्ता थारी काण के थारे मालक (धणी) री काण

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

५१८—कुत्तारि संप हुवै तो गंगाजी न्हावण जावै

कुत्तोंकि मेल हो तो गंगाजी नहा आवें

जिन लोगोंमें परस्पर मतैक्य नहीं होता उनपर

५१९—कुत्ती जाया कूकरिया अेके डोरे मूतरिया

कुतियाने पिल्लोंको जन्म दिये जो सब अेक डोरे पर मूतरे

किसी समाजके सभी व्यक्ति दुर्गुणी हों तब।

५२०—कुत्तेने मूंडै लगावणो चोखो कोनी

कुत्तेको मुंह लगाना अच्छा नहीं

(१) कुत्तेको ज्यादा प्यार नहीं करना चाहिये
(२) नीच आदमी को मुंह नहीं लगाना चाहिये

५२१—कुत्तेरी कपाळी है

कुत्तेकी खोपड़ी है
जो व्यक्ति बकता ही जाय
मि०—कुत्तेका मगज खाया है

५२२—कुत्तेरी पूँछ दस बरस जमी-मे राखी,
निकाली तो फेर आंटी-र-आंटी

कुत्तेकी पूँछ दस बरस जमीनमें गाड़कर रखी, पर जब निकाली तो फिर टेढ़ी-की-टेढ़ी
(१) जिस आदमीकी बुरी आदत किसी प्रकार न छूटे
(२) जो आदमी अपनी अेंट या हट किसी प्रकार न छोड़े
मि०—वाणीडे री वाण न जाय कुत्तो मुते टाग उठाय

५२३—कुत्तेरी पूँछ सदा आंटी-री-आंटी

कुत्तेकी दुम सदा टेढ़ी-की-टेढ़ी
(अूपरवाली कहावत देखिये)

५२४—कुत्तेरी मोत मरसी

कुत्तेकी मौत मरेगा
बुरी तरह या बेमौत मरेगा
बहुत दुःख पावेगा।

५२५—कुत्तेरो सिर खल्ले जोगो

कुत्तेका सिर जूतेके योग्य है
(१) मूर्ख या दुष्ट ताड़नाके ही योग्य है
(२) जैसे को तैसा

५२६—कुत्तो नारेळरो कांई करै

कुत्ता नारियलका क्या करे

५२७—कुरकुरा पीसे भरभरा पोवै सिपरा मांटी रातयूं रोवै

जो बहुत ज्यादा मोटा पीसता है और मुरकी मुरमुरी रोटी बनाती है उसका पति रातमें (चुपचाप) रोता है।

फूहड़ की पर।

५२८—कुसळां आया भाडयो धाडे भरे धूड़

डाकू कुशलसे लौट आये (यही बहुत है) चाहे पीछे धूल फेंके

(लूट न मिली तो कोई हरज नहीं)

खतरेमेंसे निकल आये यही बहुत है, काम हाथ न आया तो न सही

५२९—कूड़ा करसा खाय गेहूँ खीमे वाणिया

किसान मोटा नाज खाते हैं, बनिये गेहूँ खाते हैं

५३०—कूवे भांग पड़गी

कुवेमें भांग पड़ गयी (जिससे पानी पीकर सब पागल हो गये)

सबकी बुद्धि मारी गयी

सब भ्रममें पड़ गये।

५३१—कूवेमें हुवे तो खेळीमें आव

कुवेमें हो तो खेळीमें आवे (नहीं तो कैसे आवे)

(१) भीतर कुछ तत्व हो तो बाहर आवे

(२) पासमें कुछ हो तो दे

५३२—कूवेरी छायां कूवेमें रेवै

कुवेकी छाया कुवेमें रहती है

गंभीर आदमी अपने मनकी बात मनमें ही रखता है।

५३३—कूमार कूमारीनेकने मायड़े नी चरो गधीरा कान मरोड़े

कुमार कुँमारीको नहीं पहुँच पाता तब गधीके कान मरोड़ता है

बलवानसे वश न चले तब निर्बलपर गुस्सा उतारना

५३४—कूँभार फूटीमें रांधे

कुँभार फूटी हँडियामें रांधना है

सम्पन्न व्यक्तिके घरमें भी वे-परवाही अथवा अविचारसे अशोभनीय काय हो जाते है।

५३५—कूँभार रे घरे फूटी हांडी

कुंभारके घरमें फूटी हँडिया

(ऊपरवाली कहावत देखो)

५३६—केअीरी जीभ चालै केअीरा हाथ चालै

किसीकी जीभ चलती है किसीके हाथ चलते है

(१) कोअी गाली देता है कोअी पीट डालता है

(२) जब कोई गाली दे तब सामनेका व्यक्ति कहता है

(३) जो गाली देता है वह मार खाता है

५३७—केसांने काट्यां किसा मुडदा होळा हुवै

बाल काटनेसे कौनसे मुर्दे हल्के हो जाते हैं

अधिकांश बुराईको कायम रखकर केवल उसके नगण्य भाग हटानेका उपाय सोचनेपर व्यंग।

५३८—केसरिया केरै अूपर बणिया

किसपर केशरिया बने (भद्र हुअे)

किस सम्बन्धीकी मृत्युपर सिर और मूँछके बाल कटवा डाले ?

५३९—केसोराय अूँडो घणो तो भांडासर अूँचो घणो

केशोराय (नामका कुँआ) गहरा बहुत तो भांडासर (नामका जैनमदिर) ऊँचा बहुत

दो बातोंके मिलानपर

५४०—कै घोड़ा घोड़ांमें कै घोडा चोरांमें

या तो घोड़े घोड़ोंमें या चोरोंमें

या तो काम ही बन जायगा या सब कुछ चला जायगा
हानि-लाभकी पर्वाह न करके किसी काममें कूद पड़ना।

५४१—फेरतो कांटो गुम्यो साढ़ी सोळै हाथ
परिक्रमा करते कांटा गड़ा साढ़े सोलह हाथ
बहुत गप करनेवालेपर।

५४२—केरा आयोड़ा, केने दुख दे
आये हुये किसीके, दुख देते हैं किसीको
विरोधी अथवा अपरिचित व्यक्तियोंके प्रति।

५४३—केरी माँ (सेर) सूँठ खायी है
किसकी माँने (सेर) सोंठ खायी है
किसी कार्यके करवानेके लिये लोगोंको उत्तेजित करनेकी उक्ति।
सेर सूंठ खानेवाली माताका वीर पुत्र ही कठिन कार्य करनेका बीड़ा उठा सकता है।

५४४—कैवणो सोरो, करणो दोरो
कहना सहज, करना कठिन
मि०—कथनी मीठी खांडसी करनी विषकी लोय

५४५—कै हंसा मोती चुगै कै निरणा रह जाय
हंस या तो मोती ही चुगते हैं या भूखे ही रह जाते हैं
(१) स्वाभिमानी पुरुष अपना स्वाभिमान रखते हैं या फिर नष्ट हो जाते हैं
(२) महापुरुष प्राण दे देते हैं पर नीच कार्यकी ओर प्रवृत्त नहीं होते
(३) महापुरुष प्राण भले ही दे दें पर सिद्धान्त नहीं छोड़ते

५४६—कै हंसा मोती चुगै कै भूखा मर जाय
(ऊपरवाली कहावत देखिये)

५४७—कोअी गावै होळीरा कोअी गावै दियाळीरा

कोई गाता है होलीके (गीत), कोई गाता है दिवालीके

(१) असवद्ध वार्त्तालाप पर

(२) कहनेवाला कुछ कहे जवाव देनेवाला कुछ जवाव दे

(३) अपनी-अपनी ढफली अपना-अपना राग

मिलावो—पूछी जमीनकी तो कही आसमानकी

५४८—कोअी चालै चाकरी ताज्यो तुरक तयार

चाहे कोअी नौकरीपर जाय ताजिया तुरक जरूर तयार रहता है

अयोग्य व्यक्तिके प्रत्येक काम करनेको उद्यत रहनेपर व्यंग।

५४९—कोअी पूछै न ताछै हूं लाडेरी भूवा

कोअी पूछे न ताछे और कहती है कि मैं दूल्हेकी फूफी हू

धींगाणिये पचपर व्यंगोक्ति।

५५०—कोअी फिरै डाळडाळ, हू फिरूँ पान-पान

कोई फिरे डाली-डाली मैं फिरूँ पत्ते-पत्ते

चतुर आदमियोंसे गुप्त रखनेपर भी भेद छिपा नहीं रहता।

५५१—कोट पेट रूँधै जकांरा

किले और पेट अुन्हींके जो पहले अुनपर कब्जा कर लेता है

५५२—कोठीमे घाल्या ही को जीवै नी

कोठीमें डालनेपर भी नहीं जीते

५५३—कोठीमे दाणा है जिते तो कोअी डर कोनी

कोठीमें दाना (नाज) है तब तक तो कोई डर नहीं

(१) खानेको है तव तक तो डर नहीं

(२) अुम्र है तव तक तो कोई डर नहीं

n 36

५५४—कोठेरी बात होठे आयी रेवै

पेटकी बात ओठोंपर आ ही जाती है

मनकी बात कभी-न-कभी मुँहपर प्रकट हो ही जाती है

कपट नहीं छिपता

५५५—कोठ सोभी होठे

जो पेटमें होती है वह ओठोंपर आती है

५५६—कोडी-कोडी करतां लख लागे

कौड़ी-कौड़ी करके ढेर हो जाता है

थोड़े-थोड़ेसे ही लाख बन जाती है

थोड़ा-थोड़ा करके ही सर्व बन जाता है।

५५७—कोडी-कोडीने कंजूस, रुपियांरो दातार

कौड़ी-कौड़ीके लिये कंजूस पर रुपयोंको उड़ानेवाला।

Penny wise Pound foolish

५५८—कोडी-कोडी संचतां रुपियो हुवे

कौड़ी-कौड़ी जमा करनेसे रुपया हो जाता है

थोड़ा-थोड़ा करनेसे बहुत हो जाता है

मिलाओ—१ कण कण जोड़े मण हुवे

२ बूंद बूंद से घट भर जाता है

५५९—कोडीरा तीन

कौड़ीके तीन

निकम्मा व्यक्ति।

५६०—कोडियेरो सवासणी माथे मन चाले

कौड़ीका सुहागिनीपर मन चलता है

५६१—कोथळीमें गुड़ भागै

थैलेमें गुड़ ताड़ता है

गुप्त रूपसे काम करना

५६२—कोयला खावै जकेरो कालो मूँढो

जो कोयले खाता है अुसका काला मुँह होता है

बुरे काम करनेवाले की बदनामी होती है।

५६३—कोयला खासी जकेरो काळो मूढो हुसी

जो कोयले खायगा अुसका काला मुँह होगा

५६४—कोयलेरी दलालीमे काळा हाथ

कोयलेकी दलालीमें काले हाथ

बुरे कार्यमें सहयोग देनेवाले की भी बदनामी होती है।

५६५—क्या करै नर फांकड़ा, जद थैलीका मुँह सांकडा

बेचारा आदमी क्या करे जब थैलीका मुँह सँकडा हो

पैसे न हो तो मनुष्य क्या करे ।

मिलाओ—१ पइसे विना बुध बापडी २ टके विना टकटकायँत ।

५६६—क्यांरी कुपाळी है

किसकी खोपड़ी हैं।

बकवादी को ।

५६७—क्यूं आंधो नूँतै'र क्यूँ दो जिमावै

क्यों अन्धा नौते और क्यों दो को जिमाना पड़े।

असा काम ही क्यों करे जिसमें हानि हो ।

५६८—क्यूँ रांड कहृ अर निपूती सुणनी

क्यों रांड कहकर बदलेमें निपूती शब्द सुनना ।

जैसा कहोगे वैसा सुनोगे।

ख

५६६—खर घच्चू मूरख पसु सदा सुखी प्रिथिराज

पृथ्वीराज कहते हैं कि गधा, उल्लू, पशु और मूर्ख सदा सुखी रहते हैं। मूर्ख सदा सुखी रहता है क्योंकि उसे को प्रपंचोंमें नहीं पड़ना पड़ता और न लोग घेरे रहते हैं—न कोई चिन्ता होती है।

इसका पूरा दोहा यों है :—

> चातक चकवा चतुर नर, प्रतिदिन रहत उदास।
>
> खर घच्चू मूरख पसु, सदा सुखी प्रिथिराज॥

५७०—खरचरा भाग मोटा

खर्चके भाग्य बड़े।

जो खूब खर्च करता है उसका भाग्य तेज रहता है।

कंजूसीकी निन्दा।

५७१—खरची खूटी यारी टूटी

खर्च करनेका पैसा न रहा तो दोस्ती छूट गई।

जब तक पासमें पैसा होता है तभी तक लोग दोस्ती रखते हैं।

मि :—यारी या संसारमें मतलबकी मनुहार

> जब लग पैसा गाँठमें तब लग ताको यार
>
> तब लग ताको यार यार सब ही सग डोले
>
> पैसा रहा न पास यार मुखसे नहीं बोले
>
> कह गिरधर कविराय जगतकी यही लेखा
>
> कर बेगरजी प्रीत यार हम बिरला देखा।

५७२—खरबूजेने देख'र खरबूजो रंग बदलै

खरबूजेको देखकर खरबूजा रंग बदलता है।

दूसरे को देखकर लोग उत्साहित होते हैं।

५७३—खरी मजूरी चोखा दाम

मजदूरीकी प्रशसा

मि०—Work brings its own reward

५७४—खांड खायां गांड गळ

खांड खानेसे गांड़ गलती है।

अधिक मीठा नहीं खाना चाहिये क्योंकि उससे शरीर कमजोर होता है।

५७५—खांड गळै जद सगळा आ ज्यावै गांड गळै जद कोई को आवै नी

खांड गलती है तव सब आ जाते हैं, गांड गलती है तव कोई नहीं आता

सम्पत्तिमें सब साथ देते हैं विपत्तिमें कोई पास नहीं रहता।

मिलाओ—सेवे पछी सरस तरु, निरस भये उड़ जांय।

५७६—खांडमे खायो जाय ना कोई गुळमे खायो जाय

न खांडमें खाया जाता है न गुड़में खाया जाता है।

५७७—खां सा'ब लकडी तोड़ो तो कै यह काफरका काम

खां सा'ब खीचडी खावो तो कै बिसमिल्लाह

खां साहब, लकड़ी फाड़िये तो कहते हैं कि यह काफिरका काम है (हमारा नहीं)। खां साहब, खिचडी खाइये तो कहते हैं—बिसमिल्लाह, बस लाओ।

ऐसे व्यक्तिके लिए जो काम न करे और लाभ उठानेको तय्यार हो जाय।

५७८—खाखमें कटारी चोरने घोंचांसूँ मारै

बगलमें कटारी, चोरको तिनकोंसे मारता है

पास होते हुए भी वस्तुका उपयोग न करनेपर ।

मि०—घरि घोड़ो नै पैदल जाय, घरि घीणो नै लूखो खाय।
घरि पलग नै धरती सूवइ, तेहनी वइयर जीवता रोवइ॥

५७९—खा गुड तेरो ही है

मौकेसे बेजा लाभ उठानेवालेपर व्यगोक्ति।

५८०—खाट गाय आपरो दूध को दैनी दूजीरो ढोळाय दै

दुष्ट न स्वय लाभ पहुचाता और न दूसरेको पहुचाने देता है।

मिलाओ—अेक आनेका दूध लिया उसमें भी मक्खा ? साव इतने थोड़े दूधमें मक्खी नहीं तो हाथी कहांसे आयगा ।

५८८—खारी वोली मावडी मीठीवोली लोक

मा के कटु वचन और लोगों के मीठे वचन

मा के कटुवचन भी हितकर हैं।

५८९—खाली वासन घणा खडखडावें

खाली भांड़े अधिक खड़खडाते हैं।

गुणहीन बढ़बढकर वातें बनाता है।

मि०—ओछा घट छलके सदा पूरो छलके नाहिं।

Empty vessels make much noise

५९०—खाली वैठां उतपात सूझै

निकम्मे वैठे उत्पात सूझते है।

निकम्मा नहीं वैठना चाहिए।

मि०—

Idle brains are the deVil's work houses.

Idle fellows are the deVil's play fellows,

५९१—खावणने खोखा पैरणनु चोखा

खानेको खोखे मिलते हैं पर पहननेको चोखे कपड़े चाहिए।

घरमें फाका करते हुए भी छैले बननेवालोंके लिए।

५९२—खावण पीवणने खेमली नाचणने गजराज (पाठान्तर—नगराज)

खाने-पीनेको तो खेमलो और नाचनेको गजराज।

मजे कोई उड़ावे परिश्रम कोई करे।

५९३—खावण पीवणने दीयाली कूटीजणने छाज

खाने-पीनेको दिवाली और पिटनेको छाज।

५९४—खावतो-पीवतो मरे जकेरो कोई कांई करै
जो खाते-पीते मरे उसका कोई क्या करे।
सावधानी रहनेपर भी कोई काम बिगड़े तो उसका क्या उपाय।

५९५—खावै-पीवै सासमरो गीत गावै वीरैरा
खाती है सासका, गीत गाती है भाई के।
कृतज्ञता न मानना।

५९६—खावै जकी थाळीमें हगै
जिस थालीमें खाता है उसीमें हगता है।
उपकार को न मानना। उपकारीके साथ अपकार करना।

५९७—खावै जकी हांडीने फोड़ै
जिस हांडीमें खाता है उसीको फोड़ता है।
[ऊपरवाली कहावत देखो]

५९८—खावै जकी हांडीमें ही छेकला करै
जिस हांडीमें खाता है उसीमें छेद करता है।
मि०—जिसी डालपर बैठे वो मैं हु कटै।
[ऊपरवाली कहावत देखो]

५९९—खावै जकेरो गावै
जिसका खाता है उसका गाता है
पालन-पोषण करनेवालेका बखान या उपकार करता है।

६००—खावै जिती भूख, सोवै जिती नींद
खाये उतनी ही भूख और सो जितनी नींद
भूख और नींदकी कोई सीमा नहीं।

६०१—खावै सूर कुटीजै पाड़ा
खाते है सुअर, पिटते है पाड़े
अपराध कोई करता है फल कोई भोगता है।

बलवान् अपराध करता है निर्बल उसका फल भोगता है

January commits the fault & may Bears the blame

६०२—खाच पीवे जकेने खुदा देवै

जो खाता पीता है उसे खुदा देता है

संपत्तिका भोग करना चाहिए—भोगनेसे वह नहीं नाश होती

कंजूसीकी निंदा।

६०३—खिणियो डूँगर निकळियो ऊँदर

खोदा पहाड़, निकला चूहा

बहुत परिश्रमका बहुत थोड़ा फल मिलना।

मि०—पहाड़ खोदकर चूहा निकालना

To dive deep and bring up a potsherd

६०४—खिणै जको पड़ै

जो खड्डा खोदता है वही गिरता है

जो करता है वह फल भोगता है।

६०५—खीचड खाया पेट फुटाया तेरे राजमे क्या सुख पाया

किसी दुखी स्त्रीका पतिसे कथन।

किसी दुखी सेवक या आश्रित या प्रजाका मालिकसे कथन।

६०६—खीचड़ी पापड खावतां ही पुणचो उतरे

खिचड़ी खानेसे ही पहुंचा उतर जाता है

निर्बलके लिए व्यंग

सुकुमारके लिए व्यंग।

६०७—खीरां मेली खीचड़ी टीलो आयो टच्च

खिचड़ीको चूल्हेसे उतारकर अंगारोंपर रखा कि खानेके लिये टीला आया और चट आसन लगाकर बैठ गया

जो काम न करे या कामकी समय कहीं चला जाय और लाभ उठानेको तुरत तय्यार हो जाय उसके लिए।

६०८—खीसा तर तो भावे ज्यूँ कर
खीसा तर हो तो चाहे ज्यों कर
पासमें पैसा होनेसे सब कुछ हो सकता है
मि०—किसमी थारी रात, ना कामो ना किसमसी
कुम्सी बबरीबाद, घ रामी माँना धवे
—मुरली

६०९—जैसा देवता वैसा फरिस्ता
जैसा देवता वैसे फरिस्ते
अनुरूप वस्तुके मेल।
मि०—१ नकटा देव सूरडा पुजारा
२ मांग भूहर पोथी बांच जैसा गुरु तिसा जजमान
३ ना इसी बनिता देवी ता इसो माहनो वाए

६१०—सूवा देगा सो छप्पर फोड़कर देगा
परमात्मा चाहे जैसे सहायता कर सकता है।
दृढ़ निश्चयवालेकी परमात्मा अवश्य सहायता करता है

६११—सुवारी महर तो छीका लहर
परमात्माकी कृपासे सब हराभरा
परमात्माकी कृपा हो तो सब आनंद हो जाते हैं

६१२—सूईमें खूंटी कोनी
सूई हुई (आयु) की दवा नहीं
आयु पूरी होनेपर कोई दवा नहीं लगती।

६१३—सूत्या बाणियो जूना खत जोवे
सूना हुआ बनिया पुराने खत-पत्र (तमस्सुक) देखता है।

६१४—खेती खसमां सेती
खेती मालिककी देखरेखसे ही ठीक हो सकती है
खेतीका काम नौकर-चाकरोंके भरोसे नहीं हो सकता
मि० १—खेती पाती बीनती परमेसरका जाप
पराहमी पा कीजिये, मिन्न कीजिये आप
२ घिरसे खेती कोनीपकेनी

६१५—खे देख 'र घोडा मत वाढो

केवल सन्देह पर नुकसान पहुचाना ठीक नहीं होता

६१६—खेल खेलारांरा, घोडा असवारांरा

खेल खेलनेवालोंके है, घोड़े असवारोंके है

(दूसरोंके लिये वे व्यर्थ हैं)

साहसी व अनुभवी पुरुषोंको ही सफलता सहजमे मिलती है ।

६१७—खोटे खतमे साख कुण घालै

खोटी तमस्सुकमें गवाही कौन करे

खोटी वातमें हाँ मे हा नहीं मिलानी चाहिये

६१८—खोटो रुपियो गमै कोनी

खोटा रुपया नहीं खोया जाता

६१६—खोळे मांयलेने छोड 'र पेट मांयलेरी आस करै

गोदवाले (वच्चे) को छोडकर पेटवाले वच्चेकी आशा करती है ।

निश्चितको छोडकर अनिश्चितकी आशा करना ।

मि०—वादल उमड़े देखकर घड़ा फोड़ना है ।

६२०—गायु-सन्तनके कारणे इन्द्र बरसावे मेह
गायों और सन्तोंके लिये भगवान मेह बरसाते हैं
गायों और सत्पुरुषोंके भाग्यसे वर्षा होती है।

६२१—गढ़-किल्ला तो बांका ही भला
गढ़ और किले तो बांके ही भले

६२२—गढ़ारि गढ़ पावणा
क्योंकि गढ़ ही पाहुने होते हैं
क्योंकि पाहुने बड़े ही होते हैं
बड़ोंका सम्बन्ध बड़ोंसे ही होता है।

६२३—गढ़ारि गढ़ ही पावणा हुवे
(अपरवाली कहावत देखिये)

६२४—गधारि किसा सींग हुवे ?
गधेके कोई सींग थोड़े ही होते हैं
मूर्खोकी कोई खास पहचान नहीं होती

६२५—गधेने मारयां सूं घोड़ो को हुवेनी
गधेको मारनेसे वह घोड़ा नहीं हो सकता
मूर्ख मारनेसे नहीं सुधर सकता।

६२६—गधेने लाख साबणसूं धोवो घोड़ो को हुवेनी
गधेको चाहे लाख बार साबुनसे धोओ वह घोड़ा नहीं बन सकता।
मूर्ख सुधारनेसे सुधर नहीं सकता—बुद्धिमान नहीं बन सकता
प्रकृतिका सुधार कितना ही प्रयत्न क्यों न करो नहीं हो सकता

६२७—गधेरी लातसूं गधोको मरैनी

गधेकी लातसे गधा नहीं मर सकता

समान शक्तिवालेसे हानि नहीं पहुच सकती।

६२८—गधो अूकरड़ीमें लुटै

गधा कूड़ेके ढेरपर लोटता है

(नीचेवाली कहावत देखिये)

६२९—गधो अूकरडी पर लुटणसूँ राजी

गधा घूरेपर लेटनेसे राजी होता है

मलीन व्यक्ति मलीन वस्तु पानेसे प्रसन्न होता है

६३०—गधो गधेरी लातसूँको मरैनी

(अूपर ६२७ कहावत देखिये)

६३१—गधो जाणै सावण सदाही सुरंगो रहसी—

गधा समझता है कि सावन सदा ही हराभरा रहेगा

मूर्ख समझता है कि अच्छी अवस्था सदैव बनी रहेगी।

६३२—गधो धोयांसूँ घोड़ोको हुवैनी

गधा धोनेसे घोड़ा नहीं बन सकता

(अूपर न० ६२६ की कहावत देखिये)

६३३—गधो मिसरी सार काँअी जाणै

गधा मिश्री क्या होती है यह क्या जाने ?

मूर्ख या अज्ञानी अच्छी वस्तुकी कदर नहीं कर सकता।

६३४—गम्योड़ी खेती कमायोडी चाकरी बराबर

बिगड़ी हुयी खेती और सुधरी हुई नौकरी दोनों बराबर है

नौकरी कितनी ही अच्छी तरह क्यों न की जाय लाभकारिणी नहीं होती।

६३५—गयी तिथ बामण ही को बाँचैनी
बीती हुयी तिथिको ब्राह्मण नहीं बाँचता
बीती हुयी बातको याद नहीं करना चाहिये।
मिलाओ—१ बीती ताहि बिसार दे आगेकी सुध लेय
2 Let by gones be by gones

६३६—गयी भूतने हेला पाड़े
गयी हुयी भूतको आवाज देकर बुलाना है।
गयी हुयी आफतको सिरपर लेना।

६३७—गयो तो ही गळो करावणने, कोंच माथे पड़ी
गयी तो थी गला ठीक करानेको कोंच सिरपर पड़ी।
जिस आफतको दूर करनेका यत्न करे वह तो दूर हो नहीं उल्टे और
दूसरी आफत और सिरपर आ पड़े।
मि०—गयी छूटने को आयी खसम
चौबेजी गये छब्बे होनेको दुबे होकर आये

६३८—गयी बातनि घोड़ा ही को नावड़ैनी
गयी बातोंको घोड़े भी नहीं पहुँच सकते।
बीती बात लौटायी नहीं जा सकती।

६३९—गरज गधेने बाप कैवावे
गरज गधेको भी बाप कहलवाती है (गरजके कारण गधेको भी बाप कह
पुकारना पड़ता है)।
गरजके कारण बुरा काम भी करना पड़ता है।

६४०—गरजणा बादळ बरसणा नहीं, भुसणा कुत्ता खाणा नहीं
गरजनेवाले बादल बरसनेवाले नहीं होते और भौंकनेवाले कुत्ते काटनेवाले
नहीं होते।

जो बकवाद करता है वह काम करके नहीं दिखाता।

(देखो कहावत न० ६४८)

६४१—गरज दिवानी हुवै

गरज दीवानी होती है।

गरजमन्द आदमी दीवानेकी तरह काम करता है।

६४२—गरजमन्द मारीजै

गरजवाला मारा जाता है।

गरजवालेको लाचार होकर सब सहना पड़ता है।

६४३—गरज मिटी गूजरी नटी

गरज मिटी और गूजरीने इनकार किया।

गरज निकल जानेपर कोई कुछ नहीं देता।

मि०—गरज-दिवाणी गूजरी आयी अब घर कूद
सावण छाछ न घालनी जेठ परोसै दूध।

३४४—गरज वडी

गरज सबसे बड़ी है।

गरजके कारण मनुष्य सब कुछ करनेको तय्यार हो जाता है।

६४५—गरज बावळी

(ऊपर कहावत न० ६४१ देखिये)

६४६—गरजरा मार्‌या गधेने बाप कैवै

गरजका मारा गधेको बाप कहकर पुकारता है।

(ऊपरवाली कहावत न० ६३९ देखिये)

६४७—गरज सरी'र वैद वैरी

गरज पूरी हुयी और वैद्य (जिसकी अबतक खुशामद की जाती थी) वैरी बन गया।

काम निकल जानेके बाद कोई नहीं पूछता।

१४८—गरजै सो बरसै नहीं बरसै घोर अँधार

जो (बादल) गरजता है वह बरसता नहीं जो घोर काला होता है चुपचाप आता है वह बरसता है।

जो बहुत बातें बनाता है वह कुछ नहीं करता, जो गंभीर होकर चुप र
है वह सब कुछ कर गुजरता है।

१४९—गरीबकी हाय बड़ी मूळसूँ जाय

जो गरीबकी हाय लेता है वह जड़मूलसे नष्ट हो जाता है।

जो गरीबका धन मारता है या गरीबको सताता है उसका नाश
जाता है।

१५०—गरीब रो बेली परमेसर

गरीबका सहायक परमेश्वर है।

मि —नहीं बेली रो राम बेली।

१५१—गरीबांरा भगवान है

गरीबोंके (रक्षक) भगवान हैं।

१५२—गरीबरी हाय खोटी

गरीबकी हाय बुरी।

१५३—गरीबरी जोरू सगळांरी भाभी

गरीबकी जोरू सबकी भौजी (सब मजाक करते हैं)

गरीबका कोई आदर नहीं करता।

१५४—गरीब माथे बोझ मूमरी सभी लादे

गरीब (कमजोर) पर ही बोझे ज्यादा लादते हैं।

गरीबको सभी सताते हैं।

मि —All lay load on the willing horse.

६५५—गळीरा गिंडक ही को बूझैनी

गलीका कुत्ता भी बात नहीं पूछना।

कोअी भी पर्वाह नहीं करता।

६५६—गळेमे हरदम सिगडी जगती ही रैवै

गलेमें हरदम सिगडी जलती ही रहती है।

जो व्यक्ति हर समय क्रोधमें भरा रहे।

६५७—गवर रूससी तो आपरो सुवाग लेसी

गौरो रूठेगी तो अपना दिया हुआ सुहाग ले लेगी (और अधिक क्या करेगी)।

कोअी रूठे तो जो अधिकसे अधिक यह होगा कि जो कुछ हमारे लिये कर सकना सो नहीं करेगा।

६५८—गवर रूससी तो आपरो सुवाग लेसी, भाग तो को लेवैनी

(अूपरवाळी कहावत देखिये)

६५९—गवां भेळा घुण पीसीजै

गेहुओंके साथ घुन भी पिस जाते हैं।

अपराधीके साथ रहनेसे निरपराध भी दण्ड पा जाते हैं।

६६०—गहणा धायांरा सिणगार है भूखांरा आधार है

गहने अच्छी अवस्थावालों (अर्थात् धनियों) के शृङ्गार हैं और भूखोंके सहारे हैं।

अच्छी अवस्था हो तो गहने पहननेसे शोभा बढ़ती है और यदि अवस्था बिगड़ गयी तो अुनको बेचकर निर्वाह किया जा सकना है।

६६१—गहुं आया वाल खेत ब्रणाओ ताल

६६२—गहु खेतमें बेटो पेटमें

गेहू खेतमें, बेटा पेटमें।

अिनकी आशा नहीं रखनी चाहिअे।

६६३—गहुं'र गोपळा रो भेळा ही नीपजै
गेहूं और—तो साथ ही पैदा होते हैं।
अच्छे बुरे सब एक साथ होते हैं।

६६४—गाजररी पूंगी बाजी जिठे बाजी पछै तोड़ खायी
गाजरकी पूंगी बाजी जबतक बजायी फिर तोड़कर खाली।
ऐसी वस्तु जो काम दे और बिगड़ जानेपर भी काम आ सके।
मि०—आम के आम गुठली के दाम।

६६५—गाडी कने बळद आया रहसी
गाड़ीके पास बैल आये रहेंगे (अवश्य आवेंगे)

६६६—गाडी तो चीकणें ही चालै
गाड़ी तो चीकनेपर ही चलती है।

६६७—गाडी देख'र लाडीरा पग सूजै
गाड़ीको देखकर लाड़ीके पैर सूज जाते हैं (अब तक तो पैदल चलती आ रही थी अब गाड़ी देख ली तो कहती है कि मेरे पैर सूज गये हैं, मैं पैदल नहीं चल सकती)।

६६८—गाडी नीचे कुत्तो जैंगे जाणे गाडी म्हारे ही पाण चालै
गाड़ीके नीचे कुत्ता चलता है वो समझता है कि गाड़ी मेरेही सहारे चल रही है।

६६९—गाडी भर धानरी मूठी भर बानगी
गाड़ी भर धान की मुट्ठी भर बानगी।
थोड़ा नमूना ही वस्तुका ज्ञान करा देता है।
मि० सौ मन धानकी, एक मुट्ठी बानगी

६७०—गाडीमें छाजलैरो कांई भार
गाड़ीमें छाजका क्या भार।

६७१—गाढवाळेमे रहसी जको राजाजीरा घोड़ा पासी

जो गाढ़वालेमें रहेगा वह तो राजाजीके घोड़ोंको पिळावेगा ही (अुसे पिलाना ही पड़ेगा)।

६७२—गादड़ मारी पालथी मेहां वूठां हालसी

गीदड़ने पालथी लगा ली अब तो मेह बरसनेपर ही वह हिलेगा।

जब कोअी आदमी जमकर बैठ जाय और चलना न चाहे

जब कोअी काम करनेका हठ पकड़ ले।

६७३—गादड़ेरी मौत आवे जरां गांव कानी भाजै

गीदड़की मौत आती है तब वह गांवकी ओर भागता है (जहां वह कुत्तों का शिकार बनता है)।

जब होनहार खराब होती है तो अुलटी बुद्धि आती है और स्वयं अनिष्ट की ओर अग्रसर होता है।

६७४—गाय गयी गळांवडो लेगी

गाय गयी और साथमें गलांवडा भी ले गयी।

६७५—गाय घाससूं भायेला कर तो खावै कांअी ?

गाय घाससे दोस्ती करे तो खाय क्या ?

६७६—गाय दू'र गधांने पावै

गायको दुहकर गधोंको पिलाता है।

६७७—गायमे न बळधमे

न गायमें न बैल में।

निकम्मा आदमी।

६७८—गाय रे भैंस कांअी लागै ?

गायके भैंस क्या लगे ?

जब परस्पर कोअी रिश्ता न हो।

१७९—गायां मूडरगी पोटा छारे छोडगी

गायें मुड़कर गयीं गोबर पीछे छोड़ गयीं।

१८०—गायां तो धण्यांरी है गुवाळियेरे हाथमें तो गेडियो है

गायें तो अपने मालिकोंकी हैं ग्वाले (चरानेवाले) के पास अपनी तो केवल लकुटिया है।

जो कुछ संपत्ति दिखायी देती है सब दूसरोंकी है अपनी तो रखवाली है।

१८१—गायां बायां बामणां आगा ही भला

गायों स्त्रियों और ब्राह्मणोंके आगे आपना ही अच्छा

जिनसे हार मान लेना अच्छा क्योंकि जिनपर विजय पाना भी कलंकका चिह्न है।

१८२—गाळ धाप रो कितोक आंतरो

गाळ और धमकानेमें कितना अन्तर।

१८३—गाळ्यांसूं किसा गूमड़ा हुवे

गालियोंसे कौनसे गुमड़े होते हैं।

गालीको चुपचाप सुन लेनेमें कौनसी हानि है।

१८४—गावणो तो आवै नी गावणरो चाओ आवै है

गाना नहीं आता, गानेका चाव आता है।

गानेका शौकीनपना।

१८५—गावणो र रोवणो कुण को जाणे नी

गाना और रोना कौन नहीं जानता।

१८६—गांठ मरै 'र सरायमें डेरा

दम कम रहे हैं और सरायमें डेरा करना है।

६८७—गांड तपै जद सूत कतै

(बैठे-बैठे) गांड तप जाती है तब कहीं जाकर सूत कतता है ।

बड़ी मेहनतसे यह काम होता है ।

६८८—गांड बळै है कन सभाव है

गांड जलती है (ईर्षा होती है) या स्वभाव ही अैसा है ।

हमेशाका यही स्वभाव है या अभी कारण विशेषसे क्रुद्ध हुअे हो ।

६८९—गांडमें कीड़ो है

गांड़में कीड़ा है ।

चचल आदमी पर जो टिककर बैठ नहीं सकता ।

६९०—गांडमें गू ही कोनी कागळांमे नोंता देवै

गांड़में गू ही नहीं, कौवोंको न्योता देता है ।

पासमें कुछ नहीं और काम करनेको तैयार हो जाना ।

६९१—गांडरो गड फळसेरो लहणायत

गांड़का फोड़ा और दरवाजेपर रहनेवाला (पड़ोसी) लेनदार दोनों महा दुःखदायी होते हैं ।

६९२—गांड लगी फटने खैरात लगी बटणे

गांड फटने लगी तो खैरात बांटने लगे ।

आपत्ति आनेपर मनुष्य धर्म-कार्य करता है ।

६९३—गांव करै ज्यूं गैली करै

जैसे गांव (के लोग) करते हैं वैसे ही बावली करती है ।

समाजके अनुसार व्यक्ति आचरण करता है ।

६९४—गांव कोटवाळी आप ही सिखाय दे

गांव कोतवाली करना खुद ही सिखा देता है ।

९७९—गायां भूखरगी पोठा सारे छोडगी

गायें भूखर गयीं गोबर पीछे छोड़ गयीं।

९८०—गायां तो धण्यांरी है गुवाळियेरे हाथमें तो गेडियो है

गायें तो अपने मालिकोंकी हैं ग्वाले (चरानेवाले) के पास अपनी तो केवल लकुटिया है।

जो कुछ सपत्ति दिखायी देती है सब दूसरोंकी है अपनी तो रखवाली है।

९८१—गायां बायां बामणां आगा ही भळा

गायों स्त्रियों और ब्राह्मणोंके आगे मापना ही अच्छा

जिनसे हार मान लेना अच्छा क्योंकि जिनपर विजय पाना भी कलंकका विषय है।

९८२—गाळ थाप रो किसोक आंतरो

गाल और तमाचेमें कितना अन्तर।

९८३—गाळ्यांसैं किसा गूमड़ा हुवे

गालियोंसे कौनसे गुमड़े होते हैं।

गालीको सुनकर सुन लेनेमें कौनसी हानि है!

९८४—गाळ्यां को आवे नी गाबजरो माम्मी आवे है

गाना नहीं आता गानेका मामी आता है।

गानेका मामी=रोना।

९८५—गावणो र रोवणो कुण को आवे नी

गाना और रोना कौन नहीं जानता।

९८६—गांड मरे 'र सरायमें डेरा

दस्त लग रहे हैं और सरायमें डेरा करता है।

७००—गांवरी गधी ही को बूझैनी

गांवकी गधी भी नहीं पूछती।

७०१—गांवरी साख बाड भरै

गांवकी गवाही बाड़ भरती है (बाड़ देखकर पता चल जाता है कि गांव कैसा है)

७०२—गांवरी सोभा ब्राड ही केवे है नी

गांवकी शोभा बाड ही बतला रही है न ? (व्यंग)

७०३—गिंजी माथो गुंथावणने चाली

गजी माथा गुँथानेको चली !

बिना शक्तिके कार्य करना।

७०४—गिंजीरै भागरा गडा पडे

गजीके भागसे ओले गिरते हैं।

अभागेके लिओ।

७०५—गिंजेने परमात्मा नख कांयने देवे

गजेको परमात्मा नख काहेको दे।

बुरा काम करनेवालेको परमात्मा अुसके करनेके साधन नहीं देता।

७०६—गिंडक नारेळ सार कांओ जाणै

कुत्ता क्या जाने कि नारियल कैसा है।

७०७—गुड ठोके गुलगुलासूँ परेज

गुड़ खाता है और गुलगुलोंसे परहेज करता है।

बनावटी परहेज करनेवाले पर।

७०८—गुड दियां मरै जकेने जहर क्यूँ देणो

जो गुड़ देनेसे मरे अुसे जहर क्यों देना

जब मीठी बातोंसे काम बने तो कड़े अुपाय काममें क्यों लावे

जब कोई गाँवका कोतवाल हो जाता है तो कोतवालीका काम स्वयं सीख जाता है पहलेसे न जानता हो तो भी।

जब काम करना पड़ता है तो आदमी अपने आप उसका करना सीख लेता है।

मि०—Necessity is the mother of invention.

९६५—गाँव गैलेने को गिणै नी गैलो गाँवने को गिणैनी।

गाँव पागलको नहीं गिनता, पागल गाँवको नहीं गिनता।

तुम हमारी पर्वाह नहीं करते तो हम तुम्हारी पर्वाह नहीं करते।

९६६—गाँव गयो सूतो जागै

दूसरे गाँव गया हुआ व्यक्ति सोता है या जागता है जिसका कुछ पता नहीं।

बाहर गया हुआ आदमी क्या करता है किस अवस्थामें है और कब कैसेका किस किस्समें कुछ नहीं कहा जा सकता।

९६७—गाँव जठै ढेढवाड़ो

जहाँ गाँव होता है वहाँ ढेढवाड़ा—चमारोंका मुहल्ला-भी होता है अच्छी वस्तुके साथ बुराई कुछ-न-कुछ होती ही है।

९६८—गाँव बसायो बाणिये बसे जद जाणिये

बनियेने गाँव बसाया तो है पर वह बस जाय तभी समझो।

(१) बनिया कोई भी काम नहीं कर सकता। वह कोई काम कर सकता है जिसका निश्चय तभी हो सकता है जब कि वह करके दिखा दे।

(२) कैसे व्यक्तिसे जिससे कोई काम होनेकी आशा नहीं।

९६९—गाँव बस्यो ही कोनी मँगता पहली ही आयग्या।

गाँव तो बसा ही नहीं और मँगते पहले ही आ गये।

७००—गांवरी गधी ही को बूझेनी

गांवकी गधी भी नहीं पूछती ।

७०१—गांवरी साख वाड भरे

गांवकी गवाही वाड भरती है (वाड देखकर पता चल जाता है कि गांव कैसा है)

७०२—गांवरी सोभा वाड ही केवे है नी

गांवकी शोभा वाड ही बतला रही है न ? (व्यंग)

७०३—गिंजी माथो गुंथावणने चाली

गंजी माथा गुँथानेको चली ।

बिना शक्तिके कार्य करना ।

७०४—गिंजीरे भागरा गडा पडे

गंजीके भागसे ओले गिरते हैं ।

अभागेके लिअे ।

७०५—गिंजेने परमात्मा नख कांयने देवे

गंजेको परमात्मा नख काहेको दे ।

बुरा काम करनेवालेको परमात्मा अुसके करनेके साधन नहीं देता ।

७०६—गिंडक नारेळ सार कांअी जाणे

कुत्ता क्या जाने कि नारियल कैसा है ।

७०७—गुड ठोके गुलगुलासूं परेज

गुड़ खाता है और गुलगुलोंसे परहेज करता है ।

बनावटी परहेज करनेवाले पर ।

७०८—गुड दियां मरे जकेने जहर क्यूं देणो

जो गुड़ देनेसे मरे अुसे जहर क्यों देना

जब मीठी बातोंसे काम बने तो कड़े अुपाय काममें क्यों लावे

७०९—गुड़ घालसो जिसो मीठो हुसी

जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा

जितना खर्च करोगे उतना ही काम अच्छा बनेगा।

७१०—गुड़ देतां ही खोरी हुवे जरां पछै कांई करै?

गुड़ देनेपर भी खांसी ही पैदा हो तो फिर क्या करे?

७११—गुपतदान महा पुन

(१) गुप्तदानसे बड़ा पुण्य होता है

(२) चुपचाप काम करनेसे सिद्धि होती है।

७१२—गुरु कीजे जाण, पाणी पीजे छाण

गुरु समझ बूझकर करना चाहिये और पानी छानकर पीना चाहिये

७१३—गुरु बिना किसो ग्यान

गुरुके बिना ज्ञान कैसा

बिना गुरुसे शिक्षा लिये सच्चा ज्ञान नहीं हो सकता

७१४—गुरु बिन मिळे न ग्यान

गुरुके बिना पूरा और सच्चा ज्ञान नहीं मिलता

७१५—गुररा न पीररा

न गुरुके न पीरके

कृतघ्न व्यक्ति पर

७१६—गुरुजी, चेला भोत हुग्या। कै—बचा, भूखां मरेंगे तो आप ही चले जावेंगे।

गुरुजी, चेले बहुत हो गये।

गुरुजीने उत्तर दिया कि—जब भूखों मरेंगे तो स्वयं ही चले जायेंगे।

७१७—गुड़ नहीं गुड़भाटी नहीं गुड़सूं मीठी जीभ नहीं

गुड़ नहीं, गुड़की डळी भी नहीं तो जीभपर गुड़से मीठी

जो जीभ है वह भी नहीं।
भलाभी करना तो दूर रहा, मीठा बोलना भी नहीं।

७१८—गुळ विना चोथ किसी
गुडके विना चौथ (का त्यौहार) कैसा

७१६—गुळ लारे तमाखू वळै
गुड़के पीछे तमाखू जलती है
सगतका दोष लगता है

७२०—गुल हुवै जठे माख्या आयी रेव
जहां गुड होता है वहा मक्खियां आयी रहती है
जहां कुछ मिलनेकी आशा होती है वहा लोग अवश्य जाते है।

७२१—गू खाया काळ थोडो ही नीकळै
गू के खानेसे अकाल थोड़े ही बीत जायगा
निंद्य साधन अख्तियार करनेसे गुजर कहां तक चल सकता है

७२२—गूदडीमें किसी लालको नीपजैनी
गुदड़ीमें कौनसे लाल नहीं पैदा होते
गरीबोंके यहां भी महापुरुष जनमते हैं

७२३—गू सूँ गू थोडी ही धुपै
गू से गू थोड़े ही धुल सकता है?
नीचताके बदले नीचता करनेसे क्या लाभ।

७२४—गूगस्यांरा गोठिया खाय पीने अूठिया

७२५—गूँगली ही फण करै
गूंगली भी फन करती है
अशक्त व्यक्ति सामना करनेको तय्यार हो जाय

७२६—गूँगेरी फारसीमें गूँगो ही समझै
गूंगेकी फारसीमें गूंगा ही समझ सकता है

७२७—गोडिया रळग्या
लकुटियां मिलकर मजबूत हो गयीं
पजबूत गोठाका हो गया

७२८—गैला कुत्ता हिरणां लारे दौडे
पागलके कुत्ते हिरनोंके पीछे दौड़ते हैं (जो अुनकी पकड़में नहीं आ सकते)
पागलोंका—मूर्खोंका—विश्वास मत करो

७२९—गैला-गैला, गांव मती बाळजे के भली सिखारी
अरे पागल, गांव मत जला देना। कि अच्छी याद दिलायी
कुछ या मूर्ख व्यक्ति जिस कामके करनेसे रोका जाता है अुसीको करता है।

७३०—गैलांरे किस्या सींग लागै
पागलोंके कौनसे सींग लगते हैं

७३१—गैली सबसूं पैली
पागली सबसे पहले

७३२—गैलेने गाळ सिखायी तो के आ कुम्हारेरी सिखायी
पागलेको गाली सिखायी तो बोला कि यह कुम्हारकी मार कहाँ खायी,
मूर्ख पर।

७३३—गीगोजेरै पापसूं पीपळी बळै
गुगिरेके दोषसे पीपल जलता है
दुष्टके साथ रहनेसे निरपराध भी मारा जाता है।

७३४—गीगो गायो गीतांरा अंत आयो
गीगा गाया और गीतोंका अन्त आया
गीगा एक गीतका नाम है जो सबसे अन्तमें गाया जाता है

७३५—गोडा तो पगांने ही निवसी

गोड़े—घुटने—तो पैरोंकी ओर झुकेंगे

अपने ही आदमीको सब चाहते हैं।

७३६—गोधा गोधा अडवड़ै 'र वांठांरो खोगाळ

गोधे—साड़—आपसमें लड़ते हैं बीचमें वांठोंका नाश हो जाता है

बड़ोंके झगड़ेमें छोटोंकी हानि हो जाती है।

७३७—गोरवें ही गहू ब्रावणा

७३८—गोला किसका गुण करै ओगणगारा आप

(१) गोला जाति पर

(२) सदा बुराई करनेवालेपर

७३९—गोलां घर भेळ दियो

गोले जिस घरमें रहते हैं अुसका नाश हुअे बिना नहीं रहता

७४०—गोली रांड पराया धोवती फिरै, आपरा धोवती लाजां मरै

गोली रांड़ पराया मैल धोनी फिरती है पर अपना धोनी हुअी लाजों मरती है

दुनिया भरका काम करते रहना पर अपना काम न करना।

७४१—गोहरी मौत आवै जरां, ढेढरा खाल्डा खडवडावै

गोहकी मौत आती है तब वह चमारके चमड़ोंको खड़खड़ाती है

मि०—गादड़े री मौत आवै जद माव कानी भाजै

७४२—घघूरे भाठेरी लागी

उल्लूके पत्थरकी लगी।

थोड़ेसे कष्टसे कूकनेवाले व्यक्तिपर व्यंग।

७४३—घटत-वधतरी छियां है

घटनी बढ़तीकी छाया है।

सुख-दुख आते जाते ही रहते हैं।

७४४—धकती-धकती धाड़में धकगी
धकाती धकाती धाड़में चली गई।
निकम्मे व्यक्तिके प्रति।

७४५—घड़े सरीखी ठीकरी माँ सरीखी डीकरी
घड़े जैसी ठिकरी माँ जैसी कन्या।
सन्तान माताके (माता-पिताके) अनुरूप होती है

७४६—घण जायाँ कुळ-हाण घण वूठाँ कणहाण
बहुत पुत्र होनेसे कुलकी हानि होती है बहुत बरसनेसे अनाजकी (खेतीकी)
अधिक संतान और अधिक वर्षा किसी काम की नहीं।

७४७—घण जीतै हो लखमणा
संगठनमें महाशक्ति होनेसे विजय प्राप्त होती है।
अधिक आदमियों के मेलसे विजय प्राप्त होती है।

७४८—घणा ऊँधा मोटा केर आयो है
किसी भाग्यशाली पुरुषके प्रति।

७४९—घणा गोळा कोटड़ी सूनी
बहुतसे गुलामोंके रहते भी (मालिक-ठाकुरके बिना) कोटड़ी सूनी है।

७५०—घणा घरांरो पावणों भूखो मरै
अनेक घरोंका पाहुना भूखा मरता है।

७५१—घणी गई थोड़ी रही सो भी जावणहार
उमरके लिए किसी वृद्धका कथन।

७५२—घणी ताणी टूटै
अधिक खींचनेसे (डोरी) टूट जाती है।

७५३—घणी चतराई कूएड़े में पड़े
अधिक चतुराई कूएमें पटकती है।

बहुत ज्यादा चतुर बननेवालेपर व्यग ।

७५४—घणी दार्यां जापै रो नास करै

बहुत दाइयां जच्चेका नाश करती हैं

मि०—बहुतै जोगी मठ उजाड़

Too many corks shoil the broth

Too many cooks spoil the Dinner

७५५—घणी सराही खीचडी दांतांसूं चिप ज्याय

अधिक सराही हुई खिचड़ी दांतोंके चिपती है ।

अधिक शोभा करनेसे इतरानेवाले पर व्यग ।

७५६—घणी सैणपमें किरकिर पडै

अधिक सयानपमें धूल पड़ती है ।

७५७—घणो खावै घणो मेद

जो अधिक खाता है उसका मेद अधिक बढ़ता है ।

अधिक खानेसे चर्वी बढ़ती है (बुद्धि नहीं)

७५८—घणो [illegible]वै जाको घणो मरै

अधिक भोग भोगनेवाले की इच्छा भोग में बनी ही रहती है ।

७५९—घणो घी भींतारे लगावणने को हुवैनी

घी अधिक हो तो वह भीतोंपर लगानेके लिये नहीं होता ।

किसी वस्तुका सग्रह अधिक हो तो उसको लुटाना या व्यर्थ नाश करना नहीं चाहिए ।

७६०—घणो स्याणो कागलो जको गूमें चांच डबोवै

अधिक सयाना कौवा होता है जो गूमें चोंच डुबोता है ।

अधिक सयाना बननेवालेपर व्यग ।

७६१—घणो हेत टूटणने बडी आंख फूटणने

अधिक प्रेम टूटनेके लिए होता है ।

जिनमें बहुत अधिक प्रेम होता है वह कभी-न-कभी रूठ जाता है या विरोधमें परिणत हो जाता है।

Friendship that flames goes out in a flash
Hot love is soon cold

७१२—घणो हेत लड़ाईरो मूळ
अधिक प्रेम लड़ाईको जड़ है।

७१३—घर आयो नाग न पूजिय बांबी पूजण जाय
घर आये नागको नहीं पूजती बांबी पूजा करनेको जाती है।
सहजमें अवसर प्राप्त होनेपर लाभ नहीं उठानेवालेके प्रति।

७१४—घरवाळांने चोरी है जिसी पारकांने कोनी
घरवालों पर जितनी जिम्मेवारी होती है उतनी परायों पर नहीं होती।

७१५—घर आवती लिछमीने ठोकर नहीं मारणी
घर आती हुई लक्ष्मीको ठोकर नहीं मारना चाहिए।
धन या कोई लाभदायक वस्तु स्वयं मिल रही हो तो ले लेना चाहिए।

७१६—घर कहै मने खोल जोय। ब्यांव कहै मने मांड जोय
घर कहता है कि मुझे खोलकर तब देख और विवाह कहता है कि मुझे करके तब देख (विचार कि कितना खर्च हुआ)
घर बनवाने और विवाह पूरा करनेके खर्चका ठीक पता बादमें ही लग सकता है। पहले किये हुए अन्दाजसे हमेशा अधिक खर्च होता है।
Building and marrying children are great wasters

७१७—घर-घर माटीरा चूल्हा है
घर घर मिट्टीके चूल्हे हैं।
सबका वही हाल है।
किसीसे देखा सहायताकी आशा नहीं रखनी चाहिये क्योंकि सबको पहले अपने कुटुम्बके निर्वाह की फिकर रहती है।

७६८—घर काणी मीठपर है।

घर कानी पीठपर है।

वहुत दूर स्थान है। वस्तीसे अलग स्थान।

७६६—घरका जोगी जोगिया आण गाँवका सिद्ध

घरके जोगी जोगिये कहलाते हैं बाहर गाँवके जोगी सिद्ध कहे जाते हैं।

मि०—(१) अति परिचयादवज्ञा भवति

Familiarity breeds contemp'

७७०—घरकी मुरगी दाळ बरोबर

घरवालोंकी कद्र नहीं करनेपर।

७७१—घर-घर ढोलकी घर-घर तान उसका नाम हिन्दुस्तान।

हिन्दुस्तानके अनैक्य पर।

७७२—घर जाय घररांसूँ माँचो जाय माईसूँ

७७३—घर तो घाँचीरो ही वळसी पर सोरा तो ऊँदरा ही को रहैनीं

घर तो घाँचीका भी जल जायगा पर सुखसे तो चूहे भी नहीं रहेंगे।

अपकार करनेवालेके प्रतिशोध की भावना जागृत हो जाती है।

७७४—घर दूर घटी भारी

घर अभी दूर है और सिरपर भारी चक्की है।

कामसे जी चुरानेवालेके प्रति व्यंग।

आलसी व सुस्तके प्रति व्यंग।

७७५—घर-फाटूयेने कारी नहीं

घर फटेको कारी नहीं।

घरमें फूट पड़जानेसे उसका नाश हो जाता है।

७७६—घर फूट्याँ घर जाय

घरमें कोई फूट जाय तो घरका नाश हो जाता है।

घरकी फूट बुरी है।

७७७—घर बळती को दीसे नी डूँगर बळती दीस ज्याय

घरमें जलती आग नहीं दिखाई देती पहाड़पर जलती आग दिखाई दी जाती है।

अपने दोष नहीं दिखाई देते परके दोष दिखाई दे जाते हैं।

७७८—घर बैठी गंगा आई

घर बैठे गंगा आई।

बिना परिश्रमके लाभ हुआ।

७७९—घरमें ऊँदरा डड्ड्या करे है

घरमें चूहे खेलते हैं।

घरमें कुछ भी नहीं है। बिल्कुल गरीब है।

७८०—घरमें तो फाका पड़े मोडा मूँडण जावे

घरमें तो फाके पड़ते हैं और फकीरोंको न्योता देने जाता है।

७८१—घरमें तो मूँज्योड़ी साँग ही कोनी

घरमें तो भुनी भाँग भी नहीं।

पासमें कुछ भी नहीं।

७८२—घरमें नाणा बींद परणीजे काणा

घरमें पैसा हो तो काने लड़केका भी विवाह हो जाता है।

पैसेसे सब कुछ हो जाता है।

७८३—घरमें नहीं भसळरा बीज, कोठो लेसे आम्बालीस

पासमें कुछ न होनेपर भी भारी वेष बनाना।

७८४—घरमें भूखाजी डड्ड्या करे

घरमें कुछ नहीं है।

७८५—घरमें रामजीरो दीन है

पूर्ण शान्ती है।

७८६—घरमें रामजीको नाव है

घरमें रामजीका नाम है।

कुछ नही है।

७८७—घरमे राम रम

घरमे बाल-बच्चे व सुख है।

७८८—घरमें हाण जगतमे हांसी

घरकी हानि होती है जगत हँसी उड़ाता है।

दो दो हानियां।

७८९—घरमें हुवै सँवार तो झख मारो गँवार

घरमें सवार हो तो गँवार चाहे झख मारो

घरमें लाभ होता हो तो गँवारोंकी बदनामीसे नहीं डरना चाहिये

७९०—घरराा छोरा घंटी चाटै ओझेजीने आटो

घरके बच्चे चक्की चाटते हैं और ओझाजीको आटा चाहिये

७९१—घरराा टाबर कुँवारा फिर पाडास्यांने फेरा भावै

घरके बच्चे कुंआरे फिरते हैं पड़ोसियोंको फेरे चाहिए

७९२—घरराा ही देवता घरराा ही पुजारी

घरके ही देवता घरके ही पुजारी

सब प्रकारकी सुविधा मिलनेपर

७९३—घररी खांड करकरी लागै चोरीरो गुड मीठो

घरकी खांड़ करकरी लगती है चोरीका गुड मीठा लगता है

घरकी अच्छी वस्तुका तिरस्कार करके मुफ्तके मालपर आंख लगानेवालेके प्रति व्यंग

७९४—घररी रोटी बारे खावणी है

घरकी रोटी बाहर खाना है

७९५—घररा छोरो बाहररो बींद
घरका छोरा बाहरका बींद

७९६—घररो भेदी चोर
घरका भेदी चोर होता है

७९७—घररो सामी सूँठरो गांठियो

७९८—घरे घाणी तेली लूखो क्यों खावै
घर घानी फिर तेली रूखी रोटी क्यों खाता है
The tailor's wife is worst clad

७९९—घरे घोड़ो 'र पाळो जावै
घरपर घोड़ा और फिर पैदल जाता है

८००—घरे धीणोर लूखो खाय
घरमें दूध-घी और रूखी रोटी खाता है

८०१—घायलरी गत घायल जाणे
घायलकी गतिको घायल ही जानता है
जिसपर बीतती है वही जानता है।

८०२—भाव वैरी रो ही सरावणो चोखो
भाव बैरीका भी सराहना चाहिए
बैरीकी भी अच्छी बातकी तारीफ करना चाहिये।

८०३—घाव माथै लूण बुरकावै
घावपर नमक छिड़कना है
दुखीको और दुख देने या बुरी बात सुनाने पर

८०४—घी आंगळियां गुड़ बांहळियां
घी उँगलियोंसे गुड़ बांहोंसे
जैसी चीज वैसा उपयोग

८०५—घी इँधारेमें ही छानो को रहैनी

घी अंधेरेमें भी छिपा नहीं रहता

अच्छाई छिपी नहीं रहती

८०६—घी खायां आँख्यारी जोत वधै

घी खानेसे आँखोंकी ज्योति बढ़ती है

घी खाना नेत्रोंकी दृष्टिके लिए लाभकर है

८०७—घी घालै जितो (पाठान्तर–जिसो) ही स्वाद

जितना घी डाला जाता है उतना ही स्वाद होता है

८०८—घी जाटरो तेल हाटरो

घी जाटका तेल बाजारका (लेना चाहिये)

८०९—घी ढुळ्यो तो मूगांमें

घी लुढ़का तो मूँगोंमें ही।

खर्च लगनेसे घरवालोंको ही लाभ पहुचनेपर।

यह पूरी कहावत इस प्रकार है —

भाई रो धन भाई खायो बिना बुलाये जीमण आयो

आखड़ियो पण पड़ियो नईं घी ढुलियो तो मूगां मईं

८१०—घी बिना लूखो कंसार टाबर बिना लूखो संसार

घी बिना कसार रूखा सतान बिना संसार रूखा।

संतान ही ससारका सच्चा आनन्द है।

८११—घी सुधारै सागने नाँव बहूरो होय

घीसे साग सुधरता है पर नाम होता है बहूका (जो भोजन बनाती है)

८१२—घोडा गणगोरांने ही नहीं दौड़सी तो फेर कद दौड़सी

घोड़े गनगोरको ही नहीं दौड़ेंगे तो फिर कब दौड़ेंगे।

विवाहादि अवसरोंपर शक्तिके अनुसार खर्च नहीं करने पर।

८१३—घोड़ो दोड़-दोड़ मरै सवार री हाँस ही को पूरीजैनी
घोड़ा दौड़-दौड़कर मरता है पर सवार की हौंस ही पूरी नहीं होती
कामकी बेकदर

८१४—घोड़ानि घर किती दूर
घोड़ोंको घर कितना दूर

८१५—घोड़ा चरनोळांने ओळेंगे कहै चिरतो खाये
घोड़ा जिसके पीनेके लिए चाहिये और तू कहता है कि औटते हुए खाना
खाकरपर लगाम न देनेपर ।

८१६—घोड़ी री लांबी हुसी तो आपरी ढकसी
घोड़ीकी लम्बी होगी तो अपनी ढका लेगी
समर्थ व्यक्ति अपने ही बेटों-पोतोंको काम पहुंचाता है (दूसरोंको नहीं, ऐसा तो कोई विरला ही होता है)

८१७—घोड़े ही बेगा चढावे गधे ही बेगा चढावे
घोड़ेपर भी जल्दी चढ़ाते हैं और गधेपर भी जल्दी चढ़ाते हैं
जो व्यक्ति जल्दी रुष्ट हो जाय और जल्दी प्रसन्न हो जाय उसके लिए।
मि॰—क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा

८१८—घोड़ा पाससूं हेत करे तो लात कैने
घोड़ा पाससे प्रेम करे तो लाते किसे
मि॰—पाख पास सु मामला करे तो लात कैने

च

८१९—चट मेरी मँगणी, पट मेरा व्यांव

चट मेरी मँगनी और पट मेरा विवाह (मगनीके होते ही विवाहकर लेना)

जो काम तुरत-फुरत हो उस पर।

८२०—चढणो जितो ही उतरणो

जितना चढ़ना उतना ही उतरना

सुख भोगा उतना दुख भी भोगना पड़ता है

८२१—चढसी सो पडसी

चढ़ेगा सो पड़ेगा

उन्नतिके बाद अवनति होती है

८२२—चढीपर चढाव, सिर दूख ना पांव

पी हुईपर फिरसे पीनेसे शरीर स्वस्थ रहता है। भगेड़ियोंकी उक्ति।

८२३—चढी हांडीनें ठोकर नहीं मारणी

चूल्हेपर चढ़ी हाँडीके ठोकर नहीं मारना चाहिए

चालू धन्धेको व्यर्थ ही नहीं छोड़ देना चाहिए

८२४—चढ़ै दरबार, जाय घरबा

जो दरबार अर्थात कचहरी चढ़ता है उसका घर नाश हो जाता है

मुकद्दमेबाजीकी निंदा

८२५—चतरने इसारो घणो

चतुरको इशारा काफी है

मि०—भले आदमीको एक बात भले घोड़ेको एक चाबुक

To the wise a word may Suffice

८२६—चतररी च्यार घड़ी मूरखरा जमारो

चतुरकी चार घड़ी मूर्खका सब जीवन

चतुर थोड़े समय ही में जिस कामको कर सकता है मूरख उसको उम्र भर नहीं कर सकता।

८२७—चतररो एक पोर मूरखरी सारी रात

चतुरका एक पहर मूर्खकी सारी रात

(देखो गुजरातकी कहावत)

८२८—चमड़ो जावपर दमड़ी न जाय

कंजूसके लिए जो शरीर जानेपर भी पैसा नहीं खर्च करता

८२९—चमाररी जोरू छूटी झूली

चमारकी स्त्री होकर छूटी झूली पहने।

साधन सम्पन्न व्यक्तिके बुद्धिपर व्यंग

८३०—चरग्या सूर कुटीज्या पाडा

चर गये सूअर पिटे पाड़े

किसीके अपराधका कोअी दण्ड भोगे।

८३१—चरै फिरै जकेरो काँई मरै

जो चरता फिरता है उसका क्या मरे

जो फिरता है और खाता है वह नहीं मरता।

खाने-पीने और घूमनेवालेकी तन्दुरुस्ती हमेशा ठीक रहती है।

८३२—चाक्कीरो नाम गाडी

चक्कीका नाम गाड़ी है

(१) दुनियाकी नजरी ठीनपर क्यों गाड़ी या गाड़ीका वास्तविक अर्थ चाकी हुई होता है। कि चक्की हुई

(२) जो काम दे वही वस्तु ठीक है। गाड़ी भी यदि चली रहे चक्की न रहे तो काहे की गाड़ी।

८३३—चला 'र करममें भाटो लेवै

अपने आप माथे पर पत्थर लेता है

स्वय आफतमें पड़ना है ।

८३४—चाकरने ठाकर घणा

चाकरको मालिक बहुत

अच्छे नौकरको रखनेवाले बहुत

अच्छा काम करनेवालेको सब रखनेको तय्यार हो जाते हैं।

८३५—चाटूँ तो खारो लागै उखणूँ तो भारा मरूँ

चाटूँ तो खारा लगे सिरपर उठाऊँ तो बोझ मरूँ

जिससे कुछ भी लालच न हो उसके प्रति ।

८३६—चाम प्यारो नहीं दाम प्यारो है

शरीर प्यारा नहीं धन प्यारा है

मनुष्यको कोई नहीं पूछते धनको पूछते हैं ।

धनकी बड़ाई।

८३७—चामरो काँई प्यारो काम प्यारो है

शरीरका क्या प्यारा, काम प्यारा है

काम नहीं करनेवाला आदमी किसीको प्यारा नहीं लगता चाहे वह कितना ही निकट सबधी हो

८३८—चाय करै जकेरा चाकर नहीं जकेरा ठाकर

जो चाहे उसके चाकर जो नहीं चाहे उसके मालिक

चाह करने वालेके चाकर अर्थात् आज्ञानुवर्ती होकर रहना चाहिए इसके विपरीत नही चाहने वाले प्रति ऐसा व्यवहार रखना चाहिए जैसे मालिक नौकरके साथ रखता है ।

८४५—च्यार टका म्हारी गांठी हू हार करूँ कन कांठी

मेरी गाँठमें चार टके हैं ,उनसे मैं हार दूँ या कठी

थोड़ी पूंजी पर अधिक मनसूबे बांधने वालेके प्रति

८४६—चिडपिड़े सुहाग बिचे रँडापो चोखो

वर-वधूमें परस्पर पटनी न हो तो एसे सुहागकी अपेक्षा वैधव्य अच्छा

८४७—चिडयां , मेट लावो

८४८—चिड्यांसूं खेत छाना कोनी

चिडियों से खेत छिपे नहीं हैं

८४९—चिणा जठै दांत कोनी

जहां खानेको चने हैं वहां दांत नहीं

अनुकूल साधन नहीं मिलने पर

८५०—चिणा है जद दांत कोंनी दांत हा जद चिणा कोनी

जब चने हैं तब दांत नहीं जब दांत थे तब चने नहीं थे

(देखो उपर वाली कहावत का अर्थ)

८५१—चितमें न कोई पुटमे

न तो चित ही है और पुट ही

८५२—चिठी ऊँदरा लेग्या

खत चूहे ले गये

बड़ी उमर वाले दुखी तथा अवाछित व्यक्तिके प्रति

८५३—चुगल को चूकैनी और सगळा चूकै है

एक चुगलखोर कभी नहीं चूकता और सब चूक जाते हैं

८५४—चूँच दो जको चुगो ही देसी

जिसने चोंच दी है वह चुग्गा भी देगा

परमात्माने बनाया है तो वह पालन भी करेगा

God never sends mouths but he sends meat

८५५—चूतियाँरा माळ मसखरा खाय
चूतियोंके माल मसखरे खाते हैं
बेवकूफके धन पर मसखरे मौज करते हैं।

८५६—चूल्हेरी लकड़ी चूल्हेमें बळै
चूल्हेकी लकड़ी चूल्हेमें जलती है

८५७—चूहे रा जाया बिल ही खोदसी
चूहेका जाया बिल ही खोदेगा
वंशका स्वभाव नहीं जाता

८५८—चेत चिड़पिड़ो सावण निरमळो
चैतमें यदि वर्षा चिड़ पिड़ लगाये तो सावनमें आकाश निर्मल रहता है।

८५९—चोटी करे धमधम विद्या आवे घमघम
गुरुके यहाँ पढ़नेवाले विद्यार्थियोंकी उक्ति

८६०—चोभूरी सीरी माताजी ही कोनी
चोभूकी (निर्बल या डरपोक) सहायक माताजी (देवी) भी नहीं।
डरपोककी कोई कहाँ तक सहायता करे?
डरपोककी कोई सहायता नहीं करता।

८६१—चोधरी बैठो है, तो तू गुड़ाय दे
कोई मिलनेवाला आया और बोला चौधरीजी, बैठे हैं। चौधरीजी उत्तर देते हैं कि—हाँ बैठा हूँ तो, तू आकर गिरा दे।
जो मुकाबला लेनेको तैयार बैठा हो उसके लिए।

८६२—चोपड़ी 'र दो दो
चुपड़ी हुई रोटी और फिर दो दो?
इससे बढ़कर क्या चाहिए?

८६३—चोपड्यै घडे छांट को लागै नी

चुपड़े घड़ेपर बूंद नहीं ठहरती

गुर्राको दिया हुआ उपदेश व्यर्थ जाता है।

८६४—चोबेजी ग्या छब्बेजी हुवणने दुबे हो 'र आया

चौबेजी गये छब्बेजी होने पर दुबे होकर आये

लाभकी आशासे काम किया पर हानि हुई।

८६५—चोर कने पंडोखली ही कोनी

चोरके पास पडोखली अर्थात् गांठ बांधनेके लिये कपड़ा भी नहीं है
साधनहीनके प्रति।

८६६—चोर चोर कठेई जावो चांद तो ऊपर-रो ऊपर

चोर चोरी करके कहीं जाय, चांद तो ऊपर-का ऊपर

८६७—चोर चोर मासिया भाई

सब चोर मौसेरे भाई है
एक दुष्ट पेशेवाले या एक ही दुष्ट स्वभाववाले व्यक्ति परस्पर मिले रहते है।

८६८—चोर चोरी करै घर आ'र तो साच बोले

चोर चोरी करता है पर घर आकर तो सच बोलता है।

घरवालोंसे बुरी अथवा हानिप्रद बात छिपानेपर

८६९—चोर चोरीसूं गयो तो कांई हेराफेरीसूं ही गयो

चोर चोरी करनेसे गया तो क्या हेरीफेरी करनेसे गया।

जब कोई व्यक्ति सत्संगति आदि किसी कारणसे अपने दुर्व्यसनको छोड़ दे

पर स्वभाववश कुछ-न-कुछ चेष्टा करके उसके अनुकूल किया करे तब कही
जाती है।

८७०—चोरने कह-चोरी कर, कुत्तेने कह-भुस, साहने कह-जाग।

चोरको कहता है चोरीकर, कुत्तेको कहता है भौंक, और मालिकको
कहता है कि जाग।

समसे मिला रहना और आपसमें भड़काना।

८७१—चोरने चोर पकड़ै

चोरको चोर ही पकड़ता है

Set a thief to catch a thief

८७२—चोर बादसाही माल खावै

चोर बादशाहका माल खाते हैं

बादशाहको भी नहीं छोड़ते दूसरोंकी क्या छोड़ें।

८७३—चोररा पग काचा

चोरके पैर कच्चे

चोर डरपोक होता है वह ठहरता नहीं

अपराधी सदा डरता है।

८७४—चोररा पग चोर ओळखै

चोरके पैर चोर ही पहचानता है

८७५—चोररी गत चोर जाणै

चोरकी गतिको चोर ही जानता है

८७६—चोररी दाढ़ीमें तिणखलो

चोरकी दाढ़ीमें तिनका

जब किसी मनुष्यमें कोई अवगुण हो और कोई अपरिचित मनुष्य भी उस अवगुणकी समालोचना उसके सामने करे तो वह उसे अपने ही ऊपर समझकर बिगड़ता है। ऐसे अवसर पर यह कहावत कही जाती है।

८७७—चोररी मां घड़ेमें मूंडो घाल'र रोवै

चोरकी मां घड़ेमें मुँह डालकर रोती है
(छिपकर रोती है नहीं तो प्रकट होनेका डर रहता है)

८७ —चोररी माने हीज मारणी चोखी

चोरकी माको मारना चाहिए (जिससे चोरका जन्म ही न हो)
बुराईके मूलकारणको ही नष्ट करना चाहिए।

८७९—चोररे मनमें चानणो व्रस

चोरके मनमें उजाला रहता है।

चोरके मनमें हमेशा यह खटका बना रहता है कि रोशनी होनेपर कोई मुझे पकड़ न लेवे। मनस्विन चित्तवालेके प्रति।

८८०—चोररो पकड जाररो पकड झूटे आदमीरो कोई पकडे

चोरकी चोरी जारकी जारी पकडी जा सकती है परन्तु झूठे मनुष्यके झूठका पता लगाना बडा कठिन होता है।

८८१—चोररो भाई घंटी चोर

दुर्गुणीका साथी भी दुर्गुणी ही होता है।

८८२—चोरी जारीरो मेणो है मजूरीरो मेणो कोनी

चोरी जारीके लिए ताना दिया जा सकता है मजदूरीके लिए नहीं। मजदूरी करना बुरा नहीं है।

८८३—*चोरीमें मोरी हुगी

चोरी में मोरी हो गई

जब छिपाकर रखी हुई वस्तुको दूसरा उड़ा ले जाय।

८८४—च्यार चोर चोरासी वाण्या कांई कर बापडा एकला वाण्या

चार चोर थे और चौरासी बनिये थे फिर भी चोर बनिये को लूट ले गये। बेचारे अकेले बनिये क्या करें।

बनियों की जातिगत भीरुता पर व्यंग।

८८५—च्यार जणांरी बग्घी ऊपर जासी

मरनेपर चार मनुष्योंके कंधेपर सीढ़ीमें बंधकर ही जाना पड़ता है

८८६—च्यार दिनांरी चानणी फेर अंधारी

चार दिनोंकी चाँदनी फिर अन्धेरी रात

वैभव या सुख थोड़े दिनोंका होता है फिर विपत्ति आती है।

---

* चोरी रो धन मोरीमें जाव

८८७—छदामरो छाजलो टका गंठाइरो

छदामका छाज टका गँठाईका।

जब थोड़े कामपर अधिक खर्च पड़े।

मि॰—पईसरी डोकरी टको सिर-मुंडाई

८८८—छव दांत र मूंडो पोलो

छः दांत और मुह पोपला (कंजूस लिये)

८८९—छाछ ढोलरी बेटी हंसरी

बिगड़ी हुई छाछ और लाड़ प्यारमें पली हुई पुत्री सुधारना मुश्किल है।

८९०—छाज न बोले छालणी तूं क्यां बोले थारे बहोतर सौ छेक

न छाज बोलता है न छलनी। चलनी तू क्यों बोलती है तेरे तो एक सौ बहत्तर छिद्र हैं।

८९१—छाती सटै घेरो जिकैरो कांई मान नोरो

छाती के बराबर घेरा जिसके लिए क्या मान और निहोरा।

बराबरी के लोगोंमें मान-निहोरा करने की आवश्यकता नहीं होती।

८९२—छाती पर केश नाहीं जकेसूं बात नहीं करणी

छातीपर बाल न हो उससे बात नहीं करना

छातीपर बाल होना पुरुषत्वका चिह्न है।

८९३—छुरी छड़ी छतरी छल्लो सदा राखिये पास

छुरी छड़ी छाता और छल्ला ये चीजें सदा साथमें रखना चाहिए।

८९४—छैला छाना ना रहे मैला कपड़ां मांय

मैले कपड़े पहने होनेपर भी छैले छिपे नहीं रहते।

८९५—छोकरो है जठै बहू ही आवै

पुत्र है वहां बहू भी आती है।

८९६—छोटे मूँढे वडी वात

छोटे मुँह बड़ी बात।

छोटेका बढ़ बढ़ कर बातें बनाना।

८९७—छोटे सूँ मोटा हुवै

छोटे से बड़े होते हैं (कोई एकाएक बड़ा नहीं हो जाता धीरे-धीरे उन्नति होती है।

८९८—छोटो जितो ही खोटो

छोटा जितना ही खोटा, छोटे कदवाला आदमी चालाक होता है।

८९९—छोटो बछियो गधेरो ही चोखो

छोटा बछिया गधेका भी सुन्दर।

बाल्यावस्थामें प्रत्येक प्राणी सुन्दर लगता है।

९००—छोडो ईस, बैठो बीस

(खाट की) पाटी छोड़ दो, फिर चाहे बीस आदमी बैठ जाओ पाटीपर बैठनेसे वह टूट जाती है पर यदि पाटीको छोड़कर बैठा जाय तो कई आदमी बैठ सकते हैं, उनके बोझसे खाट नहीं टूटनी।

९०१—जंगल जाट न छेडियै हाटाँ कीच किराड।
रांगड कदे न छेडिये पटकै टांग पछाड॥

जगलमें जाटको न छेड़ो और बाजारमें बनियेको।

राजपूतको कभी मत छेड़ो वह पछाड़ मारेगा।

९०२—जंगळमें मंगळ

९०३—जकै गाँव जावणो नहीं जकैरो मारग क्यूँ बूझणो

जिस गाँव जाना नहीं उसका मार्ग क्यों पूछना।

जिस कामसे मतलब नहीं उसके पीछे क्यों सिर खपाना।

६०४—जग जीत्यो म्हारी काणी, मूंओ हुवे जद जाणी

जग जीता मेरी कानी, मर जाय होय जब जानी।

जब दोनों ओर खोट हो।

६०५—जट बुध नट बुध

जाट और नट की बुद्धि विचित्र होती है।

६०६ जटा बधायां हर मिळे तो बकरा सुर्ग क्यूं जावे नी

जटा बढ़ानेसे भगवान् मिले तो बकरे पेश स्वर्ग क्यों नहीं जाते।

६०७—जठे पड़े मूसळ जठे खेम कुसळ

जहाँ मूसल गिरता वहाँ खेम-कुशल रहती है।

जहाँ मूसल गिरता है वहाँ अनाजको कूट पीस कर रख देता है।

इसी प्रकार जहाँ समर्थ व्यक्ति पहुँचता है वहीं उसे सफलता मिलती है।

६०८—जठे सेर जठे सवा सेर

जहाँ सेर वहाँ सवा सेर।

६०९ जठे सौ जठे सवा सौ

जहाँ सौ वहाँ सवा सौ।

दुनियामें बलवान और महा बलवान दोनों ही मिलते हैं।

६१०—जण जणरो मन राखती वेस्या रहगी बांझ

प्रत्येकका मन रखनेसे वेश्या बांझ रह गई।

जो प्रत्येक मनुष्यको प्रसन्न रखना चाहता है उसका काम कभी नहीं होता।

६११—जणज्या ये टाबर टीकरा हाथोंमें लीज्यो ठीकरा

ए रांडी पुत्र जनना और हाथोंमें ठिकरा लेना।

नालायक पुत्रोंकि अपनी शादी होने पर माता-पिता की सेवा छोड़कर अपनी बहूके वशमें हो जाते हैं।

६१२—जब तक साँसा तब तक आसा

अन्तिम साँस तक आशा रहती है।

६१३—जबरने पूगै सबर

जबरदस्त अथवा जुल्मीके जुल्मोंको धैर्यपूर्वक सह लेना ही ठीक है क्योंकि एक दिन निर्बलकी हायसे जुल्मी नष्ट हो जायगा।

६१४—जबरो मारै र रोवण को दे नी

जबरदस्त मारता है और रोने नहीं देता।

६१५—जबान हारी जिकै जिलम हार्‌यो

जो प्रतिज्ञासे टल गया उसने जीवन व्यर्थ कर दिया।

प्रतिज्ञाका पालन सदा करना चाहिए।

६१६—जमरो बुलावो आईजो पण राजरो बुलावो मत आई जो

यमका बुलावा आवे पर राज्य का बुलावा न आवे।

६१७—जमा लगै सिरकारकी मिर्जो खेलै फाग

खर्च होता है सरकारका फाग खेलता है मिरजा।

पराये खर्च पर आनन्द मनाना।

६१८—जमी जोरू जर राड़रा घर

जमीन, स्त्री और धन ये तीन झगड़ेके घर हैं।

अधिकतर इन्हीं तीनोंमेंसे किसी एकके कारण झगड़ा होता है।

मि०—झगड़ेकी तीन जड़ जन जमीन जर

६१९—जलमरा मँगता नाँव दाताराम

जन्मके मँगते नाम दाताराम।

नामके अनुसार गुण नहीं होता।

६२०—जळमरा साथी है करमरा साथी कोनी

(मा बाप) जन्मके साथी हैं पर कर्मके साथी नहीं।

मा बाप जन्म देते हैं पर कर्म का फल अपना भोगना पड़ता है।

६२१—जळमरो दुखारो नांव सदासुख

जन्मका दुखी नाम सदासुख।

[ऊपर नं ९ ९ की कहावत देखो]

६२२—जळमं सूने जको जाणे

जन्मसे जो मूता है वही जानता है (दूसरा नहीं जान सकता कि उसने जन्ममें मूता है) अक्सर पाप कर्म छुप रह जाते हैं और उनको करनेवाला ही जानता है।

६२३—जवानीमें गधेने ही जोबन चढ़ै

जवानीमें गधेको भी यौवन चढ़ता है।

मि — प्राप्ते तु षोडशे वर्षे शूकरी सुन्दरी भवेत्।

६२४—जवानी रांड गधीने ही आवै

जवानी रांड गधीको भी आती है।

६२५—जहर खावणने ही टको कोनी

जहर खानेको भी टका पासमें नहीं।

बिल्कुल ही गरीब है।

६२६—जहररा कीड़ा जहरमें राजी

विषके कीड़े विषमें ही राजी रहते हैं।

मि०—राज सुहाग छोड़ि भट्टारक, मिश्रीरा विष खात।

६२७—जहरसूं जहर कटै

जहरसे जहर कटता है।

मि —विषस्य विषमौषधम्।

६२८—जाका पड्या सभाव जासी ज वसूँ
नोम न मीठा होय सींचो गुड घी सूँ

जिसका जो स्वभाव पड गया है वह जीव के साथ ही छूटना है। नीम को चाहे घी गुड से सींचो तो भी वह मीठा नहीं होता।

स्वभाव नहीं बदलता।

मि० - स्वभावो दुरतिक्रम
अतीत्य हि गुणान् सर्वान् स्वभावो मूध्नि वर्त्तते।

६२६—जाकूँ राखै साइयाँ मार न सक्कै कोय

परमात्मा जिसका रक्षक है उसको कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।

६३०—जागतेने जगावणो दोरो

जागते हुए को जगाना कठिन है

None so blind as those who wont see
There are none so deaf as those that wont hear

६३१—जाट कहै जाटणी इये गाँव मे रहणा।
ऊँट बिलाई लेयगी हाँजी-हाँजी कहणा॥

जाट कहता है कि जाटनी 'यदि गाँव में रहना है तो रहना तभी हो सकता है कि जब गाँव वाले लोग कहें कि बिल्ली ऊँट को ले गई तो हम भी हाँ में हाँ मिलावें।

किसी जगह रहना हो तो वहाँ के नियमों का पालन करना पड़ता है चाहे वे कैसे ही हो।

किसी आदमी के साथ रहना है तो हाँ मे हाँ मिलानी ही पड़ती है।

६३२—जाट जवाई भाणजा रेवारी सोनार।
इतरा हुवे न आपरा कर देखो उपगार॥

जाट, जवाई और भाणजों की अकृतज्ञता पर।

६३३—आट कठे ठाट

वहाँ आट वहाँ ठाट

६३४—आट आटणीने यारो कोनी आवे अगी गधेड़ीरा कान मरोड़े

जब आग्नीको नहीं पहुँच पाता तब गधीके कान मरोड़ता है

Th v wh p the c t if the m stress does not spin

६३५—आट डूबे धोळी धार

जब धोली धार डूबता है

६३६—आटणो को आयो नी

आटनी मे नहीं बना है = काबर नहीं है।

६३७—आट न जाणे गुण किया विणा न जाणे भेद

६३८—आन्री बेटो कालेकोरी आण

आन्ती बेटी कालाकी को आन

गरीब की शपथ को कोई नहीं मानता

६३९—आग ी बेन्गी कालोबी नीम

बातकी बेटी कालाकी नाम

अबोग्य को सुन्दर नाम बने पर ब्याग।

६४ —आडा सका सदा ही सबरा

जो सते हैं वे सदा ही बलवान होते हैं

मिल-जुलकर रहनेमें बल होता है। एकतामें बल होता है।

मि —Union is st ength

सबे शक्ति कलौयुगे

६४१—जाणे कोई गांवरेने कैवै है

मानो किसी पराये गांववालेको कहते हैं (इसे नहीं कह रहे हैं)

किसीको कहने पर भी जब वह नहीं सुनता तब कही जाती है।

६४२—जाण मारै वाणियो पिछाण मारै चोर

६४३—जात जातरो वैरी

जातिवाला जातिवालेका वैरी होता है

६४४—जात पांत पूछै नहिं कोय, हरकूं भजैस हरको होय

६४५—जात मनायां पगे पडै कुजात मनायां सिर चढै

अच्छी जात मनानेसे पैरों पडती है, कुजात मनानेसे सिर चढ़ती है

६४६—जातरी धारणकी(ढेढ, अछूत) भींट्योड़ो खाऊँ कोनी

जातिकी धाणकी कहती है कि छुआ नहीं खाती

६४७—जातरो कारण नहीं रातरो कारण है

जातिका कारण नहीं रातका कारण है

६४८—जा भैंस पाणीमे

जा भैंस पानीमें

कोई वस्तु लापता हो जानेपर

६४९—जाय जान रह ईमान

जान भले ही जाय पर ईमान रह जाय

ईमान जानसे बढ़कर है

६५०—जाय लाख रह साख

लाखका धन चला जाय पर साख रह जाय

साख सबसे बडा धन है।

६५१—आयोड़ा कदे पगाँ चालसी

(रते) खाये हुए भी कभी पैरोंसे चलेंगे

बार २ कहनेपर भी किसी कामको न करनेवालेके प्रति।

(देखो भाग क्रमाङ्क नं ८ १)

६५२—आलम गुजर ज्याय जुलम रह जाय

आलिम मर जाता है पर जुल्म रह जाता है

जालिम की जुल्मी कमाई बना जाता है वे बने रहते हैं।

६५३—आवणो नहीं जके गाँवरो मारग क्यूँ बूझणो

(देखो ऊपर क्रमाङ्क नं ९ १)

६५४—आँवतोड़ा चाँवतोड़ा, म्हारे बाकेमें बोर मेल दिये

किसी आलसीके पास बेर पड़ा है पर वह आलस्यके मारे उसे मुँहमें नहीं डाल सकता। एक रास्ते चलनेवालेको जाता देखकर पुकारता है कि अरे जानेवाले, आनेवाले, मेरे मुँहमें यह बेर तो रख देना।

आलसीकी उक्ति

नवाब वाजिदअली शाहके आलसियोंकी कथा प्रसिद्ध है।

६५५—आवै सो दिन आवै नहीं

जैसा दिन जाता है वैसा फिर नहीं आता

यही अच्छा दिन है अभी काम कर डालो

६५६—जिण घर बालक उण घर कायका दिवाळा

जिस घरमें बालक है उस घरमें काहेका दिवाला

बालक सबसे बड़ी सम्पत्ति है।

घरमें बालक है तो फिर अच्छे दिन आ सकते हैं।

९५७—जिणरे हाथे हांडी-डोई उणरे हाथे है सब कोई

जिसके हाथमें हँड़िया और कल्छी है उसके हाथमें सभी कोई है।

धनवान् या रसोइये के सब वशमें हैं।

९५८—जितो गुड़ घालसो जितो ही मीठो हुसी

जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा

जितना खर्च करोगे उतना ही काम अच्छा होगा

९५९—जितो बारे जितो ही मांय

जितना बाहर उतना ही भीतर

चालाक व धूर्तके प्रति

९६०—जिसा करै जिसा भोगे

जैसा करता है वैसा ही भोगता है

करनीके अनुसार फल भोगना है

९६१—जिसा नागनाथ बिसा सांपनाथ

जैसे नागनाथ वैसे सांपनाथ

जब दो व्यक्ति एक-से हों।

९६२—जिसा भाईरा मोसाळा बिसा बहनरा गीत

जैसी भाईकी मौसालैकी सामग्री वैसे बहनके गीत (कीर्ति)

९६३—जिसो खावे अन्न जिसो हुवे मन्न

जैसा अन्न खाता है वैसा मन होता है

भोजनका प्रभाव मनपर अवश्य पड़ता है

९६४—जिसो देव बिसी पूजा

जैसा देवता वैसी पूजा

९६५—जिसो देवता विसो पुजारी
जैसा देवता वैसा पुजारी

९६६—जिसो पीवै पाणी विसो हुवै बाणी
जैसा पानी पीता है वैसी ही वाणी होती है

९६७—जिसो सिलाम विसो इनाम
जैसा सलाम वैसा इनाम

९६८—जीभ नहीं हुती तो कुत्ता ही खीरको खावतानो
जीभ नहीं होती तो कुत्ते भी खीर नहीं खाते
(कोई भी बात न पूछता)
अधिक बकनेवालेके लिए कहा जाता है।

९६९—जीमणमें अगाड़ी लड़ाईमें पिछाड़ी
जीमनमें सबसे आगे और लड़ाईमें सबसे पीछे रहना चाहिए

९७० —जीमणो मारे हाथरो हुवो भलांई जहर ही
जीमना अपने हाथसे हो चाहे जहर भी
सदा अपने हाथसे भोजन करना चाहिए।

९७१—जीमता हुवो तो चळू अठै आर करीजो
जीमते हो तो आचमन यहाँ आकर करना
अथवा पहुँचते ही तुरत चले आना।

९७२—जीवणो जिठै सीवणो
जब तक जीना तब तक सीना
जन्म भर काम लगा ही रहता है।

९७३ —जीवतोरी माया है
जीते जीकी माया है
जब तक जीवन है तभी तक यह ठटबाट है

९७४—जीवते सटे मरयोड़ो को देवै नी

जीवितके बदले मरा हुआ नहीं देता

बड़ा कंजूस है

९७५—जीवे जिते कुत्तो भुसावे

जब तक जीना है कुत्ते भोंकाता है

जब तक जीवित है तभी तक नाम चलेगा, साहसहीनके प्रति

९७६—जीवे जिते जंजाळ

जब तक जीता है तब तक जंजाल लगा रहता है

संसारकी चिन्ताएं जीते जीके लगी रहती हैं

९७७—जूंवांरे खायांसूं किसा घाघरा नाखीजे है

जुओंके खानेसे लहँगे कहीं फेंके जाते हैं

लहँगोंमें जुएँ पड़ जायँ तो वे फेंक नहीं दिये जाते।

साधारण कष्टके डरसे अपना काम नहीं छोड़ा जाता।

९७८—जूती जकेरो ही सिर

जिसकी जूती उसीका सिर

किसीका माल छल अथवा चालाकीसे लेकर वापिस उसीको देना परन्तु यह कह कर कि यह मेरा है।

९७९—जेठ-असाढांरा तपै तावड़ा जोगी हुयग्या जाट

जेठ-आषाढकी धूप तपती है जिससे जाट जोगी बन गये

जेठ और आषाढ़के महीनों जाट धूप-कष्टकी परवाह न करके कठिन श्रम करते हैं।

मि०—आसोजांरा तावड़ा जोगी हुयग्या जाट

९८०—जेठ बैसाखांरा तावड़ा लागण दो

जेठ-वैशाखकी धूप लगने दो

पक्का होने दो, कष्टका अनुभव करने दो

९९०—जोगी था सो रम गया आसण रही भभूत

जोगी तो चला गया अब तो उसके आश्रममें भभूत का ढ़ेर पड़ा है।

सत्पुरुषके स्थानान्तर होनेपर भी उसके सुकृत्योंकी सुगन्ध रह जाती है।

९९१—जो जावै गुजरात करम छावणी साथ री साथ

यदि गुजरात भी जाय तो भी कर्म की छावनी तो साथ-की-साथ रहती है।

भाग्य सब जगह साथ लगा रहता है।

९९२—जो धन दीसै जांवतो आधो लीजे बांट

जो सब धन जाता दिखाई दे तो आधा ही बाँट लेनेपर राजी हो जाना चाहिए।

९९३—जोवनिया तूँ भलाँ ही जाज्ये तूँ मत जाज्ये टहरका

हे यौवन तू भले ही चले जामा पर हे नखरे तू मत जाना।

नखराली अधेड़ स्त्री के प्रति व्यग।

९९४—जोहरने जोहरी परखै

जौहर की परीक्षा जौहरी ही कर सकता है।

गुणकी कदर गुणका जाननेवाला ही कर सकता है।

९९५—ज्यांने राखै साइयाँ मार न सकै कोय

जिसको ईश्वर रक्षा करता है उसे कोई नहीं मार सकता।

९९६—ज्यांरा वखत पावणा बाँरा सै काम सुवावणा

जिसका (अच्छा) समय पाहुना होता है उसके सब काम सुहावने होते हैं

अच्छा समय आने पर सब काम अच्छे होते हैं।

९९७—ज्यांरी खावै बाजरी वाँरी भरै हाजरी

जिसकी बाजरी (रोटी) खाय उसीकी हाजिरी भरे।

जो पालता है उसीका काम लोग करते हैं।

पालनेवालेका काम करना ही पड़ता है।

६६८—ज्यूं-ज्यूं भीजै कामळी त्यूं-त्यूं भारी होय

कंबल ज्यों-ज्यों भीगता है त्यों-त्यों भारी होता है।

दिनोदिन बढ़नेवाले कर्जके प्रति।

छोटे आदमीके उच्चपद प्राप्त कर लेनेसे उसमें जो दिनोदिन अहंकार की वृद्धि होती है उस पर उक्त।

झ

९९९—झाड बिछाई कामळी रह्या निमांणे सोय

कबलको झाड कर बिछा लिया और नोची जगहमें सो रहे।

फकीरों का कहना। जब कोई चिन्ता या पर्वाह न हो।

१०००—झाड[1] मान झूंपडी *तारागढ नांव

पौधे जितनी झोंपड़ी और तारागढ़ नाम।

जब छोटी या साधारण वस्तु की अधिक प्रशसा की जाय या जब कोई साधारण व्यक्ति गर्व करे तो कही जाती है।

१००१—झाडे जाय जद ठूठा याद आवै

पाखाने जाय तब लोटा याद आता है।

काम के लिये पहलेसे तय्यारी न की जाय और जब वह काम आ ही पड़े तब उसका उपाय करने लगे।

१००२ झिखत विद्या किसत खेती

लगातार परिश्रमसे विद्या (आती) है और महनतसे खेतो (होती)

१००३—झुकते पालणेरा सै[2] सीरी

झुकते पलनेके सब साथी (होते हैं)।

धनवान्के सब साथी होते हैं। जिधर लाभ हो सब उधर ही झुकते हैं।

१००४—झूठेका मुँह काला

झूठा सदा निन्दनीय है। झूठा सदा हारता है।

पाठान्तर—१ झांट २ सै कोई, सब कोई,

*तारागढ़—अजमेर की एक पहाड़ी चोटीका नाम है।

१००५—झूठे जग पतीजे

झूठे व्यक्तिसे जगत् पतीजता है।

झूठसे सबको भरोसा हो जाता है। सत्यको कोई नहीं पूछता।

१००६—झूठेरी पावड़ी कोनी

झूठ की सीढ़ी नहीं।

सत्य का भरोसा या प्रतिष्ठा।

१००७—झूठे रै पगां कोनी

झूठके पैर नहीं होते उसकी बात निराधार होती है अतः वह टलता रहता है।

झूठा खड़ा नहीं रह सकता। (देखो ऊपर)

Liars have short wings.

ट

१००८—टको लेगी दाई , कूंडो फोड घर आई

टका लेगई दाई, कूंडा फोड़ घर आई ।

मूर्खके लिये कहा जाता है ।

१००९—टका हर्त्ता टका कर्त्ता

सब रुपयेकी माया है ।

१०१०—टको मां-बाप है

टका माता-पिता है ।

पैसा मां-बाप जितना बड़ा है ।

१०११—टांग्यां पिणियारी गावै है

टांगे पनिहारी (नामका गीत) गाती हैं ।

पैर बहुत थक गये हैं ।

१०१२—टांग्यां बिचे टकसाल है

टांगोंके बीचमें टकसाल है । पैसेके लिए व्यभिचार करनेवाली कुलटा

१०१३—टाबर आंखमें घाल्यो रड़कै कोनी

बच्चा आंखमें डालनेसे खटकता नहीं ।

सयाना बालक जिसका आचरण किसीको न अखरे ।

१०१४—टाबरियां ही घर बसै तो बाबो बुढली क्यूँ लावै

बच्चोंसे ही घर बसे तो बाबा बुढ़िया क्यों लावे (व्याह कर)

नौसिखियोंसे काम चलता होता तो अनुभवी लोगोंको कौन पूछता ।

ठ

१०२३—ठण्ठारे री मिन्नी खडके सू थोडी ही डरै

ठठोरे की बिल्ली खड़केसे थोड़े डरती है।

ठठेरेके यहाँ सदा खटाखट होती रहती है। वहाँ रहनेवाली बिल्ली खटखट करनेसे डरकर नहीं भागती क्योंकि वह तो सदा खटखट सुनती रहती है। हमेशा बक झक करनेवालेका भय नहीं लगता।

१०२४—ठण्ढो न्हावै तातो खावै ब्यांरे वैद कदे नहिं आवै

(जो) ठढे पानीसे स्नान करता है, गर्म अर्थात् ताजा भोजन करता है उसके (यहा) वैद्य कभी नहीं जाता।

ऐसा मनुष्य कभी बीमार नहीं पड़ता—

१०२५—ठंडो लो ताते ने खावै—

ठढा लोहा गर्म (लोहे) को खा जाता है।

जो क्रोध नहीं करता वह क्रोधीसे अच्छा रहता है।

१०२६—ठगांरे किसी मासी

ठगोके कौनसी मौसी

ठग या बदमाश किसी सम्बन्धका ख्याल नहीं करते वे सभीको ठग लेते हैं।

१०२७—ठगायांसूँ ठाकर हुवे (# पा० वाजं)

ठगानेसे ठाकुर होता है, धोखा खानेसे आदमी सयाना होता है। उदार व्यक्ति ही बड़ा कहलाता है।

१०२८—ठण ठण पाल मदन गोपाळ

ठन ठन पाल मदन गोपाल

खाली हाथ हो तब कहा जाता है।

१०२९—ठाकरने चाकर घणा

ठाकुरको चाकर बहुत।

१०३०—ठाकर गया ठग रह्या रह्या मुलकरा चोर

ठाकुर चले गये, ठग रह गये और रह गये मुल्क भरके चोर।

मालकलमके जागीरदारोंपर कटाक्ष।

१०३१—ठाकरां की टाबर टूबर है, कै—भाई रे साळे रे हो टाबरख है।

ठाकुर साहब, कुछ सन्तान है? तो कहते हैं—हां भाईके सालेके दो बच्चे हैं।

१०३२—ठाकुर* हारो चाकरो घणो?

ठाकुर हारा चौका बहुत।

(१) हैसियतसे ऊपर काम करनेकी डिंग मारनेवालोंके प्रति।

(२) ऐसा करनेकी सामर्थ्य नहीं है।

१०३३—ठाठ तिलक और मधरी बाणी, दगाबाजकी यही निसाणी

ठाठ, तिलक और मीठे बोल—दगाबाजकी यह निशानी है।

जो ऊपरसे बहुत ठाठ करते हैं और अधिक मीठे बोलते हैं वे अक्सर धोखेबाज होते हैं।

१०३४—ठावे ठावे टोपकी बाकीने लंगोट

चुने चुनोंको टोपी और बाकीको लंगोट।

---

* हारा

जरूरी ? धार्नोंको करके शे,को छोड़ देनेपर, योग्य पुरुषोंको सन्मानित करके शेपकी ओर उपेक्षा करनेपर।

१०३५—ठिकाणां सूँ ठाकर बाजै

ठिकाने (जागीर) से ठाकुर कहलाते हैं।

१०३६—ठिकाणे ठाकर पूजीजै

ठिकाने (स्थान) पर ठाकुर पूजा जाता है।
अपने स्थानपर सबका आदर होता है। ठाकुर या राजा अपने स्थानसे बाहर चला जाय तो कोई नहीं पूछता।

१०३७—ठीकरी घडो फोड नाखै

ठीकरी घड़ा फोड़ डालती है।
साधारण व्यक्ति बड़े व्यक्तिको हानि पहुचा सकता है।

१०३८—ठोठ पोसालियांने वतरणा घणा

मूर्ख विद्यार्थियोंको पट्टीपर लिखनेकी कलमें बहुत।

१०३९—डरता सांस ही को आवै नी

इतना डरता है कि सांस तक नहीं आता।
जब कोई अधिक भयभीत होता है तब कहा जाता है।

१०४०—डरतो डूम करै शुभराग

डरता हुआ डोम शुभराग करता है।
भयसे काम करनेपर

१०४१—डोंग भागी तो ही डोबरां जोगी परी है।

१०४२—डाकण केरी मासी

डाकिन किसकी मौसी
वह मौसीका सम्बन्ध नहीं देखती सबको हानि करती है।

१०४३—बाम्हण ही, फेर सरस चढ़गी

बाम्हन तो थी फिर सरसपर चढ़ गई।

समाजसे कुछ व्यक्तिको अनुकूल साधन प्राप्त होनेपर ऐसा कहा जाता है।

१०४४—बाम्हणने मासी कह'र बतळावणो

ब्राह्मणको मौसी कहकर पुकारना।

गुरुको सम्मान अथवा प्रेम व्यवहारसे प्रसन्न रखना चाहिए।

अत्याचारी या गुरु।

१०४५—बाम्हण बेटो दे क ले

ब्राह्मन बेटा दे या ले।

ब्राह्मन बेटा देती नहीं जो देता है उसे भी ले लेती है।

अत्याचारी या गुरुसे लाभकी आशा नहीं करनी चाहिए।

१०४६—बाम्हणांरि ब्यावमें नौतियार मेल्यो है

१०४७—बाम्हणांरि ब्यावमें नोतियार*रो गटको

ब्राह्मणोंके विवाहमें आमन्त्रित लोगोंका गटका (भोजन) होता है।

गुरुओंका सम्पर्क तो निश्चय ही कष्टदायक होता है।

किसी गुरुके यहाँसे लौटते समय यह प्रश्न किये जानेपर कि क्या तुम्हें कुछ लाभ हुआ ऐसा कहा जाता है।

१०४८—डूँगर दूरसूं ही सुहावणा लागै

पहाड़ दूरसे ही सुहावने लगते हैं।

बहुत सी चीजें दूरसे ही भली जान पड़ती हैं।

---

* आमन्त्रित।

१०४८—डूगर बलती दीख ज्याय घर बलती को दीसेनी

पहाड़पर जलती आग दीख जाती है घर जलता नहीं दीखता।

हम दूसरोंकी बुराई देख लेते हैं पर अपनी बुराई नहीं देखते।

मि०—औरोंकी बुरी बात तो आती नहीं हमको।

पर अपनी बुराई नजर आती नहीं हमको॥

१०४९—डूगराने किसी छियां हुवै

पहाड़ोंके कौन-सी छाया होती है।

समर्थ पुरुषोंकी तुच्छ व्यक्ति सहायता नहीं कर सकता।

१०५०—डूंगरिया रलियावणा आघा ईसरदास

ईसरदास कहता है कि पहाड़ दूर होनेपर ही सुहावने होते हैं।

[देखो ऊपर कहावत न० १०४७]

१०५१— डूबतेने तिणकलेरो ही स्हारो

डूबतेको तिनकेका ही सहारा होता है।

विपद्ग्रस्तको थोड़ा सहारा ही बहुत होता है।

१०५२—डूबीपर तीन बांस

डूबी हुई पर और तीन बास गहरा जल।

पूरी तरहसे गड़बड़ गुटाला। सब चौपट।

१०५३—डूम कुण जाणै कठे जांवतो दियाली करसी

डोम कौन जाने कहां जाकर दिवाली मनावेगा।

जब कोई बात निश्चित न हो।

१०५४—डूमणीरे रोवणमें ही राग

डोमनीके रोनेमें ही राग।

१०४३—डाकण ही, फेर जरख चढ़गी

डाकिन तो थी ही फिर जरखपर चढ़ गई।

स्वभावसे दुष्ट व्यक्तिको अनुकूल साधन प्राप्त होनेपर ऐसा कहा जाता है।

१०४४—डाकणने मासी कह'र बतळावणो

डाकिनको मौसी कहकर पुकारना।

दुष्टको सम्मान अथवा प्रेम व्यवहारसे प्रसन्न रखना चाहिये।

अत्याचारी या दुष्ट।

१०४५—डाकण बेटो दे क ले

डाकिन बेटा दे या ले।

डाकिन बेटा देती नहीं जो होता है उसे भी ले लेती है।

अत्याचारी या दुष्टसे लाभकी आशा नहीं करनी चाहिए।

१०४६—डाकण्यांरै ब्यावमें नोंतियार भेळ्यो ही

१०४७—डाकण्यांरै ब्यावमें नोतियार*रो गटको

डाकिनियोंके विवाहमें आमन्त्रित लोगोंका गटका (भोजन) होता है।

दुष्टोंका संसर्ग तो निश्चय ही नाशात्मक होता है।

किसी दुष्टके पाससे लौटते समय यह प्रश्न किये जानेपर कि क्या तुम्हें कुछ लाभ हुआ ऐसा कहा जाता है।

१०४८—डूंगर दूरसूं ही सुवावणा लागै

पहाड़ दूरसे ही सुहावने लगते हैं।

बहुत सी बातें दूरसे ही भली जान पड़ती हैं।

---

* आमन्त्रित।

१०४८—डूगर वलती दीख ज्याय घर वलती को दीसेनी

पहाड़पर जलती आग दीख जाती है घर जलता नहीं दीखता।

हम दूसरोंकी बुराई देख लेते हैं पर अपनी बुराई नहीं देखते।

मि०—औरोंकी बुरी वात तो भाती नहीं हमको।

पर अपनी बुराई नजर आती नहीं हमको॥

१०४९—डूगराने किसी छियां हुवै

पहाड़ोंके कौन-सी छाया होती है।

समर्थ पुरुषोंकी तुच्छ व्यक्ति सहायता नहीं कर सकता।

१०५०—डूगरिया रलियावणा आघा ईसरदास

ईसरदास कहता है कि पहाड़ दूर होनेपर ही सुहावने होते हैं।

[देखो ऊपर कहावत न० १०४७]

१०५१— डूवतेने तिणकलेरो ही स्हारो

डूवतेको तिनकेका ही सहारा होता है।

विपद्ग्रस्तको थोड़ा सहारा ही वहुत होता है।

१०५२—डूबीपर तीन वाँस

डूबी हुई पर और तीन वांस गहरा जल।

पूरी तरहसे गड़बड़ गुटाला। सब चौपट।

१०५३—डूम कुण जाणै कठे जाँवतो दियाली करसी

डोम कौन जाने कहाँ जाकर दिवाली मनावेगा।

जब कोई बात निश्चित न हो।

१०५४—डूमणीरे रोवणमें ही राग

डोमनीके रोनेमें ही राग।

किसी बातको स्वाभाविक ढंगसे कहते हुए भी उसमें किसी विशेष बातकी ओर संकेत कर देनेपर।

१०५५—भूखां मारी डोकरी गायां आडी भैंस

१०५६—डेडरेने जुकाम हुयो
मेंढककी जुकाम हुआ।
अपनी हैसियतसे ऊपर काम करनेवालेके प्रति व्यंग।

१०५७—डोकरी मसाण केरा ? आवा गयांरा
हे बुढ़िया श्मशान किनके ? आने-जानेके।
पाठका कुछ कार्य न करके हमेशा घरमें धन या बातोंसे काम उलझनेपर।

१०५८—डोकरीरे कयां खीर कुण रांधै ?
बुढ़ियाके कहे खीर कौन राँधे ?
जब कोई किसीका कहना न माने तब।

१०५९—डोढ चावळरी खीचड़ी न्यारी ही पकावै
डेढ़ चावलकी खिचड़ी अलग ही पकाता है।
सबसे निराला रहता है या निराली बातें करता है।

१०६० डोढ मोड्रो डीडवाणे पापगा
डेढ़ मोड़ा डीडवानेमें पापगाह।

१०६१—डोरीसूं पत्थर कटीजै
डोरीसे पत्थर कट जाता है।
निर्बल भी धीरे-धीरे बलवानको नाश कर देता है।

ढ

१०६२—ढकणीमे पाणी लेʼर डूबज्या

ढकनीमे पानी लेकर डूब जा।

किसी कुकृत्योंपर शर्म दिलानेके लिये ऐसा कहा जाता है।

मि०—चुल्लूभर पानीमे डूब जा।

१०६३—ढबाँ खेती ढबाँ न्याव

ढबाँ हुवै बूढेरो व्याव

ढबसे खेती होती है ढबसे न्याय होता है और ढब हीसे बूढ़ेका भी विवाह हो जाता है।

सब काम ढगसे करनेसे होते हैं।

सब काम मेल जोलके जरिये होते हैं।

१०६४—ढबाँ खेती पखाँ न्याव

ढबसे खेती और पक्षसे न्याय मिलता है।

ढंगके साथ करनेसे खेतीमे सफलता मिलती है। हाकिम पक्षका हो या सिफारिस हो तब न्याय मिलता है।

१०६५—ढबाँरी खेती है

ढब की खेती है।

ढगके साथ करनेसे ही खेती होती है नहीं तो महनत व्यर्थ जाती है।

१०६६—ढेढणी काँई बोलै जमी माँयलो चरू बोलै है

ढेढनी बिचारी क्या बोलती है नीचे जमीनमें (धनसे भरा) जो बर्त्तन गड़ा है वह बोलता है।

धन होनेपर छोटा भी बोलने लगता है। इसपर एक कहानी है—

एक बेवनी किसी प्रतिष्ठित धनिकके घरके दरवाजेके पास खड़ी होकर कहा करती थी भाई-बाप, आपकी बेटीका विवाह मेरे बेटेके साथ कर दीजिये। उस धनिकने सोचा इसको ऐसी बात कहनेकी हिम्मत क्यों हुई! क्या इसके पास मेरेसे अधिक धन है? सो तो दिखता नहीं। फिर? यह अवश्य धनकी गर्मी ही है जो इससे ऐसा कहलवाती है। यह सोचकर एक दिन उसने बेवनीके घरों तलेकी भूमि को खुदवाना शुरू किया तो उसे अपार गड़ा हुआ धन मिला। धनिकने कहा मेरा सोचना सही था, बिना धनकी गर्मीके ऐसे वचन वह बोल नहीं सकती थी।

१०६७—बेवने सुर्गमें विसाई कोनी

बेवको स्वर्गमें भी विश्राम नहीं (उसे वहाँ भी बेगार करनी पड़ती है) जब किसीको-किसेका निर्बलको-जोर बिराबर लगाया करते हैं तब कही जाती है।

१०६८—बेवणीने सुरगमें ही बेगार त्यार

बेवनीको स्वर्गमें भी बेगार तय्यार।

बेव बालिये बेगार बहुत ली जाती है।

Too what place can the ox go where he must not plough.

१०६९—बेवरे पड़ो कुगाको मावै वावे पड़ो

बेवके पड़ा कुवाको चाहे मरो क्यो

दोनों बराबर हैं क्योंकि दोनोंसे छूट जानी है। पड़ा कुमाना मरने लगनेके बराबर है।

बुरे कामको थोड़ा करो चाहे अधिक करो बराबर है।

१०७० —ढेढरे साथे धाप'र जीमो भावै आंगली भरभर चाखो

ढेढ़के साथ पेट भर खाओ चाहे अँगली भर-भर चक्खो

१०७१—ढेढांरी दुरासोससूं गार्यां थोडी ही मरै

ढेढ़ोंकी दुराशीषसे गायें कहीं मरती है ?

गायें मरनेसे ढेढ़ोंको चमडा मिलता है जिससे वे अपना निर्वाह करते हैं।

इसलिए वे गायोंका मरना चाह सकते हैं।

१०७२—ढैया-ढैया घर बतावै

ढहे (गिरे) मकान बतलाना।

निराशाजनक बातें करना।

१०७३—ढोलमें पोल

ढोलमें पोल रहती है

बड़े आदमियोंकी बातें पक्की—ठोस नहीं हुआ करती।

त

१०७४—तन सीतळ हो सीतसूँ मन सीतळ हो मीतसूँ

तन शीतसे शीतल होता है और मन मित्रसे शीतल होता है
मित्र ही दुःखके समय सच्ची शांति देता है
मि०—सज्जन मित्तर रा पखे, कान चीत सुचैन
मनकेरी मन्त्री बणे प्रेम प्रकासे नैण —सुरजी

१०७५—तन सुखी तो मन सुखी

शरीरमें रोग आदि होनेपर मन सुखी नहीं रह सकता।
स्वास्थ्य मानसिक शान्तिके लिए आवश्यक है।

१०७६—तलवार कुपियेरी लड़ाई

तलवार और कुप्पीकी लड़ाई
न एक को लाभ न दूसरेको हानि दोनों ओर समान लाभ-हानि।
मि०—गोबर रोकुल्लियोंर काठ री तरवार

१०७७—तांबो कहे हूँ सोनेरो थो चूल्हो कैवे पहलो तो म्हारे ऊपर हुयो हो

तांबा कहता है 'मैंने सोनेका बना हुआ था।' चूल्हेने उत्तर दिया 'तब तो मेरे ऊपर बना था मेरेसे तेरी असलियत क्या छिपी है।
दिखावटसे ऊपर बातें करनेवालेके प्रति व्यंग।

१०७८—तवो हांडीने काळो बतावे

तवा हांडीको काली बताता है
उस व्यक्तिके लिये जो स्वयं दोषी होकर दूसरेको दोषी बताये या दूसरों के दोषोंकी निन्दा करे।

The sooty oven mock the black chimney

१०७९—ताजो माल तुरंत खपे

ताजा माल तुरत विक जाता है।

१०८०—तांतांसूँ तांता पीवणा

धागेके एक छोरको दूसरे छोरसे मिल जाना।

अनुकूल साधन प्राप्त होनेपर।

१०८१—तावने कुण तेडो जावे

ज्वरको कौन न्योता देने जावे।

आफतको कौन निमन्त्रण देकर बुलावे ? कोई नहीं।

व्यर्थमें आफत मोल नहीं ले लेनी चाहिए।

१०८२—ताव हाथीरा हाड भांगे

ज्वर हाथीके हाड भी तोड देता है।

हाथी जैसे बलवान्की भी ज्वरके आगे कुछ नहीं चलती।

१०८३—तिरिया-चिरत न जाणै कोय, खिनख मारके सत्ती होय

स्त्रीके चरित्रको कोई नहीं जानता वह पतिको हाथोंसे मारकर भी उसके पीछे सती हो जाती है।

स्त्री-चरित्रकी निंदा।

इसपर एक कहानी है—

राजा भर्तृहरि भेष बदलकर रात्रिमें गश्त लगाया करते थे। एक दिन उन्होंने एक कुलटा स्त्रीको अपने प्रेमीके कहनेपर अपने पतिको छुरीसे मारते हुए देखा। पतिका काम तमाम करके वह लगी सिर पीट-पीटकर रोने-चिल्लाने "हाय रे, दौडो कोई मेरे पतिको मार गया।" भीड़ लग गई कोई कुछ कहने लगा तो कोई कुछ। उस कुलटाने देखा कि कहीं भेद खुल न जाय अत: सवेरे ही पतिके शवको गोदीमें लेकर चितामें बैठ गई और जीती ही जल मरी। राजा भर्तृहरिने यह सब काण्ड

६०—तीन तिकट महा विकट

तीनका गुट या साथ बुरा।

६१—तीन तेरह घर बिखेरह

तीनका साथ बुरा और असगुनी समझा जाता है।

६२—तीन बुलाया तेरह आया

तीनको न्योता दिया तो जीमनेको तेरह आये।

६३—तीन बुलाया तेरह आया भई रामकी वाणी
राघो चेतन यों कहे 'ठेल दालमे पाणी'

तीन बुलाये और तेरह आये। राघोचेतन यों कहता है कि दालमें पानी डालकर बढ़ा लो।

६४—तीन लोकसूँ मथरा न्यारी

तीनों लोकोंसे मथुरा निराली।

जब कोई व्यक्ति निराला आचरण करता है तब कही जाती है।

६५—तीर नहीं तो तुक्को इ सही

पूरा नहीं तो अधूरा ही लाभ सही।

६६—तुरकणीरे कात्योड़ेमे ही फिदड़को

तुर्कनीके काते हुए में भी एक ऊनका गुच्छा लगा हुआ।

त्रुटिपूर्ण काम होनेपर।

६७—तुरतदान महा कल्याण (महापुन पाठान्तर०)

दान तुरत दे देना चाहिये।

१०९८—तुरत मजूरी जो परणावै ज्यांरो काम तुरत हो जा

जो तुरन्त मजदूरी देता है उसका काम भी तुरन्त हो जाता है

काम कराना हो तो मजदूरी तुरन्त दे दो

१०९९—तूं जाणे थारो काम जाणे

तू जाने तेरा काम जाने हमें कोई मतलब नहीं।

जब कोई कहना नहीं मानता और अपने मनकी करता है तब कही जाती है।

११००—रूठो बाणियो रूठो राव

रूठा हुआ बनिया और रूठा हुआ राजा (बराबर है)।

११०१—तूं डाळ डाळ तो हूं पात–पात

तू डाल-डाल तो मैं पात-पात।

तुम्हारी चालोंको खूब समझता हूँ।

११०२—तूं फिरै डाळ-डाळ हूं फिरूं पात पात

तू फिरता है डाली डाली मैं फिरता हूँ पत्ते-पत्ते।

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

११०३—तूं मने हूं थने

तू मुझे मैं तुझे।

परस्पर कार्य सिद्ध करना। परस्पर बड़ाई करना।

Ka me and I will ka thee

११०४—तू म्हारे दे बाकेमें हूं थारे द आंखमें

तू मेरे मुंहमें उंगली दे मैं तेरे आंखमें उंगली दूँ।

दोनों प्रकार अपना मतलब बनाना और दूसरे की हानि करना।

११०५—तेरस कै तीज

तेरस या तीज।

तेरस या तीज ये दो शुभ महूर्तके दिन माने जाते हैं।

मि०—अणपूछ्यो मूरत भलो का तेरस का तीज।

११०६—तेरह तीन अठारे डोढा (डाढा)

तेरह तीन अठारह ड्योढ़े।

छिन्न-भिन्न हो जाना।

११०७—तेरा तेल गया मेरा खेल गया

दोनों बराबर होने पर।

११०८—तेल जितो खेल

जितना तेल उतना खेल।

जितना आयु उतना जीवन।

जितनी शक्ति उतना काम होता है।

११०९—तेलणसूँ नहीं मोचण घाट, वैरी मोगरी वैरी लाग

तेलिनसे मोचिन किसी प्रकार घटकर नहीं

दोनों एक-जैसे होते हैं।

१११०—तेल तेलीरो बळै, मसालचीरी गांड क्यूँ बळै

तेल तेलीका जलता है मसालची क्यों क्रुद्ध होता है ?

जब हानि किसीको है और चिढ़े कोई तब।

११११—तेल देखो तिलांरी धार देखो

तेल देखो तेल की धार देखो।

हर एक कामको सोच समझकर करो।

११११२—तेल तो तिलां मांयसूं ही निकळै

तेल तो तिलोंसे ही निकलता है।

जितनी पूँजी उतना मफा।

१११३—तेलीरो बळद सौ कोस चालै तोई वठै-रो-वठै

तेलीका बैल सौ कोस चलता है तो भी वहीं-का-वहीं रहता है।

१११४—तेलीसूं खळ उतरी हुई मळीरे जोग

खलीसे उतरते ही खली चलानेके योग्य हो गई।

परस्पर सम्बन्ध विच्छेद होनेपर।

१११५—तैरूरी पहली रांड

तैराककी स्त्री पहले रांड होती है।

तैरनेमें नहीं तैरनेकी अपेक्षा अधिक खतरा है।

Good sw mmess are oftened drowned

१११६—तैसूं बोलै जकेरो गुर गूलो

जो तुमसे बोले उसका गुड़ झूठा।

तुमसे प्रमा न बोलूँगा। तुमसे कभी व्यवहार न करूँगा।

१११७—तोतरा घोड़ा किताक चालै।

झूठे घोड़े कितने चलें।

बनावटी।

१११८—तोय भजूँ पण मोय न भजूँ

तुझे भजूँगा पर अपनेको नहीं भजूँगा।

अपना ही स्वार्थ देखने तथा परार्थ का ध्यान नहीं रखने पर।

बंजूलके लिये भी कही जाती है।

थ

११९९—थारा कांटा तने ही भागेला

तेरे कांटे तुझे ही चुभेंगे।

जैसा करोगे वैसा पाओगे।

दूसरे की बुराई करनेसे अपनी ही हानि होती है।

११२०—थारा गमाया घर गया अे कांदाखाणी नार

ए पियाज खानेवाली नारी, तेरे गँवाये घर नाश हो गये।

१—किसी बुराईका, खुद मूल कारण होते हुए भी ऊपरसे अपनेको ऐसा प्रगट करे जैसे उसका उससे कुछ सम्बन्ध ही नहीं है, उसके प्रति।

२—बुराइके मूल कारण तुम्हीं हो।

११२१—थारा जायोडा ही कदे पगां चालसी

तेरे जाये हुए भी कभी पैरों चलेंगे?

हां, हां, कहकर टरकानेवालेको ऐसा कहा जाता है जिससे अभिप्राय यह है कि तुम कबतक काम कर दोगे।

११२२—थारी म्हारी बोलीमें इतरो ही फरक

थे कहो फरेस्तार'म्हे कहा जरक्ख

तुम्हारी और हमारी बोलीमें इतना ही फर्क है कि तुम उसे फरिस्ता कहते हो और हम जर्ख कहते है।

इसकी एक कहानी है जो इस प्रकार है—

एक मियेजीका रिस्तेदार मर गया जिसे कब्रमें दफना दिया गया। कुछ दिनों बाद उसने देखा तो मालूम हुआ कि कब्र खुदी हुई पड़ी है। मियेंजीने इसकी चरचा अपने पड़ोसी जाटसे की और कहा 'हमारे रिस्तेदारको 'फरिस्ता' बिहिस्त (स्वर्ग) में ले गया। जाट बोला 'जरख' उठा ले गई होगी। मियेने पूछा जरख क्या होती है? तब जाटने कहा कि जिसे तुम 'फरिस्ता' कहते हो उसे ही हम 'जरख' कहते हैं, शब्द दो हैं अर्थ एक ही है।

११२३—थारे जिसा छप्पन सौ देख्या है

तेरे जैसे छप्पन सौ देखे हैं।
तू अपनेको क्या समझता है?

११२४—थारे म्हारे क्या वैधियोड़ो

तुम तो भाई से भी अधिक हो।

११२५—थारो ओमरो मूँडो दीखे। कै म्हारे तो सेर धान ओमें ही खटावै

तेरी यह ओमरी (पेट) मौंडी दिखती है। कि मेरे तो सेर धान इसीमें आता है।

११२६—थारो सो म्हारो, म्हारो सो है ई

तेरा (जो कुछ है) सो मेरा और मेरा जो कुछ है सो है ही
जो दूसरेके धनको अपना समझे और अपने धनको दूसरेका न समझे।

११२७—थाळीफूट्यां ठीकरो हाथमें आया करै

थाली टूट जानेपर ठीकरा हाथ लगता है।
अच्छी वस्तुके नष्ट हो जानेपर उसके बदलेमें निकम्मी या कम उपयोगी वस्तु मिलनेपर।

११ ८—थावर कीजे थरपना बुध कीजे ब्यापार

शनिवारको स्थापना करनी चाहिए और बुधवारको व्यापार।

११२९—थावररा थावर गांव थोड़ा ही चळै

शनिवारके शनिवार (यानी प्रत्येक शनिवार को) गाँव थोड़े ही चलते हैं।
एक काम सदा थोड़ा ही होता रहता है।

११३०—थूकसूँ गाँठ्योडा ? किता दिन सँधै ?

थूक रा चेपा किनाक दिन चले पाठातर ?

थूकसे चिपकाये हुए कितने दिन सँधते हैं ?

११३१—थे सवाई जैपररा तो म्हे डोढे चूरूरा

तुम सवाई जयपुरके तो हम डेढे चूरूके ।

हम तुमसे किसी बातमें कम नहीं है बल्कि अधिक हैं ।

११३२—थोडी देर तो वण रतन !

कुछ देर के लिये तो उदार अथवा दानी बन जा ।

नोट—यह सेठ रामरतनदासजी डागा के नाम पर बना है वे बड़े ही दानी और उदार थे उनके मुकाबलेका दानी व उदार गत शतीमें कोई बीकानेरमें नहीं हुआ । श्री राय सा० सेठ नरसिंहदासजी डागा आपके दत्तक पुत्र हैं ।

११३३—थोथो चिणो बाजै घणो—

थोथा चना बहुत बोलता है

जिसमें गुण नहीं होता वह बढ़-बढ़कर बातें बनाता है ।

मिलाओ—अधजल गगरी छलकत जाय

The Empty vessel makes much noise Deep rivers move in silence, Shallow brooks are noisy

११३४—दमडाँरो लोभी बातांसूँ को रीझै नी

धनका लोभी कोरी बातोंसे नहीं रीझता वह तो धन मिलनेसे ही रीझता है ।

११३५—दमडीरो हाँडी ही बजार लेवणी

दमडीकी हाँडी भी बजाकर लेनी चाहिये

साधारण-से साधारण वस्तु भी खूब परीक्षाके बाद लेनी चाहिये

११३६—दसरी लकड़ी अेकरो भारो

दस आदमियोंको अेक-अेक लकड़ीसे अेक आदमीका पूरा बोझ तय्यार हो जाता है।

दस आदमी थोड़ी २ सहायता देवें एक आदमीका काम बन जाता है।

११३७—दस लागे भर सरायमें डेरा

दस लगते हैं और सरायमें डेरा।

११३८—दाई रोज टको लेगी, डूंगो फोड़गी

रोज दाई पैसे लेकर और डूंगा फोड़कर चलती बनी

मूर्ख या इसके भिन्न।

११३९—दाईसूं पेट थोड़ो ही छानो रेवै

दाईसे पेट थोड़े ही छिपता है।

जानकारसे भेद नहीं छिप सकता।

११४०—दाख पके जब कागके, होव कंठमें रोग

जब दाख पकती है तो कौवेके कंठमें रोग उत्पन्न हो जाता है

(जिससे वह दाख खानेका आनन्द नहीं उठा सकता)

अनुकूल अवसरपर लाभ न उठाया जा सके तब

भाग्यहीनके लिये।

पूरा दोहा यों है :—

भागहीनकूं ना मिले, भली वस्तको भोग।

दाख पके तब होत है, कठ काग के रोग॥

११४१—धाम-रस काड़-रस छूटे कोनी

अमुख्या और स्वादिष्ट भोजनकी चाह छूटती नहीं।

११४२—खाणे-पाणीरो सीर है

खाने-पानीका सीर (हिस्सा) है

परेक सम्बन्ध है खाने-पीने का सम्बन्ध है।

११४३—दाता दे भंडारीरो पेट दूख

दाना देता है पर भंडारीका पेट दुखता है ।

जब मालिक देने की आज्ञा दे दे पर देनेवाले कर्मचारीको दुख हो ।

११४४—दातासूं सूम भलो झटके ऊतर देय

दातासे कंजूस अच्छा जो जल्दी उत्तर तो दे देता है ।

हाँ-दूँगा, हाँ-दूँगा—इस प्रकार आशामें रखनेवाले दातासे कंजूस अच्छा जो तुरत 'ना' कर देता है कि क्योंकि अैसा दाताके पास बारबार जानेका कष्ट उठाना पड़ता है और कंजूस अेकबारमें ही मामला तै कर देता है ।

आशामें रखकर कष्ट देनेवाले व्यक्तिसे इनकार कर देनेवाला अच्छा ।

११४५—दाळ-भात भेळा, कोकला किनारे

दाल भात मिले हुअे और कोकले अलग

घरके लोग परस्पर लड़ते हैं तो भी आखिर मिल जाते हैं पर कोई बाहरी व्यक्ति लड़ाई के समय उनमेंसे किसीका पक्ष लेकर लड़ता है तो बाकी लोगोंके साथ उसका वैर हमेशाके लिअे बँध जाता है ।

मि०—थे बिहु साजन रळ मिलो हूं बिच दुक्ख सहेस

११४६—दाळ-भात रोटी और बात खोटी

दाल भात और रोटी इतनी ही बातें सत्य हैं बाकी सब खोटी

जीवन-निर्वाहके साधनोंकी बात ही सबसे बढ़कर है ।

११४७—दाळभात लंबा जीकारा अे बाई परताप तुम्हारा

दाल-भात खानेको मिलता है और सब लोग जी-जी करके पुकारते हैं यह सब, हे बाई, तुम्हारा ही प्रताप है ।

बेटी के सम्बन्ध से लाभ पहुचने पर व्यंग ।

११४८—दांत-काटी रोटी है

दांतसे कटी हुई रोटी (का संबन्ध) है (अर्थात् एक-दूसरेकी दांत कटी रोटी खाते हैं)
गहरी घनिष्टता है।

११४९—दांतण फ्रेंक्यां दल्दर को जावे नी

दातुन फेंकने से दरिद्र नहीं जाता।
तुच्छ कार्य करनेसे काम पार नहीं पड़ता।

११५०—दांत हा जद चिणा कोनी चिणा है जद दांत कोनी

दांत थे तब (खानेको) चने नहीं थे और अब चने हैं तो (खानेको) दांत नहीं।
असामय पर
कोई-न-कोई कमी रह जाय तब

११५१—दांत है जठे चिणा कोनी चिणा है जठे दांत कोनी

दांत है वहां चने नहीं, चने हैं वहां दांत नहीं।
कोई-न-कोई कमी रहे तब
धन है वहां भोगनेवाला नहीं भोगनेवाला है वहां धन नहीं।

११५२—दांतांसे बांधी हाथांसूं को खुले नी

दांतोंकी बांधी हुई हाथों से नहीं खुलती।
किसी सयाने चतुर व्यक्ति की प्रशंसा में ऐसा कहा जाता है कि वह किसी वस्तुको दांतों से बांध दे तो दूसरे उसको हाथों से भी नहीं खोल सकते है।

११५३—दाँतांरो पीस्योडो नहीं खावणो, घटीरो पीस्योडो खावणो

दाँतोंका पीसा हुआ नहीं खाना चाहिअे, चक्कीका पीसा हुआ खाना चाहिअे।

लोक या समाज जिसके विरुद्ध हो अैसा कार्य नहीं करना चाहिअे।

११५४—दिन जातां किती बार लागै

दिन बीतते कितनी देर लगती है।

दिन बीतते देर नहीं लगती।

मि०—सुबह होती है शाम होती है।
यौंही उम्र तमाम होती है।

११५५—दिन दूणो रात चोगणो

दिन दूना, रात चौगुना

खूब बढ़ना।

११५६—दिन फिरै जद चतराई चूल्हेमें जाय परी

जब दिन फिरते हे (अर्थात् बुरे दिन आते हैं) तब चतुराई चूल्हेमें चली जाती है।

बुरे दिन आने पर मनुष्य चतुराई भूल जाता है।

मि०—असभव हेममृगस्य जन्म तथापि रामो लुलुभे मृगाय।
प्राय समापन्नविपत्तिकाले धियोऽपि पुँसां मलिनीभवन्ति॥

११५७—दिन-भर रांड-निपूती करै

दिन-भर राँड और निपूती करती है (किसीको राँड़ और किसीको निपूती कहकर गालियाँ देती है)

दिन-भर गालियाँ देती है। दिन-भर हाय-हाय करती है।

दिन-भर पराई निंदा या चर्चा करते रहने पर।

११५८—बिनुंगेरो गम्योड़ो सिमड्या पाछो आ ज्याय तो गम्योड़ो को बाजे नी

सुबहका भूला शामको लौट आये तो भूला नहीं कहलाता।
जब कोई व्यक्ति गलती करके जल्दी ही उसे सुधार लेता है तो वह भूल नहीं कहलाता।

११५९—दियाँ-लियाँ डूम राजी हुवे

देने-लेनेसे तो डूम (लोक याचक जाति) राजी होते हैं।
(सज्जन तो केवल सम्मान चाहते हैं)

११६०—दियाळीरा डाम छूटणने आछा आवे

दियाळीके दाग छूटने के काम आते हैं
जब किसी से अनुचित या व्यर्थ में काम करवाया जाय तब।

११६१—दियाळीरा दीया दीठा, काचर बोर मतीरा मीठा

दियाळीके दिये दिखाई दिये और काचर, बेर और मतीरे मीठे हुए
दिवाली बीतने पर काचर बेर और मतीरे मीठे हो जाते हैं।

११६२—दियोड़ी अक्कल किता दिन काम आवे

दी हुई अक्ल कितने दिन काम आ सकती है।
बुद्धि अपनी हो तभी काम चल सकता है।
मि०—अक्कल उधारी कमसे दिया आवे काम

११६३—दियो-लियो आडो आवे

दिया-लिया काम आता है।
दान ही मुसीबत में सहायक होता है

११६४—दिल साफ कसूर माफ

दिल साफ हो तो सब कुसूर माफ है।

चित्त शुद्धि ही सबसे महत्त्वपूर्ण है।

११६५—दिल्ली फकीरां जुगती (जोगी) रहगी

दिल्ली फकीरां जुगती (योग्य) रहेगी।

जब किसी वैभवशालीका महान वैभव नष्ट हो जाय तब।

११३६—दिल्ली फकीरां जोगी हुमे हुई है

दिल्ली फकीराके योग्य अब हुई है।

अमुक व्यक्तिका वैभव अब नष्ट हुआ है।

१६७ –दिल्ली रह'र भाड ही भूँजी

दिल्लीमें रहकर भाड़ ही झोंकी।

अच्छे स्थानमें या अच्छे व्यक्तिके पास रहकर भी कोई लाभ न उठाना।

११६८—दोड मिन्नी कुत्तो आयो

बिल्ली, दौड़, कुत्ता आया

बच्चोंका अेक खेल

११६६—दियेरे हेठे इँधारो हुया करै

दियेके तले अंधेरा हुआ करता है।

मि०—दीया तले अंधेरा

११७०—दीयो दाट बहू खाट

दिया जला कि बहू पलग पर

(१) सन्ध्या समय सो जानेवालेके लिअे

(२) आलसी या दरिद्रके लिअे जो सन्ध्याको ही सो जाय।

११७१—दीसती तो गिलारी पर ज्याय सिन्दूरो गटको

देखनेमें तो छिपकली पर खा जाय सिन्दूरको

देखनेमें सीधा किन्तु वास्तवमें दुष्ट।

११७२—दुनियामें डोढ अकल हुवै, आधीमें आप आधीमें दुनिया

दुनियामें डेढ अक्ल होती है जिसमें एक अपनमें और आधी बाकी सब

मनुष्य अपने आपको दूसरे सब लोगोंसे अधिक बुद्धिशाली समझता है

१७३—दुपटी देखकर पग पसारो

दुपट्टी देख कर पांव फैलाओ

अपनी हैसियत या सामर्थ्यके अनुसार काम करो।

मि०—तेते पांव पसारिये जेती लांबी सौर

११७४ -दुबधामें दोनूं गया माया मिळी न राम

दुविधामें दोनों गये माया मिली न राम

जो आदमी यह सोचता है कि यह काम करूं या नह। वह दोनों ही

नहीं कर पाता। इसलिए अनिश्चितताको छोड़कर दृढ़ निश्चय करके

तदनुसार तुरत कार्य आरम्भकर देना चाहिये।

मि —संशयात्मा विनश्यति

११७५—दूख जकेरे पीड़ हुवै

जिसके दुखता है उसीके पीड़ा होती है।

किसीकी पीड़ाका अनुभव दूसरा नहीं कर सकता।

मि०—बांझ क्या जाने प्रसवकी पीड़

बांझ बियानरी पीड़ सार कांई जाणै

पापकरी मन पापण जाणै न कोई पापण हाथ

जाक पांव न फटी बिवाई सो क्या जाणै पीर पराई

विन आपुन पाय बिवाय गये कोउ पीर पराइ न जानत है
पर, वीर मिले बिछुरेको विथा मिलिकै बिछुरै सोई जानतु है

११७६—दूखै पेट कूटै माथो

दुखता है पेट, कूटता है माथेको

असगत काम करना।

११७७—दूझती गायरी लात सैवणी पडै

दुधार गायकी लात सहनी पड़ती है।

जिससे कुछ स्वार्थ सिद्ध होता है उसके बुरे वर्त्तावको भी सहना पड़ता है।

मि०—लात खाय पुचकारिये, होइ दुधारु धेनु

११७८—दूध तो मायका ओर दूध कायका

दूध तो वास्तवमें माताका है दूसरा दूध किस कामका ?

माताके दूधके बराबर कोई दूध नहीं।

११७९—दूध बेचो भावैं पूत बेचो

दूध बेचो चाहे पूत बेचो

दूधका बेचना पुत्रके बेचनेके बरावर है (भारतवर्षमें पहले दूधके बदले दाम लेना बड़ा अनुचित कर्म समझा जाता था)।

विशेष—यह कहावत विशेषतया जाटोंके लिअे प्रसिद्ध है।

११८०—दूध-रो-दूध, पाणीरो पाणी

दूधका दूध, पानीका पानी

बिलकुल ठीक न्याय।

११८१—दूधरो बल्योडो छाछने फूँक दे-दे'र पीवै

दूधका जला छाछको फूक-फूककर पीता है।

अेकबार धोखा खानेपर मनुष्य छोटी-सी बात पर भी सतर्क रहता है।

—वह सहसा विश्वास नहीं करता।

मि०—पिसुन छल्यो नर सुजनसों, करत बिसास न चूक।
जैसे दाध्यो दूधको, पीवत छाछहि फूँक॥

११८२—दूधां न्हावो, पूतां फळो

दूधों नहाओ, पूतों फलो

सौभाग्यशाली और सन्तानशाली होओ। आशीर्वाद।

११८३—दूबळाने ढोरा घणा, का चींचड़ का पंख

दुबलोंके अनेक आपत्तियाँ लगी रहती हैं या तो चींचड़ तंग करते हैं या दुबलोंकी बीमारी हो जाती है।

दुबलोंको रोग आदि कोई-न-कोई आपदा सदा घेरे रहती है

११८४—दूबळो देख अड़नो नहीं, मोटो देख डरणो नहीं

दुर्बल शरीर वालेसे लड़ना नहीं और मोटे तगड़ेसे डरना नहीं चाहिए।

[आगे कहावत न ४ २ भाग १ में देखिये]

११८५—दूबळो सेठ देवरां बरोबर

दुबला सेठ देवोंके बराबर

११८६—दूरसा ढोल सुहावणा लागे

दूरके ढोल सुहावने लगते हैं

दूरकी बातें अच्छी लगती हैं पास आनेपर सबकी असलियत खुल जाती है।

११८७—दूसरेरी तिस पीवै आपरो गयो हुवै

जो दूसरेकी प्यास पीता है वह मरा होता है

कोई आदमी प्यास लगनेपर पानी मँगवावे और उसे दूसरा पीले तो यह कार्य अनुचित और अशिष्टतापूर्ण है।

११८८—देखणो जिसो बरतणो

जैसा देखो वैसा बर्ताव करो

देशकालानुसार काम करना चाहिये।

११८६—देखणो सो भूलणो नहीं

जो देखो उसे मत भूलो

संसारके दृश्योंको देखना चाहिये और देखकर याद रखना चाहिये ।

११६०—देखती आंख्यां माखी को गिटीजै नी

आँखों देखते मक्खी नहीं निगली जाती

जानबूझकर बुरा काम नहीं किया जा सकता

सामने बुरा कार्य करने नहीं दिया जा सकता ।

११६१—देखा-देखी चाल चलै ज्यूं भेडांका टोळा

दूसरोंकी देखादेखी चाल चलना है जैसे भेड़ोंका टोला हो

जो बिना सोचेविचारे दूसरोंकी देखादेखी कार्य करे उसके लिये ।

११६२—देखा-देखी साम्यो जोग, छीजी काया बाध्यो रोग

देखादेखी साधा जोग, छीजी काया बाढ्यो रोग

(१) जो दूसराको देखकर बिना सोचे विचारे काम करता है उसे हानि उठानी पड़ती है

(२) योगसाधना करनी हो तो गुरुसे योग-साधन सीखना चाहिये । बिना गुरुसे सीखे केवल दूसरेकी देखादेखी योग-साधना आरम नहीं कर देना चाहिये ।

११६३—देखी थारी काळपी बावनपुरा उजाड

देख ली तेरी कालपी जिसमें बावनों मुहल्ले उजाड़ पड़े हैं

कोरा नामपर तत्व कुछ नहीं ।

११६४—देख्यो देस बँगाला दाँत लाल मूँ काळा

देख लिया बंगालका देश जहाँ सबके दाँत तो लाल और मुँह काले हैं

बंगालियों के लिये, जो पान बहुत खाते हैं और काले रंगके होते हैं ।

१८९५—देरे पंछिया आसीस। हूं कांई देऊं म्हारी आंतड्यां देवे है।

अरे पंछि आसीस दे
मैं क्या दूँ, मेरी अंतड़ियाँ देती है।

१८९६—देणा न लेणा मगन रहणा

देना न लेना, मग्न रहना
जिसको न तो किसीको देना हो न किसीसे लेना हो वह सदा सुखी रहता है।

१८९७—देणो लेणो गांडूरो काम, पत्ता-मारू गावो

देना लेना गांडूका काम, तुम तो पत्ता-मारू (एक गीत) गाओ।
"जब कोई आशा लगावे तुम को कुछ दे नहीं केवल यह कहे कि गीत करो" तब।

१८९८—देणो भलो न बापरो, बेटी भली न एक
पैंडो भलो न कोस रो साहब राखे टेक

ऋण बापका भी अच्छा नहीं और बेटी एक भी हो तो भी अच्छी नहीं। पैदल मुसाफिर कोसकी भी अच्छी नहीं ईश्वर लज्जा रखे।

१८९९—दे रांड भखीतो, घर आप रीतो

अरी रांड तू भीख दी जा और घर खाली होता जाय
जो घर की स्थितिका विचार किये बिना अन्धाधुंध खर्च करे।

१९००—देव जिसा पुजारी

जैसे देवता वैसे पुजारी
जैसेको तैसा मिल जाय तब
एक जैसे व्यक्तियोंका सम्मेलन।

१२०१—देवणो मरणे बराबर है

देना मरनेके बराबर है

देना बड़ा कठिन है ।

१२०२—देवता जिसी पूजा

जैसे देवता वैसी पूजा

उचित व्यवहार करना ।

१२०३—देवता वासनारा भूखा है

देवता वासना और भावनाके भूखे हैं

देवता हृदयकी अच्छी वासनासे तृप्त होते हैं, बाहरी चीजोंसे नहीं ।

१२०४—देवे जद बेटा देवै नहीं तो बेट्यां ही खोस लेवै

देते हैं तब तो बेटे दे देते हैं नहीं तो बेटियोंको भी छीन लेते हैं

(१) देवताओंके लिअे

(२) अव्यवस्थित-चित्तवालोंके लिअे जो राजी होते हैं तब तो खूब देते हैं और नाराज होते हैं तो साधारण सुविधाओंको भी छीन लेते हैं ।

मि०—क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा रुष्टा तुष्टा क्षणे क्षणे
अव्यवस्थित चित्तानाम् प्रसादोपि भयकर ।

१२०५—देस चाकरी परदेस भीख

देशमें नौकरी, परदेशमें भीख

परदेशमें कोई जान-पहचानका नहीं होता अत भीख माँगनेमें भी लोक लज्जा नहीं होती ।

१२०६—देस चोरी, परदेस भीख

जब निर्वाहका कोई साधन न रहे तो देशमें चोरी करे और परदेसमें भीख माँगे—देशमें लोक-लज्जा के कारण भीख नहीं मागी जा सकती ।

१२०७—देस जिसो भेस

जैसा देश वैसा भेष

जिस देशमें रहे वहांके नियमोंके मुताबिक चलना चाहिये।

१२०८—देसी गधी पूरबी, चाल

देशमें विदेशकी चालढालको अपनानेवालेके लिये

जो दूसरे देशकी चालढालको अपनाना समझे लिये।

१२०९—देसी गधी बिलायती मोळी

(ऊपरवाली कहावत देखिये)

१२१०—देहमें न छत्ता लूटै कलकत्ता

देहपर लत्ता (कपड़ा) नहीं और कलकत्तेको लूटेंगे

(१) बिना सामर्थ्यके काम करना

(२) बिना पूंजीके व्यापार करना

(३) मारवाड़ी व्यापारियोंके लिये जो खाली हाथमें कलकत्ता आदि में जाते हैं और लखपती बन जाते हैं।

१२११—दो आंगळरो छिमाड़ धरमें फेर दो सळ

जगह दो अंगुलका (यानी बहुत थोड़ा) व्यवहार और उसमें भी दो बल

साधारण वस्तु और उसमें भी बहुत-से दोष।

१२१२—दो घर डूबता अेक ही डूब्यो

(नीचे कहावत नं० १२१४ देखिये)

१२१३—दो घरोंरो पावणो भूखो फिरै

दो घरोंका पाहुना भूखा फिरता है

साझेका काम बुरा होता है।

मि०—आन पांडेरो मामलो भूखो मरै

१२१४—दो डूबता अेक ही डूब्यो

दो डूबते अेक ही डूबा

जब अयोग्य पतिको अयोग्य पत्नी मिल जाय।

१२१५—दो दिन पावणो तीजे दिन अणखावणो

दो दिन पाहुना, तीसरे दिन अनखामना

पाहुना दो दिन तक तो अच्छा लगता है और उसका अच्छा सत्कार होता है पर अधिक रहे तो बुरा लगने लगता है।

किसीके भी यहाँ ज्यादा दिन महमान बनकर नहीं रहना चाहिअे।

१२१६—दोनां कानी मोत है

दोनों ओर मौत है

काम करते हैं तो हानि है न करें तो लाचारी है।

मि०—ईने कूवो ऊने खाड

१२१७—दोनां हाथांमें लाडू है

दोनों हाथोंमें लड्डू है

(१) दोनों प्रकारसे लाभ है

(२) खूब लाभ है।

१२१८—दोनां हाथांसूँ ताळी बाजै

दोनों हाथोंसे ताली बजती है

दोनोंके मिलकर करनेसे काम बनता है

दोनों पक्ष मिलते हैं तभी काम होता है।

१२१९—दोनूँ गमाई रे जोगिया मुदरा औ आदेश

हे योगी, दोनों खो दिये—मुद्रा भी और आदेश भी

भर्म भी खोया, लाभ भी नहीं हुआ।

१२२७—दो ववांरो व्रर चूल्हो फूँके

दो स्त्रियोंका पति चूल्हा फूँकना है।

दो विवाह करने की निन्दा।

१२२८—दो लड़े जठे अेक पड़े

जहां दो लड़ते हे वहां अेक पड़ना ही है।

दोकी लड़ाईमें अेककी हार होनी ही है।

१२२९—दो लड़े जद तीजो ले पड़े

दो लड़ते है तब तीसरा ले पड़ता है।

दोकी लड़ाईमें तीसरेको लाभ होता है।

विशेष—इसपर दो विल्लियों और वन्दरकी कहानी प्रसिद्ध है।

१२३०—दगा न किसका सगा

दगा किसीका आत्मीय नहीं।

दगेवाज किसीके साथ दगा करनेसे नहीं चूकता।

दगा करनेका नतीजा हमेशा बुरा ही होता है।

१२३१—दड़को क्यों हो ? सूरजरा सांडहां।
पोटा क्यों करो हो ? गऊरा जाया हां।

दहाड़ते क्यों हो ?
सूरजके सांड़ हैं इसलिअे।
तो गोवर क्यों करते हो ?
गायके जाये हैं इसलिअे।
जो अपने मतलवके अनुसार कभी दिलेर और कभी गरीव वन जाय।

१२३२—दवसी सो हारसी, यही मियांकी फारसी

दवेगा तो हारेगा, यही मियांकी फारसी (विद्या) है

कभी दवना नहीं चाहिअे।

मि०—पढो वेटा फारसी तले पड़े सो हारसी।

ध

१२३३—धड़ दोय मन एक

परस्पर अत्यन्त प्रेम रखनेवाले व्यक्ति।

१२३४—धणीयाणी राजी तो क्या करेगा काजी

मि०—मियाँ बीबी राजी तो क्या करेगा काजी।

१२३५—धन कनै धन आवै

धनके पास धन आता है।

१२३६—धन केरै साथै चालै है?

धन किसके साथ चलता है?

अतः उसका सदुपयोग करना चाहिए।

मि०—सब ठाठ पड़ा रह जायगा जब लाद चलेगा बनजारा।

१२३७—धन जाय जिणरो ईमान जाय

धन जाता है उसका ईमान चला जाता है।

धन बिना जब पेट नहीं भरता तो मनुष्य बेईमानी करके पेट भरता है।

१२३८—धन धण्यांरा ग्वाळरे हाथमें तो गेडियो है

धन (पशुधन) अपने मालिकोंका है ग्वाल (चरानेवाले) के पास अपना तो एक डंडा है।

१२३९—धनरा पनरह मकररा पचीस, बे सरदीरा दिन चालीस

धनराशिके पन्द्रह और मकरराशिके पचीस—यही चालिस दिन जाड़ेके हैं इन्हीं चालीस दिनोंमें जाड़ा खूब पड़ता है।

१२४०—धनवाळेरे सै नेड़ा

धनवालेके सब निकट सम्बन्धी बन जाते हैं।

धनकी महिमा।

Everyone is kin to the rich man

१२४१—धरम धण्यांरो

धर्म मालिकोंका ।

१२४२—धरमरी गायरा दांत डाढ़ कांई देखणा

धर्मकी दी हुई गायके दांत डाढ क्या देखना ।

मुफ्तमें मिली हुई वस्तुकी अच्छाई बुराई नहीं देखना चाहिए

१२४३—धरमरी गायरा दांत देखणा कन डाढ

धर्मकी दी हुई ग.यके दांत देखना या डाढ़ें ।

Look not a jift horse in the mouth

१२४४—धरमरी जड पताळमे

धर्मको जड पातालमें होती है ।

धर्म (परोपकार) से परमात्मा प्रसन्न होता है ।

१२४५—धरमरी जड सदा हरी

धर्मकी जड़ सदा हरी रहती है ।

(धर्म) परोपकार करनेवालेका सदा भला होता है ।

१२४६—धांसी, काळरी मासी

खांसी कालकी मौसी है ।

A dry cough is the trumpetter of Daeth,

१२४७—धाई थारी छाछसू कुत्तोसे छोडाव

तोबा तेरी छाछसे, कुत्तोंसे छुड़ा ।

जब कोई दूसरेके यहां अपना काम निकालने जाय और वहां उलटी आफत गलेमें पड़े तब कही जाती है ।

१२४८—धान खारो लागै है कांई ?

धान खारा लगता है क्या ?

जब कोई आदमी बड़ा काम नहीं करता तो कहा जाता है कि भूखों मरना हो तो यह काम मत कर, सजा मिलेगी मार खाओगे।

१२४९—धान खावां हां धूड़को सांवानी
धान खाते हैं धूल नहीं खाते हैं।
आदमी हैं और सब समझते हैं।

१२५०—धान खावै है क केरियां
धान खाता है या करीलके फल।

१२५१ धान पारको पण पेट तो पारको कोनी
धान पराया है (जो खाया जाता है) पर पेट तो पराया नहीं।
अधिक खानेवालेके लिए।

१२५२—धायो खाट गाडीरो ग्राह काठै
पेट भरा हुआ (बनजारा) बाट गाड़ीका

१२५३—धीणो भैंसरो हुवो भलां ही सेर ही
दूधभैंसका हो चाहे सेर ही।

१२५४—धींगांमें धरम को हुवै नी
जबर्दस्ती धर्म नहीं होता।

१२५५—धींगांमें रो धरम है
जबर्दस्तीका-मुक्तका-धर्म है।

१२५६—धीरजरा फल मीठा
धीरजके फल मीठे होते हैं।
धीरजमें काम होता है।

१२५७—धीरांरा गांव वसे उतांवळारी देवळयां हुवै

शीघ्रतासे युद्धमें उतरनेवालेके केवल स्मारक ही रहते हैं और धैर्य और युद्ध चातुर्य्यवाले पुरुष गांव बसा सकते हैं।

१२५८—धूड खायां किसो काळ नीसरै

धूल खानेसे कौन-से अकालके दिन निकलते हैं।

१२५९—धूड खावणी जद ओछ क्यूँ रळावणी

धूल खाना तब कमो क्यों करना (खूब अच्छी तरह खाना)

बुरा काम करना तो फिर पूरा करना—उसका पूरा आनन्द उठाना।

१२६०—धूडरा दो दाणा ही कोनी

धूलके दो दाने भी नहीं।

कुछ भी बुद्धि या सामर्थ्य नहीं, पूर्ण अयोग्य।

१२६१—धूल धाणी राख छाणी

व्यर्थ काम।

१२६२—धूण पूणीरो सीर है

पूर्वजन्म का लेनदार है।

गहरा सम्बन्ध है।

१२६२—धोती आकास सूकै

धोती आकाशमें सूखती है।

अति पवित्रता रखनेवाले पर व्यग।

१२६३—धोतीरे मांय सै नागा

धोतीके भीतर सब नगे।

कौन बुरा नहीं है। अपनी बुराई मनुष्य अच्छी तरह जानता है भले ही वह प्रकाशमें न आवे।

१२६४—धोबीको कुत्तो घरको न घाटको
धोबीका कुत्ता घरका न घाट का।
न इधरका रहा न उधरका।

१२६५—धोरांरी धूड़ नवे
टीलोंकी धूल नयी है।
देनेको कुछ नहीं है।

१२६६—धोळा तो धरम रा है
सफेद तो धर्मके हैं।
सफेद बालोंके लिए (बुढ़ापेमें)

१२६७—धोळो धोळो सो दूध है
सफेद सफेद सब दूध है।
सब एक-सा है, सबको सच्चा मानना।

१२६८—धोळो धोळो सो दूध को हुवै नी
सफेद सफेद सब दूध नहीं होता।
All is not gold that glitters
They are not all saints that use holy water

न

१२६९—नई काया नई माया

नये सिरसे कोई काम आरम्भ करना।

१२७०—नकटा थारे नाक किता ? निन्नाणवे

ए नकटे, तेरे नाक कितने, तो उत्तर देता है कि—निन्नानवे।

निर्लज्ज व्यक्तिके अशोभनीय कर्म पर व्यंग।

१२७१—नकटा देव सुरडा पुजारी

नकटे देवता परम नकटा पुजारी

जैसे को तैसा।

मि० (१) जसे मनुवा आप हैं वैसे उनके मीत

(२) यादृशी शीतलादेवी तादृशो खर वाहन

१२७२—नकटा नाक कटी ? कै सवा गज वधी

ए नकटे तेरी नाक कट गई क्या ? तो कहता हैं कि सवा गज बढ़ गई।

१२७३—नकारे आळो नेम पाळीवाळो पेम

'नकार' वाला नियम, पालीवाला प्रेम।

१२७४—नगद नाणो वींद परणीजै काणो

नकद पैसा हो तो काने दूल्हे का भी विवाह हो जाता है।

पैसेसे सब कुछ हो सकता है।

१२७५—नगारांमे तूतीरी आवाज कुण सुणै

नक्कारोंकी आवाजमें तूतीकी आवाज कौन सुने ?

बहुसंख्याके समर्थन करने और एक दो के विरोध करने पर।

१२७६—नखबुध आवे साट बुध जावे

१२७७—नठियो मूँतो नैणसी तांबो देण तलाक

मेहता नैणसीने जहाँ एकबार मुँहसे 'ना' कह दिया तो भव भर तांबेका एक पैसा भी नहीं देगा।

दृढ़ निश्चयवालोंके प्रति।

पूरा दोहा इस प्रकार है—

> करड़ कबाड़ो नीपजै, बड़ पीपल री साख
> नठियो मुंहतो नैणसी तांबो देण तलाक

१२७८—नदिया नाव संजोग

नदीमें संयोगवश कई नाव आती हैं। संयोगसे ही दो आदमियोंके साथ रहना बनता है इसलिए प्रेम और आत्मभावसे रहना चाहिए। क्योंकि न जाने फिर जीवनमें साथ रहना बनेगा या नहीं।

१२७९—नदी किनारे रूँखड़ो जब-तब होय विनास

नदीके किनारेका पेड़ कभी-न-कभी नाश हो ही जाता है।

१२८०—नमाज छुड़ावने गया तो रोजा गळे पड्या

नमाज छुड़ाने गये तो रोजे गले पड़े

मामूली आफतसे छुटकारा पानेकी चेष्टा करनेपर किसी विकट आफतमें फंस जानेपर।

१२८१—नर जाणे दिन जात है दिन जाणे नर जाय

आदमी समझता है दिन जाते हैं दिन समझता है आदमी जाता है।

समयके साथ सृष्टि बदलती है। दुनिया परिवर्तनशील है।

१२८२—नरां नाहरां डिगमरां पाकां ही रस होय

नर, नाहर और दिगम्बर पकनेपर—बड़ी उम्र होनेपर ही रसीले होते हैं।

१२८३—नव नगद ना तेरह उधार

नौ नकद अच्छे तेरह उधारके अच्छे नहीं

उधारसे नकद सौदा अच्छा।

१२८४—नव पैठार तेरह लगवाळ गधी ल्यो कोटवाळ

१२८५—नव लीजे न तेरह दीज

न नौ लेना न तेरह देना।

१२८६—नव सौ ऊँदरा मार'र केदाररो कांकण पहर्यो है

नौ सो चूहे मारकर (बिल्ली ने) केदारनाथ का कंकन पहना है।

मि०—नौ सो चूहे मार बिल्ली हजको चली।

१२८७—नवो रे मोडो के लखी रे रांड

मोडा (साधू) नया बना हुआ दिखता है ? स्त्रीके ऐसा कहने पर साधूने मन-ही-मन कहा मालूम होता है रंडी भेद ताड़ गई है।

जब कोई षड्यन्त्र किसी पर प्रगट हो जाय तब।

१२८८—नष्ट देवरी भ्रष्ट पूजा

खराब देवता की खराब ही पूजा।

नीचके साथ नीचतापूर्ण व्यवहार ही करना चाहिये।

मि०—शठे शाठ्यं समाचरेत्

१२८९—नसीब दो पग आगे-रो-आगे

नसीब दो पैर आगे-का-आगे चलता है।

नसीब कहीं जाने पर भी पीछा नहीं छोड़ता।

मि०—जो जाऊँ गुजरात, करम छावणी साथ री साथ

१२६०—नहिं बेलीरो राम बेली

जिसका कोई सहायक नहीं उसका परमात्मा सहायक है।

मि०—निर्बलके बल राम

१२६१—नहिं बोल्येमें नव गुण

नहीं बोलनेमें नौ गुण

चुप रहना अच्छा।

१२६२—नहिं मामेसूं काणो मामो चोखो

मामा न हो इससे काना मामा हो अच्छा

नहीं से कुछ अच्छा।

मि०—Som thing is better than nothing Better half a loaf than no bread better a bare foot than no foo at all Better a bad excuse than none at all

१२६३—नहीं रूंख जठे एरंडियो रूंख

जहां कोई पेड़ नहीं वहां एरंड भी पेड़ गिना जाता है

जहां अधिक गुणवान या विद्वान नहीं होता वहां थोडे गुणवान या विद्वान भी आदर होतो है।

१२६४—नाई-नाई केस कित्ता? क जजमान* आगे आव है

मनुष्य पूछता है कि नाई नाई, मेरे सिरमें बाल कितने। नाई कहता है कि यजमान अभी आपके आगे आ जाते हैं। अभी भेद कुछ समझमें उतावला न बन कर थोडी प्रतीक्षा करनी चाहिए तब भेद आप ही प्रकट हो जाता है।

---

* सुण आगो

१२६५ नाईरी जानमे सै ठाकर

नाईकी बरातमे सब ठाकुर

जब सब सजे सजाये खड़े रहें और काम कोई न करे तब।

१२६६—नागाईरो लाल तुर्रो

निडर तथा लड़ने की क्षमता रखनेवाले का पलड़ा सदा भारी रहता है।

१२६७—नागी* काई धोवे काई निचोवे

नङ्गी क्या धोवे और क्या निचोड़े

विना साधनके कोई कुछ नहीं कर सकता है। जब पासमें कुछ भी न हो तब।

१२६८—नागी देख 'र मन चाल

नगी देखकर मन चलता है

किसी वस्तु को मैदानमें पड़ी देखकर उसके लेनेके लिये मन ललचाना।

१२६६- नागेरो लायमे कांई बळै

आग लगे तो नगेका क्या जले।

Beggers can never be a bankrupts

१३००—नागो कह मैंसूँ डरियो सरमो। मरतो घरमे वडियो

वदमाश कहता है कि मुझसे डरा किन्तु सज्जनका शम मरते घरमे चले जाना

१३०१—नाचूँ कियां† आंगणो टेढो

नाचूँ कैसे आँगन टेढ़ा।

मि०—नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

A bad work man always quarrals with his tools

---

* नागेरो † लाज

१३०९—नादानरो दोस्ती जीवने जोखम

नादानकी दोस्ती जीवका जोखिम

मूर्खसे दोस्ती नहीं करना चाहिये क्योंकि इससे जीवन खतरेमें पड़ जाता है।

१३१०—नानाणे ब्यांव *मां पुरसम्हारी, जीमो बेटा रात अंधारी

ननिहालमें विवाह और मां परोसनेवाली

सब प्रकारसे साधन मिलने पर।

१३११—नानी खसम करे दोहीतो डंड भरे

नानी खसम करती है और नाती दंड भरता है

अपराध कोई करे दंड किसी औरको मिले।

१३१२—नानीबाईरे मायेरेरी ठाकुरजीने लाज

नान्हीबाईके माहेरेकी ठाकुरजीको लाज है

कार्यके पूरा करनेमें भगवान ही लाज रखेंगे।

१३१३—नाने कवे घणो खावणो

छोटे कौरसे अधिक खाना

थोड़ा-थोड़ा लाभ करके अधिक कमाना चाहिए।

१३१४—नामर्द तो खुदाने बणाया मार-मार तो कर

नामर्द तो खुदाने बना ही दिया पर कम-से-कम मारो मारो तो कर

बुजदिलोंपर व्यंग। हिम्मत हारनेपर उत्साह दिलानेके लिये

---

* मामे रो

१२१५—नामूँदरू॰ बाण्यो कमा लाय, नामूँद चोर मार्यो जाय

नामवर बनिया कमा लाता है नामवर चोर मारा जाता है।

१२१६—नारायण एकरा इक्कीस करै

भगवान् एकके इक्कीस करें

भगवान् सब वृद्धि करे।

१२१७ नाळेर नहीं चाख्या अकरि कायरा ही मीठा

जिन्होंने नारियल नहीं चखा उनके लिये कायर ही मीठे।

१२१८—ना सावण सुरंगो ना भादवो हर्यो

न सावन सुरंगा न भादों हरा।

१२१९—ना सावण सूको ना भादवो हर्यो

न सावन सूखा न भादों हरा

अपरिवर्तनशील स्थिति।

१२२०—निकमेसूँ बेगार भली

निकम्मेसे बेगार भली

नहिंसे कुछ करना अच्छा।

१२२१—निकमो नाई पाटड़ा (पाडा) मूँडै

बेकार बैठा हुआ नाई पाटोंको मूड़ता है।

१२२२—निखटू जावै सक्तो कमाऊ जावै डरतो

निखट्टू, धूम करता हुआ घरमें जाता है और कमाऊ डर करता हुआ जाता है।

१०—कमाऊ

---

* नामी

१३२३—निजर चूकी 'र माल चेतन

नजर चूकी कि माल गायब

१३२४—निद्रा सो निवार सार, आदर सार वैरियां

निद्राको निवारण करना सार है और वैरियोंका आदर करना सार है।

१३२५—निध जनम्या है

निध जनमे हैं।

कुपूतके लिए व्यंग।

१३२६—निन्नाणवेरो फेर

निन्नानवेंका फेर

उलझनमें पड़नेपर।

१३२७—निनांवैरो नांव कुण लेवै

निर्वंशीका नाम कौन ले?

अवाञ्छित व्यक्तिका नाम कौन लेवे? अर्थात् नहीं लेना चाहिए।

१३२८—निरधनरा धन राम

निर्धनके धन भगवान हैं।

१३२९—निरबळरा बळ राम

निर्बलके बल भगवान हैं।

१३३०—नीकळी होठे चढी कोठे

मुँह से वचन (रहस्य) निकलने पर सर्वत्र फैल जाता है।

१३३१—नीचला दांत नीचे और ऊपरला दांत ऊपर रहगया

नीचेके दांत नीचे और ऊपरके दांत ऊपर रह गये

स्तम्भित हो जाना, चकित हो जाना, आश्चर्यचकित होना।

१३३२—नीची कीनी नाड़ बैरे आडी गोडां सूधी बाड़
जिसने गर्दन नीची कर ली उसके आगे मानो घुटनों तक ऊँची बाड़ खड़ी हो गई।
धैर्यवान व्यक्तिकी हानि नहीं होती है।

१३३३—नीची नीची काकलासर जा पूगी
नीची-नीची काकलासर जा पहुँची।

१३३४—नीची चोरड़ी से कोई धूणे
नीचे पेड़को सब कोई धूनते हैं
छोटेको सब ही सताते हैं।

१३३५—नांवोतांई बेटो आयो नाक पेली नाक कटायो
नौनौमहीने बेटा बना तो नाकके पहले नाक कटाया।

१३३६—नीप्यो धोयो आंगणो पहरी ओढी नार
लीपा-पुता आँगन और गहने-कपड़े पहनी औरत सी
(अच्छे लगते हैं)

१३ ७—नींबूड़ा मूँगा हु ज्यासी
नींबू महँगे हो जायेंगे
पता पड़ जायगा, सखी भूल जाओगे
आटे-दालका भाव मालूम पड़ जायगा।

१३३८— नीम हकीम खतरे जान, नीम मुल्ला खतरे ईमान
अधकचरे वैद्यसे जानको खतरा है और अधकचरे मुल्लेसे ईमानको खतरा है।

अधकचरा व्यक्ति किसी कामका नहीं।

मि०—Little knowledge is a dangerous thing

१३३९—नीयत तांवो है

नियत तांबा है

नीयत खोटी है।

१३४० —नींवत जिसी बरकत

जैसी नियत वैसी बरकत।

१३४१ —नुगणे कने सुगणो जाय सुगणे री पत जाय

निर्गुणीके पास गुणवान् जाता है तो गुणवानकी प्रतिष्ठा जाती है।

१३४२—नूँई काया नूँई माया

नयी काया नयी माया

१३४३—नूँई वात नव दिन

नयी बात नौ दिन नयी रहती है (फिर पुरानी पड़ जाती है)

१३४४—नूँई नव दिन पुराणी दस दिन

नयी बात नौ दिन रहती है पुरानी दस दिन।

१३४५—नूँई बात नौ दिन खेंचीताणी दस दिन

नयी बात नौ दिन तक नयी रहती है अधिकसे अधिक दस दिन

नवीन बातकी चर्चा (थोड़े) दिन चलकर मिट जाती है।

१३४६—नेम निमाणे धरम ठिकाणे

अन्तमें धर्मकी जय होती है।

१३४७—नौकर मालकरा हाँ बैंगणरा कोनी
नौकर मालिकके हैं बैंगनके नहीं
हाँ में हाँ मिलानेवालोंके लिए। इसपर एक कहानी है—
एक सेठजीने अपने नौकरसे कहा 'बैंगन बहुत बुरा होता है' तो नौकरने कहा 'जी हाँ इसमें क्या शक है।' फिर स्वामी बोले 'पर वो बहुत बढ़िया सब्जी है तभी तो इसके सिर मुकुट है।' नौकरने उत्तर दिया 'आप बिलकुल ठीक फरमाते हैं।' मालिकने हँसकर कहा दोनों ही बातें ठीक बतलाते हो। नौकर बोला मुझे तो आपको राजी रखना है। मैं आपका नौकर हूँ बैंगनका नहीं।

१३४८—नौकरी, नौ करी'र एक नहीं करी
नौकरी शब्दका अर्थ है कि नौ बात की पर एक बात नहीं की
नौकर सौ काम करता है और एक काम नहीं करता तब भी उसके फटकार पड़ती है। नौकरी करना बुरा है।

नौकरी न कीजे बंदा बाप कीज्यां खायसी।
और कीजे आपपास, आप दूर जायसी॥

१३४९—नौकरीरे नकारे रो बैर है
नौकरीके नकारसे बैर है
नौकर मालिकके कथनसे इनकार नहीं कर सकता।
इनकार करनेसे नौकरी नहीं हो सकती
नौकरको हमेशा आज्ञा पालन करते रहना चाहिए कभी भी 'ना' नहीं कहना चाहिए।

१३५०—नौकरी है क मारीमरी
नौकरी है या मारीमरी
नौकरीमें आराम नहीं।

१३५१—नौ चूल्हा री राख उडै

नौ चूल्हेकी राख उड़ती है

कुछ भी नहीं है। धूल उड़ती है।

१३५२—नौ पूरविया तेरह चौका

नौ पूरविये ब्राह्मण और तेरह चौके

जब सबकी एक राय न हो

मि०—नौ कनौजिये तेरह चौके।

१३५३—न्हाया जिता ही पुण्य

जितने नहाये उतना ही पुण्य

अच्छा काम जितना किया उतना ही अच्छा।

१३५४—न्हाररो काँई छोटो

सिंहका क्या छोटा

मि०—साप रे बचे रो कंइ छोटो

१३५५—न्हासतांने दायजा कुण देवै ?

भागते हुओंको दहेज कौन दे ?

राजस्थानके आंख सम्बन्धी मुहावरे

[प्रस्तुत राजस्थानी कहावतां भाग १-२ में लगभग २५०० कहावतें प्रकाशित हो रही हैं। इतनी ही कहावतें और संगृहीत हैं जिन्हें यथासमय प्रकाशित किया जायगा।

कहावतों की भांति राजस्थानी मुहावरों का संग्रह कार्य भी चालू है लगभग १००० हजार मुहावरे संग्रह हो चुके हैं। पाठकों के अवलोकनार्थ इनमें से केवल आंख सम्बन्धी १४० मुहावरे यहां दिये जा रहे हैं। समय ने साथ दिया तो मुहावरों का एक विशाल संग्रह प्रकाशन करने का विचार है।]

—मुरलीधर व्यास

राजस्थानी मुहावरे

१—आंख आगै आवणो
२—आंख आवणी
३—आंख उठणी
४—आंख उठावणी
५—आंख कडकणी
६—आंख-कान नाचणो
७—आंख-खावणो
८—आंख खुलणी
९—आंख खोलणी
१०—आंख गमावणी
११—आंख गुडाक जिसो हुवणी
१२—आंख चलावणी
१३—आंख चिरमी आळी दांई
१४—आंख चींयै दांई
१५—आंख जाणै डमडोळा
१६—आंख जावणी
१७—आंख ठरणो
१८—आंख ठंडी करणी
१९—आंख ठंडी हुवणी
२०—आंख ठरणी
२१—आंख डाकी आळी दांई
२२—आंख दिखावणी
२३—आंख नहीं टमकारणी
२४—आंख नहीं ठैरणी
२५—आंख नहीं भीजणी
२६—आंख निकाळनी
२७—आंख न्हाखणी
२८—आंख पसारणी
२९—आंख पितर रो नाडो
३०—आंख पीळू आळी दांई
३१—आंख फड़कणो
३२—आंख फाटणी
३३—आंख फाड़नी
३४—आंख फिरणी
३५—आंख फूटणी
३६—आंख फेरणी
३७—आंख फोड़नी
३८—आंख फोरणी
३९—आंख वळनी
४०—आंख वद करणी।

४१—आंख मंद हुवणी
४२—आंख मारणी
४३—आंख मारणी
४४—आंख मिलावणी
४५—आंख मींचणी
४६—आंख मींचीजणी
४७—आंख में काजल पावणो
४८—आंख में धनीजर चळे
४९—आंख में पाणी नहीं हुवणो
५०—आंख में फूला पड़ना
५१—आंख में खटाई आवणी
५२—आंख में मिरच्यां पावणो
५३—आंख में मैल आवणो
५४—आंख में सूण पावणो
५५—आंख मोड़नी
५६—आंख राखणी
५७—आंख राती करणी
५८—आंखरी फूलड़ी करर राखणा
५९—आंख रे मोचे लावणो
६०—आंख रो काजळ
६१—आंख रो तारो
६२—आंख लागणी
६३—आंख लाल करणी
६४—आंख लाल सुर्ख करणी
६५—आंख लुकावणो
६६—आंख वताणो
६७—आंख वदळणी
६८—आंख सुर्पणी
६९—आंख सूं आंख मिळणो
७०—आंख सूं आंख मिळावणी
७१—आंख सूं आंख लड़नी
७२—आंख सूं आगो करणो
७३—आंख सेकणी
७४—आंख हुवणी
७५—आंख आवणो
७६—आंख्यां आवणी
७७—आंख्यां उठणी
७८—आंख्यां उठावणी
७९—आंख्यां काढणी
८०—आंख्यां खुलणी
८१—आंख्यां खोलणी
८२—आंख्यां खोवणी
८३—आंख्यां गमावणी
८४—आंख्यां गुदी लारे लावणी
८५—आंख्यां गुदी लारे हुवणो
८६—आंख्यां चढणी
८७—आंख्यां चरार चढणी
८८—आंख्यां चढावणी
८९—आंख्यां च्यार हुवणी
९०—आंख्यां ठरणी

९१—आख्या ठारणो
९२—आख्या तपणो
९३—आंख्या दिखावणी
९४—आंख्या नचावणी
९५—आख्या नाचणी
९६—आख्या नीची करणो
९७—आख्या नीची हुवणी
९८ आख्या फाटणो
९९—आख्या फाड़नी
१००—आख्या फिरणो
१०१—आख्या फिरोजणी
१०२—आख्या फूटणो
१०३—आख्या फेरणी
१०४—आख्या फोडनी
१०५—आख्या बळनी
१०६—आख्या भरणी
१०७—आख्या भर' र
१०८—आख्या भरीजणी
१०९—आख्या भज कोनी
११०—आंख्या भोजणो
१११—आख्या मारणी
११२—आख्या मींचणी
११३—आख्या मींच'र इंधार करणो
११४—आख्या मींचीजणी
११५ आख्या मे आवणो
११६—आख्या में घालणो
११७—आख्या मे घात' र राखणो
११८—आंख्या में घात्योनहींरड़कणो
११९—आंख्या में चुभणो
१२०—आख्या मे ठैरणा
१२१—आख्या मे घूड़ घातणी
१२२—आख्या मे पाणी भरणो
१२३—आख्या मे पाणी भरीजणो
१२४—आख्या मे रड़कणो
१२५—आख्या में राखणो
१२६—आख्या मे रात काढणी
१२७—आख्या री सरम
१२८—आख्या री सरम राखणो
१२९—आख्या रै आगे आवणो
१३०—आंख्या रै आगै फिरणो
१३१—आख्या रोऊं रोऊं करणो
१३२—आख्या रो पाणी जावणो
१३३ -आख्या वरसणी
१३४—आख्या विछावणी
१३५—आख्या सूं आंधो
१३६—आख्या सू आधो हुवणो
१३७—आख्या सू काम करणो
१३८—आख्या हंसणो
१३९—आंख्यामे वट नहीं आवणो
१४०—आंख्या देख्यां नहीं संचावणो

४१—आंख मंद हुवणी
४२—आंख मारणी
४३—आंख मारणी
४४—आंख मिळावणी
४५—आंख मींचणी
४६—आंख मींचीजणी
४७—आंख में काजळ पावणो
४८—आंख में झनीझर पड़ै
४९—आंख में पाणी नहीं हुवणो
५० —आंख में फूला पड़ना
५१—आंख में सलाई आवणी
५२—आंख में मिरच्यां पावणो
५३—आंख में मैल आवणो
५४—आंख में लूण पावणो
५५—आंख मोड़नी
५६—आंख राखणी
५७—आंख राती करणी
५८—आंखरी पूतळी करर राखणो
५९—आंख रै नीचे आवणो
६० आंख रो काजळ
६१—आंख रो तारो
६२—आंख लागणी
६३—आंख लाल करणी
६४—आंख लाल सुर्ख करणी
६५—आंख लुकावणी
६६—आंख बतावणो
६७—आंख बदळणी
६८—आंख सुर्पणी
६९—आंख सूं आंख मिळणो
७०—आंख सूं आंख मिळावणी
७१—आंख सूं आंख लड़नी
७२—आंख सूं आपो करणो
७३—आंख सेकणी
७४—आंख दुखणी
७५—आंख आवणो
७६—आंख्यां आवणी
७७—आंख्यां उठणी
७८—आंख्यां उठावणी
७९—आंख्यां काढणी
८०—आंख्यां खुलणी
८१—आंख्यां खोलणी
८२—आंख्यां खोवणी
८३—आंख्या गमावणी
८४—आंख्यां गुदी आरै आवणी
८५—आंख्यां गुदी आरै हुवणी
८६—आंख्यां चढणी
८७—आंख्यां चरक चढणी
८८—आंख्यां चढावणी
८९—आंख्यां च्यार हुवणी
९०—आंख्यां ठरणी

राजस्थानके आँख सम्बन्धी मुहावरे

९१—आख्यां ठारणो
९२—आख्या तपणो
९३—आंख्यां दिखावणी
९४—आंख्यां नचावणी
९५—आख्यां नाचणी
९६—आख्यां नीची करणी
९७—आख्या नीची हुवणी
९८ आख्या फाटणी
९९—आख्या फाड़नी
१००—आख्या फिरणी
१०१—आख्यां फिरोजणी
१०२—आख्या फूटणो
१०३—आख्या फेरणी
१०४—आख्या फोड़नी
१०५—आख्या बळनी
१०६—आख्या भरणी
१०७—आख्या भर' र
१०८—आख्या भरीजणी
१०९ -आख्या भज कोनी
११०—आंख्या भोजणी
१११—आख्या मारणी
११२—आख्या मींचणी
११३—आख्या मींच'र इंधार करणो
११४—आख्या मींचीजणी
११५ आख्या मे आवणो
११६—आंख्या में घालणो
११७—आख्यां मैं घात' र राखणो
११८—आंख्यां मे घात्योनहींरड़कणो
११९—आख्या में चुभणो
१२०—आख्या मे ठैरणा
१२१—आख्यां मे धूड़ घातणी
१२२—आख्या मैं पाणी भरणो
१२३—आख्या मैं पाणी भरीजणो
१२४—आख्या में रड़कणो
१२५—आख्यां मे राखणो
१२६—आख्या में रात काढणी
१२७—आख्या री सरम
१२८—आख्या री सरम राखणो
१२९—आख्या रै आगे आवणो
१३०—आंख्या रै आगे फिरणो
१३१—आख्या रोऊं रोऊं करणो
१३२—आख्या रो पाणी जावणो
१३३ -आख्या वरसणी
१३४—आख्या बिछावणी
१३५—आख्या सूं आंधो
१३६—आख्या सूं आंधो हुवणो
१३७—आख्या सूं काम करणो
१३८—आख्या हंसणो
१३९—आंख्यामे वट नहीं आवणो
१४०—आंख्या देख्यां नहीं संबावणो

राजस्थानी साहित्य परिषद्, कलकत्ता

समापति—श्री कालीप्रसादजी खेतान बार० अट० लॉ०

उद्देश्य

(१) प्राचीन राजस्थानी साहित्य की शोध और प्रकाशन।
(२) लोक साहित्य का संग्रह और प्रकाशन।
(३) राजस्थानी कला का अध्ययन और विकास।
(४) नवीन राजस्थानी साहित्य का निर्माण और प्रकाशन।

प्रवृत्तियां

(१) राजस्थानी—शोध सम्बन्धी निबन्ध माला।
(२) राजस्थान भारती ग्रंथमाला।
(प्राचीन और नवीन राजस्थानी साहित्य की उत्कृष्ट की ग्रंथमाला)
(३) अभयरीराम रांका पुस्तकमाला।
(धार्मिक और लौकिक साहित्य की सस्ती लघु ग्रंथमाला)
(४) राजस्थानी पाठ्य पुस्तकमाला।
(५) शंकरदान नाहटा राजस्थानी पुरस्कार।

प्रस्तावित प्रवृत्तियां

(१) राजस्थानी भाषा की परीक्षायें।
(२) भाषणमालाएं।
(३) मरु भारती—राजस्थानी भाषा की मासिक पत्रिका।

प्रकाशन

(१-२) राजस्थानी निबन्धमाला—राजस्थानी भाषा साहित्य इतिहास प्राचीन साहित्य नवीन साहित्य लोक साहित्य और समालोचनादि लेखों से विभूषित भाग १ मूल्य २॥), भाग २ मूल्य ३)।
(३) राजस्थानी कहावतां भाग १।
प्रस्तुत प्रथम भाग में अ से 'ह' तक की ११२५ कहावतों का संग्रह, सजिल्द मूल्य ३)।